ग्राम प्रेमियों से प्रार्थना है कि इस भाग के निवेदन में वर्तमान वर्ष के स्थायी-ग्राहक होने के नियम पढ़कर उनके अनुसार शीघ्र ही आज्ञा भेजने की कृपा करें। आपका आज्ञापत्र पाये बिना हम आपकी सेवा में नये वर्ष की ग्रन्थावली न भेज सकेंगे। आशा है आप कृपा दृष्टि बनाये रहेंगे और इस कार्य में अवश्य हमारे सहकारी बनेंगे।

मैनेजर।

निवेदन।

इन दो भागों के एक ही साथ भेजने पर हम आज अपने ऋण से उऋण, होते हैं। प्रेस व छिन्दवाड़ा के वकील महाशय जी की नाना बाधाओं के कारण हम अपनी शक्ति भर प्रयत्न करने से भी यद्यपि अपने कथनानुसार ठीक समय पर सारे भाग, आपकी सेवा में नहीं भेज सके, तथापि हम बहुत हर्ष के साथ लिखते हैं कि हमारे प्रिय ग्राहकगणों ने हमारी कठिनाइयों को विचार कर, सन्तोष के साथ निरन्तर हमारी प्रार्थनाओं पर ध्यान देकर अपनी सहायता बनाये रक्खी जिस के लिये हम उन के बहुत कृतज्ञ हैं। आपकी सेवा में इस अमृतरूपी राम-चर्चा के दो भाग भेजने से गत वर्ष के १००० पृष्ठ के आठ भाग जिन के देने की हमारी प्रतिज्ञा थी आज पूर्ण होते हैं। अपनी ओर से यथाशक्ति पूर्ण यत्न किया गया कि इन भागों के प्रकाशन में कोई त्रुटि न रहे, तिस पर भी जो २ त्रुटियें आप की दृष्टि में आई हों उनके लिये आशा है कि आप अपने अन्तः हृदय से हमें क्षमा करेंगे और आगे के लिये उनके दूर करने में तन, मन, धन से आप पूर्ण सहायता देंगे।

इस वर्ष में हमें यह पूर्ण अनुभव हो गया है कि अपना प्रेस खोले बिना इतने थोड़े समय (मास जून से नवम्बर तक) में जो कि लीग के वर्तमान वर्ष की समाप्ति में दीपमालिका तक रह गया है किसी अन्य प्रेस से १००० पृष्ठ का छपवाना अत्यन्त कठिन ही नहीं आज कल के कार्यभार के कारण असम्भव सा है। और में अपने ग्राहकों को बारम्बार विलम्ब की प्रार्थनाओं से

व्यर्थ कष्ट न देना पड़े इस लिये अब आगामी वर्ष के लिये यह निश्चय किया गया है कि नवम्बर सन् १९२१ तक ५०० पृष्ट के चार भाग प्रकाशित किये जायेंगे जिनका पेशगी शुल्क निम्न रीत्यनुसार होगा.—

(१) प्रत्येक भाग केवल बुकपैकिट द्वारा मंगवाने वाले से विना जिल्द के २) रुपय और सजिल्द के ३) रुपय।

(२) प्रत्येक भाग रजिस्टर्ड बुकपैकिट द्वारा मंगवाने वाले से विना जिल्द के २॥) रुपय और सजिल्द के ३॥) रुपय।

(३) प्रत्येक भाग वी० पी० द्वारा मंगवाने वाले को ॥) पेशगी अपना नाम दर्ज रजिस्टर कराने के लिये भेजने होंगे।

(४) फुटकर एक भाग का मूल्य विना जिल्द ॥=) और सजिल्द ।॥=) होगा, डाक व्यय अलग।

यह तो आप पर प्रकट हो ही चुका है कि जब तक लीग का अपना प्रैस नहीं खुलेगा तब तक विलम्ब की त्रुटियां पूर्ण रूप से दूर नहीं हो सकेंगी, इस लिये सब राम प्यारों से प्रार्थना है कि जहां वे लीग के सदस्य तथा ग्रन्थावली के ग्राहक बनाने का यत्न करें वहां इस के साथ २ कृपया प्रैस के खुलवाने के प्रबन्ध का भी यत्न करें जिस से यह संस्था आपकी पहिले से भी कई गुणा अधिक सेवा कर सके और अपने उद्देश्य की सफलता को शीघ्र देख सके।

हमें पूर्ण आशा है कि हमारे ग्राहकगण आगामी वर्ष में न केवल अपनी सहायता ही बनाये रक्खेंगे बल्कि ग्राहक संख्या बढा

कर हमारे उत्साह को दिन प्रति दिन बढ़ाने और संसार भर में अपने प्यारे राम के अमृतरूपी उपदेशों के फैलाने में पूर्णत. प्रयत्न करेंगे।

सहायता फण्ड में दान देने वाले सज्जनों की नामावली।

गत जून सन् १६२० तक जिन दान दाताओं से ६५०) रु० का दान प्राप्त हुआ था उनकी नामावली ग्रन्थावली के तीसरे भाग में दी गई थी। उस के बाद जो दान आज तक प्राप्त हुआ है उसका ब्योरा दान दाताओं की नामावली के सहित नीचे दिया जाता है।

१०) एक हितैषी।

५०) गुप्त दान श्रीस्वामी स्वयंज्योति द्वारा प्राप्त।

२५०) श्री १०८ स्वामी मंगलनाथ जी महाराज।
हृषीकेश निवासी द्वारा प्राप्त।

१०१) स्वर्गवासी रायबहादुर ला० शालिग्राम जी के सुपुत्र सरदार गुरबख्श सिंह जी से प्राप्त।

५१) गुप्त दान श्रीयुत लाल घरसएडो महेश द्वारा प्राप्त।

११५) एक हितैषी।

१९८) यह रकम निम्न लिखित सज्जनों से करांची के श्रीयुत गुलाब भाई भीम भाई देसाई द्वारा प्राप्त।

१४८।) का ब्योरा।

२५) श्रीयुत् सेठ एम चूनी लाल।
११) ,, अबदुल्ला भाई कासम।
११) ,, राम भक्त गुलाब भाई भीम भाई देशाई।
४) ,, ,, ,, ,, ,, ,,
५) श्री टी विष्णुदास अंड कम्पनी।
५) ,, आर, सी मुल्तानी ब्रादर्स।
५) ,, नृसिंह लाल घनश्याम दास।
५) ,, मगन लाल हिरजी कोतक।
५) पं० शिवशंकर हरगोविन्द।
५) श्री गोलाब राय घाल जी देशाई।
५) ,, खण्डू भाई हरिभाई जिज्ञासु।
५) ,, हरिशंकर खेमराम महता।
५) ,, आसूदा मल हरभगवान् दास।
५) ,, अमर चन्द रतौसी।
३) ,, बिहारी लाल गोपी नाथ।
३) ,, मनी भाई मोहन भाई देसाई।
२) ,, टीकूमल त्रिकम दास।
२) ,, मगन लाल गोविन्दजी निगंधी।
२) ,, हीरा लाल कृष्ण लाल व्यास।
२) ,, मोहन भाई प्रभू भाई।
२) ,, सेठ सुन्दर जी जेठा भाई।
१) ,, दुलार राय राम जी कोया।
१) ,, सी, वी, चौताम्रम।

१) ,, त्रिवेदी दामोदर निरभय राम ।
१) ,, गोविन्द जी विट्ठल दास ।
१) ,, हबीब भाई अल्लद भाई ।
१) ,, विश्राम मंच जी ।
१) ,, हीरा लाल नारायण गणात्रा ।
१) ,, सोम चन्द गोपाल दास जवेरी ।
१) ,, दयाल जी अबू भाई देसाई ।
१) ,, जसवन्त राय गुलाब भाई देशाई ।
।) ,, रीझू मल सांवल दास ।
५) ,, चिमन लाल दाहया भाई देशाई ।
१) ,, सुन्दर जी दाहया भाई रच्छा ।
३) ,, फोदूमल मोतीराम ।
२) ,, चतुर भुज भीम जी ।
१) ,, राम सेवक (श्री गुलाब भाई) ।
२) ,, नाथू भाई नारायण जी देशाई ।
२) ,, कुंवर जी कृष्ण जी देशाई ।
५) ,, अम्बा लाल जी कानजी नायक ।

१४८।)

७२५।)

विषय सूची ।

संख्या	विषय वार भजन	पृष्ठ

४ ज्ञान

५ ज्ञानी

६ त्याग (फ़क़ीरी)

७ निजानन्द (मस्ती)

८ विविध लीला (वेदान्त)

९ विविध लीला (माया)

३ उपदेश

शेष भजन आगामी भाग में प्रकाशित होंगे।

संख्या	विषय वार भजन	पृष्ठ

१० विविध लीला (तीन शरीर और वर्ण)

राम-वर्षा द्वितीय भाग ।

१ मंगलाचरण

२ गुरु-स्तुति

श्री स्वामी रामतीर्थ

अमेरिका १९०३

राम-वर्षा।

(प्रथम भाग)

गुरु-स्तुति

[१]

तेरी मेरे स्वामी ! यह बाँकी अदा[1] है।
कहीं दास है तू, कहीं खुद खुदा है॥१॥
कहीं कृष्ण है तू, कहीं राम है तू।
कहीं सङ्गी है तू, कहीं तू जुदा है॥२॥
पिलाया है जब से मुझे जाम[2] तू ने।
मेरी आँख में क्या नया गुल[3] खिला है॥३॥
तेरे इश्क के बहर[4] में मस्त हूँ मैं।
बका[5] में फना है, फ़ना में बका है॥४॥

---

१ नखरे, भाव २ प्रेम रस का प्याला ३ पुष्प अर्थात् दृष्टि ४ समुद्र
५ हस्ती, अस्तित्व ६ नेस्ती, नाश

मुनज़्ज़ा[1] तेरी ज़ात तश्बीह[2] से फ़ारग़[3] ।
मगर रङ्ग तश्बीह का तुझ पर चढ़ा है ॥५॥
नज़ारा[4] तेरा 'राम' हर-जा पै देखूं ।
हर एक नग़मा[5] पे जान ! तेरी सदा[6] है ॥६॥

[२]

बाँकी अदायें[7] देखो, चन्दा सा मुखड़ा पेखो । (टेक)
बादल में बहते जल में, वायु में तेरी लटकें ।
तारों में नाजनीं[8] में, मोरों में तेरी मटकें ॥१॥
चलना ठुमक ठुमककर, बालक का रूप धरकर ।
घूंघट अबर[9] उलटकर, हँसना यह बिजली बनकर ॥२॥
शबनम[10] गुल[11] और सूरज, चाकर हैं तेरे दर के ।
यह आनबान सजधज, ऐ 'राम' ! तेरे सदके[12] ॥३॥

[३]

लखूं क्या आपको ऐ अज प्यारे!
अविनाशी पद वाचक शब्द तुम्हारे ॥
जहाँ गति रूप की न नाम की है ।
वहाँ गति आ हमारे राम की है ॥
यही इक रूप से पी प्रेम शरबत ।
नदी जङ्गल में जा ढूंढे हैं परबत ॥

---

१ शुद्ध, पवित्र २ समान व दृष्टान्त ३ रहित ४ दर्शन व दृश्य ५ गीत, राग, ध्वनि ६ आवाज़, ध्वनि ७ नखरे टखरे ८ सुन्दरियाँ ९ बादल १० ओस ११ पुष्प १२ न्योछावर

गुरु-स्तुति

वही इक रूप से नगरों में फिरता।
किसी के खोज में डगरों में फिरता॥
अजब माया है तेरी शाहे दुनिया!
कि जिससे है मेरी तेरी यह दुनिया॥
न तुझको पा सका कोई जहाँ में।
न देखा जिसने तुझको हर मकाँ में॥
तुझे समझा किये सौ कोस अब तक।
नहीं समझा मगर अफसोस अब तक॥
तुही है 'राम' और तू ही है यादव।
तुही स्वामी तुही है आप माधव॥

[४]

[ईशावास्योपनिषद् के आठवें मन्त्र का भावार्थ]

है मुहीत[1]-मन-जहाँ[2]-बे अनदाँ[3]।
रगो पै[4][5] है कहाँ? हमा बीं[6] हमा-दाँ[7]॥ १॥
वह बरी[8] है गुनाहों[9] से, रिन्दे-जमाँ[10]।
बदो-नेक[11] का उसमें नहीं है निशाँ[12]॥ २॥
वह बुजुर्गे-बुज़ुर्गान्[13] है राहते-जाँ[14]।
वह है बाला[15] से बाला व नूरे-जहाँ[16]॥ ३॥
वही खुद[17] है ज़ुनाँ[18] व बू[19] अज़ बिया।

---

१ संसार के मालिक, ईश्वर २ सर्वव्यापक ३ शुद्ध ४ शरीर रहित ५ नाड़ी रहित ६ सर्वद्रष्टा ७ सर्वज्ञ ८ निर्लिप्त ९ पाप १० पूर्ण सन्त जीवनमुक्त ११ पुण्य पाप १२ सैर मस्त १३ सर्वोपरि श्रेष्ठ १४ आत्मा को सुख देनेवाला १५ ऊँचा से ऊँचा १६ संसार का प्रकाश १७ स्वयं १८ स्वर्ग १९ दर्पण से परे

छिपे उसने अज़ल[1] में हैं रङ्गतो-बू[2] ॥ ४ ॥
यही 'राम' है दौरों[3] में सब के निहाँ[4]।
यही 'राम' है बहर[5] में बर[6] में अयाँ[7] ॥ ५ ॥

उपदेश

[५]

[केनोपनिषद् के पाँच मन्त्रों का तात्पर्य]

चक्षु जिन्हें देखें नहीं, चक्षु की अर्थ जान।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन[8] ॥ १ ॥
जाको वाणी न जपे, जो वाणी की जान।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ २ ॥
श्रोत्र जाको न सुनें, जो श्रोत्र के कान।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ३ ॥
प्राणों कर जीवत नहीं, जो प्राणों के प्राण।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ४ ॥
मन बुद्ध जाको न लखें, परकाशक पहचान।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ५ ॥

[६]

साधो ! दूर दुई[10] जब होवे, हमरी कौन कोई पत[11] खोवे। (टेक)
ऐसा कौन नशा तुम पीया, अबलों[12] आप सही नाहीं कीया ॥१॥

---

१ अनादि काल. २ बना चल रूप ३ दौरों में. ४ छिपा हुआ. ५ समुद्र. ६ पृथिवी. ७ प्रकट ८ भेद. ९ अन्य १० द्वैत ११ नाम, बड़ाई. १२ अब तक, अपने आपको ठीक नहीं पहिचाना अर्थात् अनुभव नहीं किया.

सिन्धु[1] विषे रञ्चक सम देखे, आप नहीं पर्वत सम पेखे[1] ॥२॥
चमके नूर तेज सब तेरा, तेरे नैनन काहे[2] अँधेरा ? ॥३॥
तू ही 'राम' भूप पति राजा, तू ही तीन लोक को साजा ॥४॥

[७]

ज़िन्दह रहो रे जीया ! ज़िन्दह रहो रे। (टेक)
तू सदा अखंड चिदानन्दघन, मोह भय शोक क्यों करो रे ॥ १ ॥
(ज़िन्दह०)

आया ही नहीं तो जायगा कौन गृह, सोया ही नहीं तो कहाँ जागे ?।
उपजा ही नहीं तो विनसेगा किस तरह ? वैहम और रोग सब हरो रे ॥२॥
(ज़िन्दह०)

तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन, तेरा नहीं मान अपमान जन।
तेरा नहीं नफ़ा नुक्सान धन, ग़म चिन्ता डर ख़ौफ़ को तरो रे ॥३॥
(ज़िन्दह०)

जाग रे लालन जाग तेरे ! धर रे सदा सुहाग रे।
सूर्यवत् उगरे भाग रे ! सब फिकर को परे कर धरो रे ॥४॥
(ज़िन्दह०)

है 'राम' तो सदा ही पास रे ! हँस खेल क्यों हुआ उदास रे।
आनन्द की शिखर पर वास रे, हर श्वास में सोहं[3] को भरो रे ॥५॥
(ज़िन्दह०)

---

१ समुद्र में छोटे से मोती को तो तू ढूँढ रहा है पर अभी तक अपने भीतर जो पर्वत के समान भारी रत्न (अपना स्वरूप) है उसका तू अनुभव नहीं करता. २ क्यों. ३ वह ईश्वर या परमात्मा मैं हूँ.

[८]

मरे न डरे न जरे[1] हरे[2] तम[3], परमानन्द सो पायो।
मङ्गल मोद भरयो घट भीतर, गुरु श्रुति मन्त्र "त्वमेव[4]" बतायो॥१॥
टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी, ठाकुर मन राम अविनाशी।
लय मुकर्रम सब गयो रे वासी, वासुदेव सोऽहं कर झाँकी॥२॥
अहर्निश[5] का सूरज में नाश, अहं प्रकाश प्रकाश प्रकाश।
सूर्य को ठंडक लगे जल को लगे प्यास? आनन्द घन मम पास[6] से क्या आशा की आस॥३॥ *

[९]

शाहंशाहे-जहान[1] है, सायल[2] हुआ है तू।
पैदाकुने-ज़मान[3] है, दायल[4] हुआ है तू॥१॥
सौ बार गर्दूं[5] होवे, तो धो धो पिये क़दम।
क्यों चरखो[6]-मिहरो[7]-माह[8] पै मायल[9] हुआ है तू॥२॥
मक़दूर की क्या मजाल[10] कि इक ज़ख़्म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू॥३॥
क्या हर गदा[11]-ओ शाह का राज़िक़[12] है कोई और।
अफ़लासो[13]-तहीदस्ती का क़ायल[14] हुआ है तू॥४॥

---

१ मरे. २ बड़े. ३ अन्धकार. ४ तू ही ब्रह्म है. ५ दिन रात. ६ समीपता.

* तात्पर्य:—जैसे दिन रात सूर्य में नहीं होते और न सूर्य को ठण्डक व जल को प्यास लग सकती है, वैसे ही मैं जो आनन्दघन, अर्थात् आनन्द स्वरूप राम हूँ, मेरे समीप किसी प्रकार की आशा पर नहीं मार सकती।

१ चक्रवर्ती राजा. २ भिखारी, मँगता. ३ समय का उत्पन्नकर्ता. ४ घड़ी की सुई. ५ चरख. ६ आकाश. ७ सूर्य. ८ चन्द्रमा. ९ मोहित. १० सामर्थ्य, शक्ति. ११ फ़क़ीर (भिखारी) और राजा १२ अन्नदाता. १३ निर्धनता. १४ निश्चयकार अधीन.

उपदेश

दायम[1] है तेरे मुजरे के मौक़ा[2] की ताक में।
क्यों डर से उसके मुफ़्त में ज़ायल हुआ है तू ॥५॥
हमबग़ल[3] तुझसे रहता है हर आन[4] 'राम' तो।
घन परदा अपनी वसल[5] में हायल[6] हुआ है तू ॥६॥

[१०]

मनुवा[7] रे नादान! ज़री मान, मान, मान। (टेक)
आत्म गङ्ग सङ्ग जङ्ग, विष्ठा में गलतान ॥ १ ॥ मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के, तू क्यों हुआ हैरान ॥ २ ॥ मनुवा रे०
शङ्कर शिव स्वरूप त्याग, शव[8] न बन री जान ॥ ३ ॥ मनुवा रे०
उदय अस्त राज तेरा, तीन लोक साज तेरा, फैंक दे अज्ञान ॥४॥ म०
हाय ब्रह्मघात करके, करे तू खान पान ॥ ५ ॥ मनुवा रे०
तू तो रवि रूप 'राम' शोक मोह से काहे काम, तिमिर की संतान ॥६॥ म०

[११]

(१) गंजे-निहां[9] के कुफ्ल पर, सिर हीं तो मोहरे-शाह[10] है।
तोड़ के कुफ्लो-मोहर को कन्ज़[11] को खुद न पाये क्यों ? ॥१॥

पंक्तिवार तात्पर्य [११]

(१) गुप्त भाण्डार (ख़ज़ाना) जो प्रत्येक प्राणी के भीतर है उसके ताले पर प्रजापति की मोहर अहङ्कार रूपी सिर है। हे प्यारे! इस ताले और मोहर को तोड़कर तू भीतर के रत्न (ख़ज़ाना) को क्यों नहीं पाता ?

---

१ काल. २ अवसर की प्रतीक्षा में. ३ बग़ल में अर्थात् अपने साथ. ४ हर समय. ५ मिलाप. ६ दो के बीच आच्छादित ७ रे मन. ८ मृतक, मुर्दा. ९ गुप्त भंडार. १० महाराजा की मोहर ११ ख़ज़ाना, गुप्त रत्न

(१) दीदा-ए दिल[1] हुआ जो वा[2], खुब गया हुसने-दिलरुबा[3]।
यार खड़ा हो सामने, आँख न फिर लड़ायें क्यों ? ॥ ३ ॥

(२) जब यह जमाले दिलफरोज़[4], सूरते मिहरे-नीमरोज़[5]।
आप ही हो नज़ारा सोज़[6], परदे में मुह छुपायें क्यों ? ॥४॥

(३) दशना ए-ग़मज़ा[7] जाँस्ताँ[8], नावके नाज़े-बे पनाह[9]।
तेरा ही अक्से-रुख[10] सही, सामने तेरे आये क्यों ? ॥ ५ ॥

---

(१) दिल की आँखें जब खुल गईं तो प्यारे का सौन्दर्य भीतर खुब गया। हे प्यारे ! जब अपना यार (प्रियतम) सामने खड़ा हो तो फिर उससे तू दृष्टि क्यों नहीं लड़ाता ?

(२) जब यह दिल को प्रकाशित करनेवाला सौन्दर्य मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में आप ही दृष्टि को प्रकाशित करे, तो फिर हे प्यारे ! तू पर्दे में मुख क्यों छिपाता है ?

(३) यह प्राण हरनेवाली नैन-कटारी रूपी खङ्ग, यह अथाह नख़रे का तीर, यह चाहे तेरे ही मुख का प्रतिविम्ब है, पर तेरे सामने क्यों आता है ? अर्थात् मोहनेवाली यह तेरी माया तेरी छाया होकर तेरे (स्वरूप के) सामने आकर तुझे क्यों ढकती है ?

---

१ दिल का नेत्र दिव्य चक्षु २ खुल गया ३ प्यारे का सौन्दर्य ४ हृदय को प्रकाशित करनेवाला सौन्दर्य ५ मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में ६ दृष्टि को प्रकाशित करे ७ नैन कटारी ८ प्राण हरनेवाला ९ अथाह नखरे का तीर १० मुख की छाया का प्रतिविम्ब

उपदेश

(१) आप ही डाल साया को, उसको पकड़ने जाय क्यों ? ।
साया जो दौड़ता चले, कीजिये वाये वाये क्यों ? ॥ ३ ॥

(२) पहलो-अयालो[1] मालो ज़र[2], सब का है बार[3] 'राम' पर ।
अस्प[4] पै साथ बोझ धर, सिर पर उसे उठाये क्यों ? ॥ ६ ॥

---

(१) आपही अपनी छाया डालकर तू उसको पकड़ने क्यों दौड़ता है ? और छाया को पकड़ने के लिये भागते समय जब वह आगे दौड़ती चली जाती है (जोकि उसका स्वभाव है) तो हे प्यारे ! तू तब हाय हाय क्यों करता है ?

(२) घर बार (बाल बच्चे) और धन दौलत सब का बोझ जब एक राम भगवान् पर है, तो तू भोले जाट* के समान घोड़े पर अपने साथ बोझ रखकर उसको व्यर्थ अपने सिर पर क्यों उठाता है ?

---

१ बाल बच्चे २ धन दौलत ३ बोझ ४ घोड़े पर.

* एक भोला जाट अपने साथ घोड़े पर असबाब रखकर अपने ग्राम को जा रहा था। घोड़े के साथ उसका अत्यन्त मोह था। समय मध्याह्न काल का था। ऋतु ग्रीष्म थी। असबाब घोड़े की पीठ पर रखकर उस पर आप सवार था। जब कुछ सवार रहने से (उसके और असबाब के बोझ से), घोड़े की पीठ पर पसीना आ गया तो मारे मोह के असबाब को उसने पीठ पर से अलग कर दिया। नहीं पीठ पर आप स्वयं सवार हो गया और उस असबाब को अपने सिर पर रख लिया, जिससे बोझ तो घोड़े पर उतना ही रहा, पर व्यर्थ में अपनी गर्दन बोझ से तोड़ ली। (इसी प्रकार सब जगत् का बोझ ईश्वर रूपी घोड़े पर है, पर जो मूर्खता से उस बोझ को अपने सिर पर डाल लेता है वह अपनी गर्दन व्यर्थ में तोड़ लेता है, बोझ चाहे तब भी ईश्वर पर वैसे ही रहता है)।

[१२]

फकीरा ! आपे अल्लाह हो । (टेक)

आपे लाड़ा[1], आपे लाड़ी[2], आपे मापे[3] हो ॥१॥
आप वधाइयाँ, आप स्यापे[4], आप अलापे[5] हो ॥२॥
राँझा[6] तुहीं, तुहीं राँझा, भुल हीर[7] न वेले[8] रो ॥३॥
तेरे जिहा[9] मानूं[10] एथे[11] ओथे, कोई न जापे[12] ओ ॥४॥
घुण्ड[13] कड के, क्यों चन मोंह उत्ते, आहले[14] रहयों खलो ॥५॥

---

[१२]

(१) आपही तू स्वयं पति, आप ही पत्नी, और आपही पिता माता है । इस लिये ऐ प्यारे ! तू आप ही ईश्वर हो, अर्थात् वस्तुतः अपने आप को ही तू ईश्वर निश्चय कर ।

(२) आप ही तू बधाई (आशीर्वाद); आप ही स्यापा और आप ही तू रोने पीटने का आलाप है । इस लिये ऐ प्यारे ! अपने आप को ही तू प्रभु अनुभव कर ।

(३) वास्तव में तू ही राँझा और तू ही हीर है, अपने आपको भूल कर तू हीर की खातिर वन में व्यर्थ मत रोदन कर ।

(४) तेरे जैसा यहाँ वहाँ हमें कोई नहीं दीखता ।

(५) अपने चन्द्र मुख पर घूंघट निकालकर तू एक ओर क्यों खड़ा हो रहा है ?

---

१ पति. २ पत्नी. ३ पिता माता. ४ पञ्जाब में मनुष्य के मरने पर स्त्रियाँ खड़े होकर जो नियमबद्ध समाज से रोती पीटती हैं, उसे स्यापा कहते हैं. ५ उस स्यापे में जिस शब्द को टेक से पीटा जाता है उसे अलाप कहते हैं ६ एक प्यारे का नाम है ७ राँझा की मित्र का नाम है ८ यार, माशूक. ९ समान १० दूसरे. ११ यहाँ वहाँ. १२ दीखता. १३ घूंघट १४ पीछे, परे

तूहीं सब दी जान प्यारी, तैनूं ताना लगे न को ॥६॥
बोली ताना, यारी सेवा, जो देखें तूं सो ॥७॥
सूली सलीब[1], ज़हर दे मुके[2], कदे न मुकदा जो ॥८॥
बुकल[3] विच वड़, यार जो सुत्ते, ओथे[4] तेरी लो[5] ॥९॥
तूहीं मस्ती विच शरावाँ, हर गुल[6] दी खुशबो ॥१०॥
राग रङ्ग दी मिट्ठी सुर तूं, लैं कलेजा[7] टो ॥११॥
लाह[8] लीड़े, यूसफ घुट मिल लै, दूई दे पट दो ॥१२॥

(६) तू ही सब की प्यारी जान है, तुझे कोई बोली ठठोली नहीं लग सकती है।

(७) बल्कि बोली ठठोली, मित्रता, सेवा इत्यादि जो दीखता है, वह सब तू है।

(८) सूली सलीब और ज़हर के ख़त्म होने पर जो कदापि नहीं मरता, वह तू है।

(९) प्यारे की बग़ल में प्रवेश होकर जब सोये तो वहाँ तेरा ही प्रकाश पाया।

(१०) शराब में मस्ती और पुष्प में गन्ध तू है इसलिये अपने आप का तू अनुभव कर।

(११) कलेजे में चुटकियाँ भरनेवाली जो राग रङ्ग की मीठी स्वर है वह तू है।

(१२) द्वैत के वस्त्र उतारकर तू अपने प्यारे आत्मा (यूसफ़) को घुट कर मिल।

१ एक प्रकार की सूली. २ ख़तम होने पर. ३ बग़ल. ४ वहाँ. ५ प्रकाश. ६ पुष्प ७ चित्त में चुटकियाँ भरता है ८ वस्त्र उतारकर.

आठवें अर्श[1] तेरा नूर चमकदा होर[2] भी उच्चा हो ॥१३॥
यह दुन्या तेरे नौंहां[3] दे विच, हथ[4] गल ते रख न रो ॥१४॥
जे रब भालें बाहिर किधरे, एस[5] गल्लों मुंह धो ॥१५॥
तू मौला नहीं बन्दा चन्दा, भूठ दी छुडदें[6] खो ॥१६॥
पवन इन्दर तेरी पण्डाँ[7] ढोंदे, क्यों, तैनूं किते न ढो ॥१७॥
काहनूं[8] पया भेड़ना हैं माँ भौं विलयाँ, बैठ निचल्ला हो ॥१८॥
तेरे तारे सूरज थई थई नचदे, तू वह आकर[10] खो ॥१९॥

(१३) आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश है, और तू इससे भी ऊपर हो।

(१४) यह संसार तेरे नाखुनों का खेल है, तू मुख पर हाथ रखकर मत रो।

(१५) यदि तू अपने से बाहिर कहीं ईश्वर ढूँढना चाहता है, तो इस बात से तू रो।

(१६) तू स्वयं मालिक व प्रभु है, नौकर चाकर तू नहीं है। अपने आप को बद्ध जीव मानने का जो तेरा झूठा स्वभाव है, इसे तू छोड़।

(१७) पवन व इन्द्र देवता तो तेरा बोझ उठाते हैं फिर तेरी सेवा क्यों नहीं कभी करते ?

(१८) प्यारे को इधर उधर ढूँढने की जो घूमन घेरी खेल है, इस खेल को व्यर्थ तू क्यों खेलता है। स्थिर होकर बैठ और अपना अनुभव कर।

(१९) तेरे आश्रय तारे और सूर्य थई थई नाच रहे हैं। तू स्वयं स्थिर होकर बैठा रह।

१ आकाश २ और ३ नाखुन ४ हाथ ५ इस बात से ६ स्वभाव ७ बोझ उठाते ८ किस लिये ९ घूमन घेरी खेल १० मौज से, आनन्द से

पचे न तैनूं सुख वे ओड़क, पद्दो गिरनी[1] खो ॥२०॥
दुःखहर्ता ते सुखकर्ता, ते नूं ताप गये कद[3] पोह[2] ॥२१॥
चोर न पये, तेनूं भूत न चमड़े होर[4] गयो क्यों हो ॥२२॥
तूं साक्षी केड़ी[5] कईयां मारें, हुन[6] थक कर चल्लियाँ हैं सौ ॥२३॥
खुल्लियाँ तैनूं[7] भऊ न खान्दे, लुक लुक कैद न हो ॥२४॥
वहदत[8] नूं कर कसरत[9] देखे, क्यों भैड़ा[10] किधरों[12] हो ॥२५॥
ताज तखत छड टट्टी[13] मल्ली, दस[14] गल्लों तू रो ॥२६॥

---

(२०) तुझे अनन्त सुख पचता नहीं है, इस बदहज़मी को तू दूर कर।
(२१) तू स्वयं दुःखहर्ता और सुखकर्ता है, तुझे कब तीनों ताप तपा सकते हैं ?
(२२) तुझे चोर नहीं पकड़ते और न भूत प्रेत तुझे चमट सकते हैं, फिर तू अपने से इतर क्यों हो रहा है ?
(२३) तू साक्षी कौन सी कथियाँ मार रहा है अर्थात् कौन सा परिश्रम कर रहा है जो अब थक कर सोने लगा है ?
(२४) मुक्त (आज़ाद) होने में तुझे कोई राक्षस इत्यादि तो नहीं खाते, इसलिये छिप छिप कर बद्ध मत हो।
(२५) एकता को तू बहुत करके देखता है। ऐसे नेत्रवाला तू कहाँ से हो गया है।
(२६) निज राज्य का ताज और तख़त छोड़कर छोटी सी कुटिया तू ने ले ली है, इस मूर्खता पर तू रोदन मत कर और अपने स्वरूप का अनुभव कर।

---

१ बदहज़मी दूरकर. २ सताने लगे ३ कब ४ दूसरा. ५ कौन सी. ६ अब ७ तुझे ८ इच्छा, येसान. ९ अद्वैत १० द्वैत बहुत. ११ कम दृष्टिवाला १२ कहाँ से. १३ छोटी कुटिया १४ इस बात से.

छड के घर दियाँ चपड़ां चीरां, की लोड[1] चबावें तो[2] ॥२७॥
तेरे घर विच राम वसेन्दा, हाय कुट कुट भर न मो[3] ॥२८॥
राम रहीम सब बन्दे तेरे, तेथों[4] बड़ा न को ॥२९॥
आप भगीरथ, आपही तीरथ, बन गङ्गा मल धो ॥३०॥
पर्दे फाश होवीं रब करके, नङ्गा सूरज हो ॥३१॥
छड मौहरा,[5] सुन 'राम' दुहाई, अपना आप न[6] को ॥३२॥

---

(२७) निज घर के स्वादिष्ट भोजन छोड़कर छिलके व तूरी को तू क्यों चबा रहा है ?

(२८) तेरे घट में जब राम बस रहा है । हाय वहाँ भुस कूट कूट कर मत भर ।

(२९) राम रहीम सब तेरे बन्दे (सेवक) हैं, तुझसे बड़ा कोई नहीं है ।

(३०) गङ्गा को स्वर्ग से लानेवाला राजा भगीरथ तू आप है और आप ही तू तीर्थ है, स्वयं गङ्गा रूप होकर तू सब मल धो ।

(३१) ईश्वर करे तेरे सब पर्दे खुलें और तू सूर्यवत् नितान्त नङ्गा हो ।

(३२) तू संसार रूपी खेल या विषयभोग रूप विष को त्याग, ऐसी राम की पुकार है, और अपने आप स्वयं नाश मत कर ।

---

१ ज़रूरत. २ तूरी, भुस ३ भुस ४ तुझसे ५ संसार रूपी खेल या मोहरा छोड़ ६ खोना, खाप देना, आत्मघात करना

भक्ति (इश्क़)

[१३]

(१) कलीदे इश्क़[1] को सीने[2] की दीजिये तो सही।
मचा के लूट कभी सैर कीजिये तो सही ॥ १ ॥

(२) करो शहीद खुदी[3] के सवार को रोकर।
यह जिस्मे दुलदुले बेयार[4] कीजिये तो सही ॥ २ ॥

(३) जला के ख़ाना ओ अस्बाब[5] मिस्ल नीरो[6] के।
मज़ा सरोद[7] का शोलों[8] का लीजिये तो सही ॥ ३ ॥

[१३]

(१) हार्दिक प्रेम की कुञ्जी तो अपने भीतर के भण्डार को दो और फिर उसकी लूट मचाकर कभी आनन्द तो लो।

(२) देह का सवार जो अहंकार है इसको मारकर शहीद तो करो और इस शरीर को सवार-रहित घोड़े (दुलदुल) के समान तो कर देखो।

(३) नीरो बादशाह के समान अपना घर बार और अस्बाब (अर्थात् अहंकार और उसकी सब पूंजी को) जलाकर (निज स्वरूप रूपी पर्वत के शिखर पर चढ़कर) उस अहंकार को जलने को और (निज स्वरूप के) राग रङ्ग का आनन्द तो लो।

---

१ प्रेम की कुञ्जी. २ दिल. ३ अहङ्कार ४ उस घोड़े को कहते हैं जो मुसलमानों के हज़रत इमाम हुसेन की सवारी में था और युद्ध में अपने सवार हज़रत साहिब के मारे जाने पर ख़ाली घर में आ गया था और इस प्रकार अपने सवार के मारे जाने की सूचना दी. ५ घर बार व धन दौलत. ६ एक राजा का नाम है जिसने अपने देश को आग लगाकर आप एक पर्वत पर चढ़कर राग रङ्ग किया और प्रजा को जलते देखकर प्रसन्न हुआ. ७ राग रङ्ग ८ अग्नि.

(१) है खुम[1] तो मय[2] से लबालब यह तिश्ना[3] कामी क्यों ?
लो तोड़ मोहरें[4] खुदी मय भी पीजिये तो सही ॥४॥
(२) उड़ा पतङ्ग मुहब्बत का चर्ख़[5] से भी दूर।
ख़िरद[6] की डोर का अब छोड़ दीजिये तो सही ॥५॥
(३) मज़ा दिखायेंगे जो कह दो राम[7] मैं ही हूँ।
ज़मीं ज़माँ को भी यूं 'राम'[8] कीजिये तो सही ॥६॥

[१४]

(४) इश्क़[9] का तूफ़ाँ[10] बपा है, हाजते मयख़ाना[11] नेस्त[12]।
ख़ूं शराबो दिल कबाबो, फ़ुरसते पैमाना[13] नेस्त ॥१॥

---

(१) निजानन्द रूपी शराब से जब दिल का मटका पूर्ण है तब प्यासा गला क्यों? इस मटके की मोहर को तोड़कर आनन्द रूपी मद तो पीजिये।
(२) प्रेम का पतङ्ग जब आकाश से भी दूर उड़ जाय तब बुद्धि रूपी रस्सी को ढीला छोड़ तो दो।
(३) यदि तुम अपने आपको राम भगवान् कह दो तो हम आपको निजानन्द का साक्षात्कार करावें। इस प्रकार से देश (पृथिवी) और काल सब को स्वाधीन भी कर लो।

[१४]

(४) प्रेम घटा छाई हुई है, अब शराबख़ाने की अब ज़रूरत नहीं है। इस समय अपना रुधिर तो शराब है और चित्त कबाब है, अतएव किसी प्याले का अब अवकाश नहीं।

---

१ (हृदय रूपी) मटका. २ प्रेम रूपी शराब, मद ३ प्यासा गला. ४ अहंकार की मोहर. ५ आकाश ६ बुद्धि ७ राम भगवान् ८ अधीन, वशवर्ती, आज्ञाकारी ९ प्रेम. १० घटा ११ शराबख़ाने की ज़रूरत. १२ नहीं है १३ प्याला

(१) सख़्त मख़मूरी[1] है तारी[2], ख़्वाह कोई कुछ कहे ।
पस्त[3] है आलम[4] नजर में, वहशते दीवाना[5] नेस्त ॥ २ ॥

(२) अलविदा[6] ऐ मर्ज़े दुनिया ! अलविदा ऐ जिस्मो जाँ ! ।
ऐ अतश[7] ! ऐ जूं[8] ! चलो, ईं जा[9] कबूतरख़ाना नेस्त ॥ ३ ॥

(३) क्या तजल्ली[10] है यह नारे हुस्न[11] शोलाख़ेज़[12] है ।
मार ले पर ही यहाँ पर ताक़ते परवाना नेस्त ॥ ४ ॥

(४) मिह्र[13] हो मह[14] हो दबिस्ताँ[15] हो गुलिस्ताँ[16] कोहसार[17] ।
मौजज़न[18] अपनी है ख़ूबी, सूरते बेगाना नेस्त ॥ ५ ॥

---

(१) प्रेम-मद का नशा अत्यन्त चढ़ा हुआ है इसलिये अब चाहे कोई कुछ पड़ा कहे, सारा संसार तो तुच्छ हो रहा है । पर यह पागल मनुष्य की पशुवृत्ति के समान दशा नहीं है ।

(२) हे जगत् के रोग ! तू अब रुख़सत हो, हे देह, प्राण ! तुम दोनों भी अब रुख़सत हो । हे भूख प्यास ! तुम दोनो मेरे पास से परे हटो, यह जगह कोई कबूतरख़ाना (अर्थात् तुम्हारे रहने सहने का घर) नहीं है ।

(३) आहा ! सौन्दर्य की तेज़ ज्वाला कैसी भड़की हुई है । अब किसी परवाने की शक्ति है जो इसके आगे पर भी मार सके ?

(४) सूर्य हो चाहे चन्द्र, पाठशाला हो चाहे बाग़ और पर्वत, इन सब में अपनी ही सुन्दरता तरंगें मार रही है, अन्य किसी रूप की नहीं ।

---

१ नशा २ छाया हुआ ३ तुच्छ ४ संसार ५ पागल पुरुष का पशुपन (पशुवत् व्यवहार) ६ रुख़सत हो ७ प्यास ८ भूख, क्षुधा ९ इस जगह १० प्रकाश चमक ११ सौन्दर्य रूप ज्वाला १२ भड़की हुई १३ सूर्य १४ चन्द्र १५ पाठशाला १६ बाग़ १७ पर्वत व पहाड़ी जगह १८ तरंगमयी या लहराती हुई

(१) लोग बोले गहन[1] ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत।
ख़ुद हैं तारीकी[2] में बरमन[3] साया महजूबाना[4] नेस्त ॥ ६ ॥
(२) उठ मेरी जाँ! जिस्म से, हो ग़र्क़ ज़ाते राम[5] में।
जिस्म[6] बदरीश्वर की सूरत, हरकते फ़रज़ाना[7] नेस्त ॥ ७ ॥

---

(१) लोग कहते हैं कि सूर्य को ग्रहण ने पकड़ रक्खा है, पर यह नितान्त झूठ है। क्योंकि स्वयं तो अन्धकार में होते हैं और प्रकाश स्वरूप सूर्य को अन्धकार में समझने लग जाते हैं। जैसे सूर्य का ग्रहण से पकड़े जाना झूठ है और सूर्य वास्तव में ग्रहण से ऊपर होता है, वैसे ही मुझे अज्ञान के पर्दे में आसक्त मानना झूठ है और मुझ पर वास्तव में किसी प्रकार का पर्दा ढकनेवाला नहीं है।

(२) हे मेरे प्राणों! इस देह से उठकर राम के स्वरूप में लीन हो जाओ। और देह ऐसा हो जाय जैसे बदरीनारायण जी की मूर्ति कि जिसमें बालकवत् चेष्टा भी नहीं है। *

---

१ ग्रहण २ अन्धकार ३ मुझ पर ४ परदे में छुपे हुये के समान छिपानेवाला ५ राम का स्वरूप ६ देह ७ बालकवत् चेष्टा

* यह कविता सन् १९०२ की दीपमाला में हिमालय के बदरीनारायण के मन्दिर में प्रवेश के समय लिखी गई थी। अतएव इसमें ग्रहण और बदरीनाथ की मूर्ति का दृष्टान्त आया है।

[१५]

भाग[1] तिन्हाँ दे अच्छे, जिन्हाँ नूँ राम मिले। (टेक)

(१) जद[2] "मैं" सी ताँ दिलवर नासी।
"मैं" निकसी पिया घट घट वासी॥
खसम[3] मरे घर वस्से! भाग तिन्हाँ० ॥ १ ॥

(२) जद "मैं" मार पिछों[4] वल सुट्टियाँ[5]।
प्रेम नगर चढ़ सेजे सुत्तियाँ॥
इशक़ झुलारे दस्से[6]! भाग तिन्हाँ० ॥ २ ॥

---

[१५]

(टेक) उनके भाग्य निःसन्देह बड़े अच्छे हैं जिन्हें राम मिल जायँ।

(१) जब शुद्ध अहंकार रूपी 'मैं' भीतर थी तब अपरिच्छिन्न अहंकार रूपी मैं अर्थात् प्यारा आत्मा भीतर अनुभव नहीं होता था। और जब शुद्ध अहंकार रूपी मैं भीतर से निकल गई (अर्थात् जब उसका अभाव हो गया) तब प्यारा (निज स्वरूप) घट २ में बसा अनुभव हुआ।

(२) जब इस शुद्ध अहंकार को मारकर पीछे फेंका तब प्रेमानन्द भोगना नसीब हुआ। फिर तो प्रेम अपना प्रबल वेग दर्शाने लग पड़ा।

---

१ भाग्य २ जब मैं थी ३ पति, स्वामी तात्पर्य अहंकार से ४ पिछली ओर ५ फेंका ६ ज़ोर दिखावे

(१) चादरफ़ुक शरह[1] दी सेकाँ[2]।
अग्गियाँ खोल दिलबर नू देखाँ॥
मरम शुन्दे, मय नस्से[3]। भाग तिन्हाँ०॥३॥

(२) ढूड ढूड के उमर गँवाई।
ओं घर अपने भाती पाई॥
राम खब्बे[4] राम सब्बे[5]। भाग तिन्हाँ०॥४॥

ज्ञान

[१६]

[छान्दोग्योपनिषद् के एक श्लोक का भावार्थ]

कफ़स[6] एक था आईनों[7] से बना।
लटकता गुले ताजह[8] मरकज़[9] में था॥१॥
था फूल एक, पर अक्स[10] हर तर्फ़ थे।
थे माशूक़ सब बुलबुले बन्द[11] के॥२॥
गुले अक्स[12] की तर्फ़ बुलबुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी॥३॥

---

(१) जब मैं कर्म-काण्ड रूपी अज्ञान के पर्दे को ज्ञानाग्नि से जलाकर उसकी आग तापने लगा तब निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा, तब तो सारे भ्रम संशय स्वतः दूर हो गये।

(२) इतनी देर तक तो तलाश में आयु खोई। पर अब अपने भीतर दृष्टि दी तो राम (निज स्वरूप) को दायें बायें अर्थात् चारों ओर व्यापक पाया।

---

१ कर्म-काण्ड २ तापी ३ भागे ४ दायें ५ बायें ६ पिंजरा ७ शीशों ८ ताज़ह पुष्प ९ बीच में या केन्द्र में १० प्रतिबिम्ब ११ क़ैद या घिरा हुआ पक्षी (बुलबुल) १२ पुष्प का प्रतिबिम्ब

जिसे फूल समझी थी साया ही था।
यह झपटी तो तब शीशा सिर पर लगा ॥ ४ ॥

जो दायें को झाँका वही गुल खिला।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था ॥ ५ ॥

मुक़ाबल उड़ी मुंह की खाई वहाँ।
जो नीचे गिरी चोट आई वहाँ ॥ ६ ॥

फफ़स के था हर सिम्त[1] शीशा लगा।
खिला फूल था वस्त[2] में चाह का ॥ ७ ॥

उठा सिर को जिस आन[3] पीछे मुड़ी।
तो खन्दाँ[4] था गुल आँख उससे लड़ी ॥ ८ ॥

झझकने लगी अब भी धोका न हो।
है सचमुच का गुल तो फ़क़त[5] नाम को ॥ ९ ॥

चली आख़रश[6] करके दिल को दिलेर।
मिला गुल, लगी इक न दम भर की देर ॥ १० ॥

मिला गुल, हुई मस्तो दिलशाद[7] थी।
फफ़स था न शीशे वह आज़ाद थी ॥ ११ ॥

यही हाल इन्सान! तेरा हुआ।
फफ़स में है दुनिया के घेरा हुआ ॥ १२ ॥

भटकता है जिसके लिये दर बदर।
वह आराम है क़ल्ब[8] में जल्वागर[9] ॥ १३ ॥

---

१ प्रत्येक ओर. २ मध्य ३ जिस समय ४ खिला हुआ ५ केवल. ६ अन्त में ७ आनन्द मग्न ८ भीतर दिल के. ९ प्रकाशमान.

ज़रो नेमत[1] मेरी किरणों में धोका था सुराब[2] देना।
तजल्ली नूर[3] है मेरा कि 'राम' अहमद हूँ ईसा मैं ॥ ५ ॥

[१९]

प्रश्न

मेरा 'राम' आराम है किस जा[4] ? देखकर उसको जी[5] करूँ ठण्डा।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है ? क्या वह महदूद[6] और यक जा[7] है ?

जुमला मोतर्ज़ा

वाह क्या चाँदनी में गंगा है, दूध हीरों के रंग रंगा है।
साफ़ बातन[8] से आये सीमीं[9] बर, मीठी मीठी सुरों से गा गा कर।
लुत्फ़ रावी[10] का आज लाती है, यूं पता 'राम' का सुनाती है ॥

[२०]

उत्तर

देखो मौजूद सब जगह है राम, माह[11] बादल हुआ है उसका धाम।
बल्कि है ठीक ठीक बात तो यह, उसमें है बूदो-बाशे-आलमे[12]-सेह ॥
वह अमूरत है मूरती उसकी, किस तरह हो सके ? कहाँ ? कैसी ?
कुल्ले शैऽन[13]-मुहीत है आकाश, मूर्ती में न आ सके परकाश।
जो है उस एक ही की मूरत है, जिस तरफ़ झाँकें उसकी सूरत है ॥

---

१ धन दौलत २ मृगतृष्णा का जल ३ तेजोमय प्रकाश ४ स्थान, जगह, ५ जिस, दिल ६ परिच्छिन्न ७ एक देशी ८ भीतर से शुद्ध ९ चाँदी की सूरतवाली लल १० दरिया का नाम है जो लाहौर में बहता है ११ चाँद १२ इसमें तीनों लोकों की स्थिति और बाबत है १३ समस्त वस्तुओं को घेरे हुए अर्थात सर्वव्यापक ।

[२१]

उत्तर स्वरूप प्रश्न

मस्त ढूँढे है ठौर के मतवाला[1], कुछ पता दो कहाँ है मतवाला।
गङ्गा करती फिरे है गङ्ग गङ्ग गङ्ग, "हाय गङ्गा का पाऊँ क्योंकर सङ्ग ?"
मुख से घूँघट उठा के वह प्यारा, "खोजता है किधर गया प्यारा ?"
भाङ्ग पी पी के भङ्ग कहती है, "बूटी शिव की किधर गई है ये !"
मस्ती पूछे है मस्त नैनों से, "हैं कहाँ पर वह नशा के डोरे ?"
रात भर ताकता फिरा तारा, फाड़ आँखों को, "है कहाँ तारा ?"
राम बन बन को छान थक हारा, "मेरा आराम, 'राम' है किस जा[2] ?

[२२]

एक प्यारे के पत्र का उत्तर

सरोदो[3] रक्सो[4] शादी[5] दम बदम[6] है, तफ़क्कुर[7] दूर है और ग़म को रम[8] है
ग़ज़ब ख़ूबी है, बेरूँ-अज़-रक़म[9] है, यक़ीनन[10] जान, तेरी ही क़सम है
मुबारक हो तबीयत का यह खिलना, यह रस भी नीअब स्था जामे[11]-जम है
मुबारक दे रहा है चाँद झुककर, सलामों[12] से कमर में उसकी ख़म[13] है
पिये जाओ दमा दम जाम[14] भरकर, तुम्हारा आज लाखों पर क़लम है
गुलों[15] से पुर हुआ है दामने[16] शौक़, फ़लक[17] ख़ेमा[18] है कैवाँ[19] परचम[20] है
तिरे दीदों[21] पै भूले से हो शबनम[22], कभी देखा सुना "सूरज पै नम" है ?

---

१ मस्त २ स्थान, जगह ३ राग रङ्ग ४ नाच ५ तमाशा, खुशी ६ निरन्तर ७ सोच, फ़िक्र ८ दूर भागा हुआ ९ वर्णन से बाहर १० निश्चय पूर्वक ११ जमशेद बादशाह का प्याला जिससे मस्ती लाई जाती थी १२ नमस्कारों १३ कुबड़ापन, झुकाव १४ (निजानन्द के) प्याले १५ पुष्पों से १६ जिज्ञासा का पल्ला अर्थात् तीव्र जिज्ञासा १७ आकाश १८ मण्डप, तम्बू १९ शनितारा, २० झण्डा २१ नेत्रों २२ शीतलता, ठण्डक, गीलापन

[२७]

पड़ी जो रही एक मुद्दत[1] ज़मीं में।
छुरी तेज आहन[2] की मट्टी ने खाई ॥ १ ॥
करे काटना फाँसना किस तरह अब।
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई ॥ २ ॥
हुआ जब ज़मीं खुद यह लोहा तो बस फिर
न आतश[3] सही सिर पै नै[4] चोट आई ॥ ३ ॥
छुरी है यह दिल, इसको रहने दो बेखुद।
यहाँ तक कि मिट जाय नामे जुदाई ॥ ४ ॥
पड़ा ही रहे ज़ाते मुतलक[5] में बेखुद।
ख़बर तक न लो है इसी में भलाई ॥ ५ ॥
मेरा तेरा का चीरना फाड़ना सब।
उड़े हो दुई की न मुतलक़[6] समाई ॥ ६ ॥
न गुस्सा जलाये, मुसीबत की नै चोट।
मिटे सब तअल्लुक़[7], ख़ुदाई, ख़ुदाई ॥ ७ ॥
जिसे मान बैठे थे घर बार ! भाई।
यह घर से भुलाने की थी एक फाई[8] ॥ ८ ॥
भुला घर को मन्ज़ल[9] में घर कर लिया जब।
तो निज बादशाही की कर दी सफ़ाई ॥ ९ ॥
हवा के बगोलों से जब दिल को बाँधा।
छुटी ना उमेदी की मुंह पर हवाई ॥ १० ॥

---

१ समय, काल २ लोहा ३ अग्नि ४ नहीं ५ तत्त्व स्वरूप ६ बिलकुल अर्थात् छिद्रिद्र भी समाई न हो ७ सम्बन्ध ८ बाँध बन्ध या फंद ९ मार्ग पड़ाव

फँधल, मरदुमे चश्म[1], सूरज, बत्ते आब[2]।
तअल्लुक़ की आलूदगी[3] थी न राई ॥ ११ ॥
जो सच पूछो सैरो तमाशा भी क्या था।
न थी दूसरी शय[4] न देखी दिखाई ॥ १२ ॥
थी दौलत की दुनिया में जिसकी दुहाई[5]।
जो खोला गिरह[6] को तो पाई न पाई[7] ॥ १३ ॥
किये हर सेह[8] हालत के गरचिह नज़ारे।
चले[9] 'राम' तनहा[10] था मुतलक़[11] अकाई ॥ १४ ॥

[१८]

कहाँ जाऊँ ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूँ क्या मैं ? ।
मैं इक तूफ़ाँ क़यामत का हूं, पुर[12] हैरत तमाशा में ॥ १ ॥
मैं बातन[13] में अयाँ[14], ज़ेरो[15] ज़बर, चप[16] रास्त, पेशो[17] पस।
जहाँ में, हर मकाँ[18] में, हर ज़माँ[19] हूंगा, सदा था मैं ॥ २ ॥
नहीं कुछ जो नहीं मैं हूं, इधर मैं हूं, उधर में हूं।
मैं चाहूं क्या ? किसे ढूंडूं ? सभी में ताना बाना मैं ॥ ३ ॥
यह बहरे हुस्नो[20] खूबी हूं, हुबाब[21] हैं काफ़[22] और कैलाश।
उड़ा इक मौज[23] से क़तरा, बना तब मिहर[24] आसा मैं ॥ ४ ॥

---

१ नेत्र की पुतली २ जल में रहनेवाली बतख़ ३ आक्षेप, लेप ४ वस्तु. ५ घोर पुकार ६ गाँठ ७ एक पैसे का तीसरा भाग ८ तीनों अवस्था. ९ किन्तु १० अकेला ११ नितान्त अद्वैत १२ आश्चर्य भरा हुआ १३ भीतर १४ बाहर, प्रकट १५ नीचे ऊपर १६ बायें, दायें १७ आगे पीछे १८ देश १९ काल २० सुन्दरता का समुद्र २१ बुलबुला २२ कोहकाफ़ के पर्वत से आशय है २३ लहर २४ सूर्य जैसा.

ज़रो नेमत[1] मेरी किरणों में धोखा था सुराब[2] ऐनी।
तजल्ली नूर[3] है मेरा-कि 'राम' अहमद हूँ ईसा में ॥ ५ ॥

[१९]

प्रश्न

मेरा 'राम' आराम हूँ किस जा[4]? देखकर उसको जी[5] करूँ ठण्डा।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है? क्या वह महदूद[6] और यक जा[7] है?

जुमला मोतर्ज़ा

वाह क्या चाँदनी में गंगा है, दूध हीरों के रंग रंगा है।
साफ़ बातन[8] से आवे सीमीं[9] बर, मीठी मीठी सुरों से गा गा कर।
लुत्फ़ रावी[10] का आज लाती है, यूँ पता 'राम' का सुनाती है॥

[२०]

उत्तर

देखो मौजूद सब जगह है राम, माह[11] बादल हुआ है उसका धाम।
बल्कि है ठीक ठीक बात तो यह, उसमें है बूदो-बाशे आलमे[12]-सेह॥
यह अमूरत है मूरती उसकी, किस तरह हो सके? कहाँ? कैसी?
कुल्ले शैऽन[13]-मुहीत है आकाश, मूर्ती में न आ सके परकाश।
जो है उस पत्र ही की मूरत है, जिस तरफ़ झाँकें उसकी सूरत है॥

---

१ धन दौलत २ मृगतृष्णा का भ्रम ३ तेजोमय प्रकाश ४ स्थान, जगह ५ चित्त, दिल ६ परिच्छिन्न ७ एक देशी ८ भीतर से शुद्ध ९ चाँदी की मूरतवाली जल १० दरिया का नाम है जो लाहौर में बहता है ११ चाँद १२ उसमें तीनों लोकों की स्थिति और आवास है १३ समस्त वस्तुओं को घेरे हुए अर्थात् सर्वव्यापक

[२१]

उत्तर स्वरूप प्रश्न

मस्त ढूंढ़े है होके मतवाला[1], कुछ पता दो कहाँ है मतवाला।
गङ्गा फिरती फिरे है गङ्ग गङ्ग गङ्ग, "हाय गङ्गा का पाऊँ क्योंकर सङ्ग?"
मुख से घूंघट उठा के वह प्यारा, "खोजता है किधर गया प्यारा?"
भाङ्ग पी पी के भङ्ग कहती है, "बूटी शिव की किधर गई है ये!"
मस्ती पूछे है मस्त नैनों से, "हैं कहाँ पर वह नशा के डोरे?"
रात भर ताकता फिरा तारा, फाड़ आँखों को, "है कहाँ तारा?"
राम बन बन को छान थक हारा, "मेरा आराम, 'राम' है किस जा[2]?

[२२]

एक प्यारे के पत्र का उत्तर

सरोदो[3] र[4]क्सो शादी[5] दम बदम[6] है, तफ़क्कुर[7] दूर[8] है और ग़म कॉ रम है
ग़ज़ब खूबी है, बेरूँ-अज़-रक़म[9] है, यक़ीनन[10] जान, तेरी ही क़सम है
मुबारक हो तबीयत का यह खिलना, यह रस भीनी अवस्था जामे[11]-जम है
मुबारक दे रहा है चाँद झुककर, सलामों[12] से कमर में उसकी ख़म[13] है
पिये जाओ दमा दम जाम[14] भरकर, तुम्हारा आज लाखों पर क़दम है
गुलों[15] से पुर हुआ है दामने[16] शौक़, फ़लक[17] ख़ेमा[18] है कैवाँ[19] पर अलम[20] है
तिरे दीदों[21] पै भूले से हो शबनम, कभी देखा सुना "सूरज पे नम[22]" है?

---

१ मस्त २ स्थान, जगह ३ राग रङ्ग ४ नाच ५ तमाशा, खुशी ६ निरन्तर ७ सोच, फ़िक्र ८ दूर भागा हुआ ९ वर्णन से बाहर १० निश्चय पूर्वक ११ जमशेद बादशाह का प्याला जिससे मस्ती लाई जाती थी १२ नमस्कारों १३ झुमड़ापन, झुकाव. १४ (निजानन्द के) प्याले १५ पुष्पों से १६ जिज्ञासा का पल्ला अर्थात् तीव्र जिज्ञासा १७ आकाश. १८ मण्डप, तम्बू. १९ शनितारा. २० झण्डा २१ नेत्रों, २२ शीतलता, ठंडक, गीलापन

रखें आगेको क्याक्या हम न उम्मेद, कि मारा गुर्ग[1] ग़म, पहिलाक़दम है
दिखाया है प्रकृति ने नाच पूरा, सिले[2] में उड़ गई, ऐहै ! सितम[3] है
ग़लत[4] गुफ़्तम, शकायत की नहीं जा[5], मिलीआपुरुषमें, अद्लोकरम[6] है
न कहता था तुम्हें क्या 'राम' पहिले ? सवाहे[7] ईद आई, रात कम है

[२३]

(१) जाँ[8] तूं दिल दीयाँ चशमाँ[9] खोलें, हू अल्लाह[10] हू अल्लाह बोलें।
में मोला कि मारें चीख़, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ १ ॥
(२) जाम[11] शराबे[12] वहदत वाला, पी पी हर दम रहो मतवाला।
पी में चारों लाके डीक[13], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ २ ॥

---

[२३]

(१) यदि तू अपने दिल के नेत्र खोले तो ब्रह्माग्नि २ स्वत बोलने लग पड़े और यों पुकार उठे कि "ईश्वर मैं हूं" और "अपने गले से भी अधिक समीप ईश्वर है"।

(२) अद्वैतामृत रूपी शराब के प्याले को ऐ प्यारे ! तू घड़ी घड़ी पीकर मस्त हो, और एक घूंट में ही इसे पी जाओ (और याद रख) कि ईश्वर अपने गले से भी अधिक समीप है।

---

१ क़िस्सा का पैग़ुता २ बदले में ३ आश्चर्य है, ज़ुल्म है ४ मैंने ग़लत कहा, ५ ख्याल, भ्रम ६ ख्वाब और रहा (अर्थात् प्रकृति का अपने पुरुष में लय होना ही ठीक ख्वाब और भ्रमवत् हुआ है) ७ आनन्द की प्रातः ८ जब, ९ नेत्र १० मैं अल्लाह हूं, निःसंदेह ११ प्याला १२ अद्वैत रूपी शराब को, १३ एकदम

(१) गिरजा तसबीह[1] जंजू तोड़ें, दीन[2] दुनी पसों मुंह मोड़ें।
ज़ात पाक[3] नूं ला न लीक[4], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ३ ॥

(२) जे तैनूं राम मिलन दा चा[5], ला लै छाती लग्गा दा।
नाम लोहा दा धरिया पीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ४ ॥

(३) न दुनिया दीखेः उड़ा, हाहाकार न शोर मचा।
छुठ रोना, हस, गा ते गीत, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ५ ॥

---

(१) मतभेद के जोश में आकर जो तू गिरजा, माला और यज्ञो-पवीत तोड़ता है उससे तू दीन और दुनिया से मुख फेरता है अर्थात् तू लोक परलोक से गिरता है। ऐ प्यारे! अपने शुद्ध पवित्र स्वरूप को धब्बा मत लगा और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

(२) यदि तुझे राम भगवान् के मिलने की इच्छा वा जिज्ञासा है तो दिल खोल कर बाज़ी लगा। (लोहा लोहे के बर्तन से कोई भिन्न नहीं है बल्कि) लोहा ही दूसरे रूप में आकर पीक नाम से कहलाता है। इसी प्रकार, ईश्वर ही दूसरे रूपों में भिन्न भिन्न नाम से कहलाता है और वह गले से भी अधिक समीप है।

(३) न तू संसार की राख उड़ा और न हाहाकार का शोर मचा, बल्कि इस रुदन को छोड़कर हँस और आनन्द से गीत गायन कर, और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

---

१ समरणी. २ धर्म अर्थ वा लोक परलोक की ओर से ३ शुद्ध स्वरूप को, ४ धब्बा. ५ जिज्ञासा.

(१) चुक सुट पर्दा दूई वाला, अन्दर्यों विचों कढ छुडं जाला।
"तूं ही तूं" नहीं होर[1] शरीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥६॥
(२) सुन सुन सुन ले 'राम' दुहाई, वे अन्ता क्यों अन्त हैं चाहें।
मालिक कुल[1] तूं, मंग न भीख, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥७॥

ज्ञानी

[२५]

ज्ञानी की आभ्यन्तर दशा

नसीमे[1] बहारी चमन[2] सब खिला। अभी छींटे दे दे के बादल चला।
गुलों[4] [बोसा[5] लो, चान्दना का मिला। अजाँ नाज़नीं[7] इश्क सरापा[8] चला।
हुई रूबरू, मिला तपलिया[9] क्या मला। क़रीब आई, घूरी, हँसी खिलखिला।
न आदुसे लेकिन ज़रा वह हिला। निगह[10] ने दिया काम[11] को भट जला।

(१) द्वैत का पर्दा तू दूर फेंक और दिल के बीच भीतर मल को बाहिर निकाल डाल (फिर तू देखेगा कि) सब "तू ही तू" वास्तव में है और तेरे से भिन्न कोई नहीं है। और ईश्वर इस लिये गले से भी अधिक समीप है।

(२) ऐ प्यारे! सुन कान लगाकर राम दुहाई राम की पुकार सुन, अनन्त होते हुए तू अन्तवान् होने की क्यों इच्छा करता है? तू वास्तव में सबका मालिक है, इसलिये भीख मत माँग (अर्थात् भिखारी मत बन) और ईश्वर तो गले से भी अधिक समीप है।

१ दूसरा. २ सकल संसार का स्वामी ३ बसन्त ऋतु की मन्द मन्द सुगन्ध (वाली वायु) ४ बाग़. ५ फूल. ६ चुम्बन. ७ इठा बाँकी स्त्री (कामिनी). ८ अति सुन्दर. ९ एकान्त १० दृष्टि. ११ कामवृत्ति (विषय वासना).

सकी जब न सूरज में दीवा जला। परी बन गई ख़ुद मुजस्सम[1] हया।
कि सब हुस्न[2] की जान मैं ही तो हूं।
मेहर[3]-ओ-माह के प्राण मैं ही तो हूं ॥ १ ॥

हज़ारों जमा पूजा, सेवा को थे। थे राजे चँवर मोरछल कर रहे।
थे दीवान धोते क़दम[4] शौक़ से। थे ख़िदमत में हाज़र मदह[5] ख़्वाँ खड़े।
ऋषी तुम हो अवतार सब से बड़े। यह सब देख बोला लगा क़हक़हे[6]।
बड़ा ही नहीं बल्कि छोटा भी हूं।
न महदूद[7] करियेगा सब मैं ही हूं ॥ २ ॥

बुरे तौर थे लोग सब छोड़ते। ठठोली से थे फबतियाँ[8] घड़ रहे।
तड़ातड़ तड़ातड़ यह पत्थर जड़ें। लहू के निशाँ सिर पै रुख़[9] पै पड़े।
पया[10] पै थे ज़ख़्म और सदमे[11] कड़े। थे दीदे[12] अजब मुस्कराहट[13] भरे।
कि इस खेल की जान मैं ही तो हूं।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥ ३ ॥

समय नीम[14] शब, माह[15] था जनवरी। हिमालय की बर्फ़, सियह रात थी।
बरफ़ की लगी उस घड़ी इक झड़ी। थमी बर्फ़[16] बारी, तो आँधी चली।
बदन की तो गत[17] बेदमजनूं सी थी। पै दिल में थी ताक़त, लबों पर हँसी।

---

१ लज्जावती अर्थात् जब ज्ञानी रूप सूर्य में यह कामिनी अपना विषय वासना रूपी दीपक न जला सकी अर्थात् जब ज्ञानवान् उस कामिनी के सौन्दर्य रूप फंदे में न आ सका तब यह (बाँकी कामिनी) स्वयं अति लज्जित हो गई २ सौन्दर्य. ३ सूर्य चन्द्र. ४ चरण, पाद ५ स्तुति करनेवाले ६ हँसकर बोला ७ परिच्छिन्न न कीजियेगा ८ बातें बना रहे या हँसी उड़ा रहे ९ मुख. १० लगातार, निरन्तर. ११ कठोर चोट १२ नेत्र. १३ प्रसन्नता भरे, हँसी परोये हुये. १४ अर्द्ध रात्रि. १५ मास १६ बर्फ़ की वर्षा १७ दशा.

कि सर्दी की भी जान में ही तो हूं।
अनासर[1] के भी प्राण में ही तो हूं ॥ ४ ॥

समय दोपहर माह था जून का। जगह की जो पूछो, ख़ते उस्तवा[2]।
तमाज़त[3] ने लू की दिया सब जला। हरारत[4] से था रेग[5] भी भूनता।
बदन माम सा था पिघलता पड़ा। पै लब से था ख़न्दा[6] परोया हुआ।

कि गर्मी की भी जान में ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण में ही तो हूं ॥ ५ ॥

बियाबान तनहा लक़ोदक़[7] ग़ज़ब। इधर मेदा[8] ख़ाली उधर ख़ुश्क लब।
उठाई निगह सामने, ऐ अजब। लड़ी आँख इक शेरे नर[9] से तब।
वह तेज़ी से घूरा, गया शेर दब। जलाले[10] जमाली था चितवन[11] में अब।

कि शेरों की भी जान में ही तो हूं।
सभी दृष्टि[12] के प्राण में ही तो हूं ॥ ६ ॥

चला मंझधारा में किश्ती घिरी। वह कहता था तूफ़ां कि हूं आख़री।
थपेड़ों से चटपट चटाँ वह चिरी। उधर बिजली भी वह गिरी वह गिरी।
था थामे हुये बाँस[13] ज्यूं बाँसरी। तबस्सुम[14] में जुरअत[15] भरी थी निरी।

कि तूफ़ाँ की भी जान में ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण में ही तो हूं ॥ ७ ॥

बदन दर्दो पेचश से सीमाब[16] था। तपे सख़्तो रेज़श से बेताब[17] था।

---

१ पञ्चभूत जिन्हें फ़ारसी में चार तत्त्व कहते हैं २ पृथिवी का मध्य भाग जहाँ अति गरमी होती है. ३ गरमी. ४ धूप की तेज़ी से ५ रेत. ६ हँसी परोई हुई. ७ बड़ा भारी भयानक उजाड़ बन, ८ पेट ९ चिंघाड़नेवाला व घुरनेवाला शेर. १० निजानन्द का तेज ११ दृष्टि १२ दृष्टि १३ यहाँ अभिप्राय बेड़ी को चला नेवाले दण्डे से है १४ मुस्कराहट, हँसी. १५ दलेरी, उत्साह, शूर वीरता व निर्भयता. १६ पारा के समान बे क़रार (तड़प रहा) था, १७ तड़प रहा था.

नशा ज्ञान का ज्यूं[1] मये[2] नाब था। वह गाता था गोया[3] मस्त ख़्वाब था।
मिटा जिस्म जो नक़्शबर[4] आब था। न बिगड़ा मेरा कुछ कि खुद आब था।

जहाँ भरके अयदाने[5] खूबाँ में हूं।
मैं हूं 'राम' हर एक की जाँ में हूं॥ ८॥

[२५]

ज्ञानी की दृष्टि

जो खुदा को देखना हो, तो मैं देखता हूं तुमको।
मैं तो देखता हूं तुम को, जो खुदा को देखना हो॥

यह हजाबे[6] साज़ो सामां, यह नकाबे[7] यासो हिरमां।
यह गुलाफे नङ्गो[8] नामूस, यह दमागो दिल का फ़ानूस।
यह मनो शुमा[9] का पर्दा, यह लबासे चुस्त[10] फर्दा।
यह हया[11] की सब्ज़ काई, यह फ़ना सियाह रज़ाई।
यह लफ़ाफ़ा जामा[12] बुर्का, यह उतार सितर तुम को।
जो बरहना[13] करके झाँका, तो तुम हो सफ़ा खुदा हो॥ १॥ टेक
ऐ नसीमे[14]-शौक़! जा के, वह उड़ादे ज़ुल्फ़ रुख़ से।
ऐ सबा[15]-ए-इल्म! जा कर, दे हटा वह ख़्वाबे[16] चादर।
अरे बादे तुन्दमस्ती[17]!, दे मिटा अबर[18] की हस्ती।

---

१ समान २ अङ्गूर की शराब ३ मानो ४ जल पर चित्र के समान था ५ सुन्दर देहों में. ६ (यह साज और समान का) पर्दा ७ (निराशा) की आड़ व पर्दा. ८ लज्जा व मान प्रकट करना व निर्लज्जा ९ मैं तू १० चुस्त करनेवाला ११ लज्जा १२ वस्त्र व चादर. १३ नङ्गा १४ जिज्ञासा की पवन. १५ ऐ ज्ञान की पवन (वायु). १६ स्वप्न रूपी चादर. १७ ऐ निजानन्द की घटा. १८ (पर्दा रूपी) बादल

ये नज़र के ख़ान गोले, यह फ़सील झट गिरा दे।
कि हो जहल[1] भस्म इक दम, जले यह जो यह आलम[2]।
जो हो चार सू[3] तरन्नम[4], कि हैं हम खुदा, खुदा हम ॥ २ ॥ टेक

न यह तेग़[5] में है ताक़त, न यह तोप में लियाक़त।
न है बर्क़[6] में यह यारा, न है ज़हर ही का चारा।
न यह कारे तुन्द[7] तूफ़ान, न है ज़ोर शेरे[8] ग़र्रान[9]।
कोई जज़बह[9] है न शहवत[10], कोई ताना: ने[11] शरारत।

जो तुझे हलाने आयें

जो तुझे हलाने आयें, तो हों राख भस्म हो जायें।
यह खुदाई[12] दीदे खोलो, कि हों दूर सब बलायें ॥ ३ ॥ टेक

यह पहाड़ी नाले चमचम, यह बहारी अबर छम छम।
यह चमकते चाँद तारे, हैं तेरे ही रूप प्यारे।
दिले अन्दलीब[13] में तू, रुखे[14] गुल का रंगे गुलगूं[15]।
यह शफ़क़[16] के सुर्ख दस्ते[17], हैं तेरे ही लाल पर्दे।
है तुम्हारा धाम तो 'राम', ज़रा घर को मुँह तो मोड़ो।
कि रहीम 'राम' हो तुम, तुम ही तो खुद खुदा हो ॥ ४ ॥ टेक

---

१ अज्ञान २ संसार. ३ चारों ओर. ४ (आनन्द की) फुहार, मन्द मन्द वर्षा. ५ तलवार. ६ बिजली. ७ भारी पंजे का काम. ८ फिसलने वाला या भयानक शेर. ९ बिल की गर्जना वा शोर. १० विषय भोग वा विषय वासना. ११ न कोई. १२ ब्रह्म दृष्टि ईश्वरी वा दिव्य नेत्र १३ बुलबुल पक्षी का दिल. १४ फूल की सूरत. १५ लाल रङ्ग वा गुलाबी रङ्ग १६ उदय अस्त के समय आकाश में जो लाली होती है, शफ़क़ १७ प्यारे दस्ते, भाग और बादल.

[२६]

रौशनी की बातें

(जनूने-नूर)

मैं पड़ा था पहलू[1] में राम के, दोनों एक नींद में लटे थे
मेरा सीना[2] सीने पै उसके था, मेरा साँस उसका तो साँस था
आई चुपके चुपके से रौशनी, दिये बोसे[3] दीदों[4] पै नाज़ से
लम्बी पतली लाल सी उङ्गलियों से, खुशी से गुदगुदा दिया!
कुछ तुमको आज दिखाऊँगी (मैं दिखाऊँगी),
ऐसा कहके हाथ खुला दिया।

यह जगा दिया कि सुला दिया, जाने किस बला में फँसा दिया
ये लो! क्या ही नक़्शा जमा दिया, कैसा रङ्ग जादू रचा दिया
चली निखरकर हमें साथ ले, करी सैर हाथों में हाथ दे
मचे खेल आँखों में आँख दे, गुल[5] बलबला[6] सा बपा दिया
इक शोर ग़ौग़ा[7] उठा दिया, निज धाम को तो भुला दिया
मुंह राम से तो मुड़ा दिया, आरामे[8]-जाँ को मिटा दिया
थक हारकर झख मारकर, हर मू[9] से बोला पुकार कर
अरी नाबकारह[10] रौशनी! अरी चकमा[11] तू ने भला दिया!
खन्दी[12]! किरणें[13] तेरी सफ़ेद हैं, बालों में रङ्ग भरे है तू
गुलगूना[14]-मुंह पै मले है तू, नटनी ने रूप बटा लिया
रुख़[15] देखिये तो है फ़क़[16] तेरा, दिल गर्दिशों[17] से है शक़[18] तेरा

---

१ पास, एक ओर, समीप २ छाती. ३ चुंबन. ४ नेत्र. ५ शोर. ६ एक चल. ७ शोर, हल्लड़ धूम. ८ जीवन के चैन को. ९ बाल, रोम. १० नाकारी, बेहूदा, नटखटी. ११ धोखा. १२ हे निर्लज्ज. १३ किरणों से अभिप्राय बाल हैं. १४ उबटना. १५ मुख. १६ पीला मुरझाया हुआ. १७ काल चक्र से १८ फटा हुआ, टूटा हुआ.

तू उड़ती गैया से धूल है, रथ राम ने जो चला दिया
कहो ! किस जवानी के ज़ोर पर तूने हमको आ के उठा दिया
यूँ[1] कहके किस्सा समेटकर, दिल जाँ में यार लपेट कर
फिर लम्बी ताने में पड़ गया, गोया[2] ग़ैरे[3]-राम जला दिया
अभी रात भर भी न बीती थी कि लो रोशनी को हवा लगी
नये नख़रे नख़रे से प्यार से, मेरे चश्मे-ख़ाना[4] को वा[5] किया
कुछ आज तुमको दिखाऊँगी, (मैं दिखाऊँगी),
ऐसा कहके हाय ! नचा दिया
कहूँ क्या जी ! भरे[6] में आ गये, कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दिया
लड़ भिड़ के आख़र राम को, कह अलविदा सब काम को
आग़ोश[7] में ले राम को, तब उसके मन में छिपा दिया
लेकिन फिर आई रोशनी, लो ! दम दिलासा चल गया
और फिर वही शैतानियाँ, वैसी ही कारस्तानियाँ[8]
हँसने में और खसने में फिर दिन भर यों यूँही बिता दिया
बेहूदा टाल मटोल, जी[9] यारों का फिर उकता गया
हम सो गये जाग उठे फिर, यूँ ही अलाहज़्ज़ल[10] क़यास
वादह न अपना रोशनी ने एक दिन ईफ़ा[11] किया
थकने न पाई रोशनी, मामूल पर हाज़र थी यह
उमरों पै उमरें हो गईं, इस का तवातर[12] दौर था
किस धुन में सब इकरार थे, क्यों दिन बदिन यह मदार[13] थे
किस बात के दरपै थी यह ? मस्तो-ख़राबे[14]-मैं थी यह ?
यह तो मुअम्मा[15] न खुला, सदियों का अर्सा[16] हो गया

---

१ ऐसे. २ मानो ३ राम से भिन्न को. ४ मेरे चक्षु के खाने या घर ५ खोल दिया ६ पेच, दाओ ७ गोद ८ चालाकियाँ ९ चित्त १० इत्यादि ११ पूरा किया १२ निरन्तर १३ रिवाज, दस्तूर १४ मैं-मद आनन्दित १५ रहस्य १६ काल

हर बात जो समझी अजब, पास जो देखा तो तब
खाली सुहाना ढोल था, धोका था फ़ितना[1] गोल था
सब गुल्लो[2] कर अशजार[3] थे, चपो-रास्त[4] सब अग़यार[5] थे
सब यार दिल पर बार थे, और बेठकाना कार था
अपना तो हर शब[6] रूठ जाना, रौशनी का फिर मनाना
आज और कल और रोज़ो-शब की क़ैद ही में तलमलाना
सब मेहनतें तो थीं फ़ज़ूल, और कार नाहमवार था
यह रौशनी का साथ चलना, अपना न हरगिज़ उसको तकना
यह रौशनी के ज़ौ[7] की हसरत[8], हमको न परवा बल्कि नफ़रत
सूदो[9]-ज़ियां बीमो[10]-रज़ा की रगड़ कारे-ज़ार[11] था
यूंहि रफ़्ता रफ़्ता पड़े कभी, कभी उठ खड़े थे मरे कभी
कभी शिकमे[12]-मादर घर हुआ, कभी ज़न[13] से वांसो[14] किनार था
बढ़ना कभी, घटना कभी, मद्दो[15]-जज़र दुश्वार था
ग़र्ज़ इन्तज़ारो-कशाकशी[16], दिन रात सीनह[17] फ़िगार था
क्या ज़िन्दगी यह है बगोले की तरह पेचाँ[18] रहे ?
और कोर[19]-सग बन कर शिकारे बाद[20] में हैराँ रहे ?
लो आख़रश आया वह दिन, इक़रार पूरा हो गया
सदियों की मंज़ल कट गई, सब कार पूरा हो गया
हाँ ! रौशनी है सुर्ख़रू, तेरा वादह आज वफ़ा[21] हुआ
तेरे सद्क़े सद्क़े में नाज़नी ! कुल भेद आज फ़िदा हुआ

---

१ चालाक भूत या शैतान. २ गुंचे पहरे. ३ वृक्ष ४ दायें बायें ५ अन्य लोग, विरोधी. ६ रात्रि ७ चिरा ८ शौक़ ९ लाभ हानि १० भय निर्भय ११ युद्ध १२ माता का पेट या गर्भ १३ स्त्री. १४ चुम्बन, प्यार. १५ चढ़ाव उतराव, कम ज़्यादा. १६ खेंचा तानी १७ घायल चित्त. १८ पेच खाती रहे १९ अन्धा कुत्ता २० पवन के शिकार. २१ पूरा.

उमरों का उकदह[१] हल हुआ, कुफलो[२]-गिरह सब खुल गये
सब कयज़ो-तड़ी उड़ गई, पाप और शुभे मन धुल गये
सब ख़्वाबे[३]-दूई मिट गया, दीदे[४]-अजब यह खुल गये;
ऐ रोशनी ! ऐ रौशनी ! ख़ुश हो मैं तेरा यार हूं
खाविन्द[५] घर वाला हूं मैं, पुश्तो[६]-पनाहे-सरकार हूं
यह राम जो माबूद[७] था, साया था मेरे नूर[८] का
क्या रौशनी, क्या राम, इक, शोलह[९] है मेरे तूर[१०] का
इन आँसुओं के तार के सिहरे से चिहरा खिल उठा
क्या लुत्फ शादी[११] मर्ग है, हर शै[१२] से शादी, वाह ! वाह !-
हाँ ! मुयस्सर[१३] घास, ऐ साँप, सग ! ऐ जाग[१४], माही[१५], चील, गिद्ध !
इस जिस्म से कर लो ज़ियाफत पेट भर भर वाह ! वाह !!
आनन्द के चश्मे के नाके[१६] पर यह जिस्म[१७] इक बंद था
वह बह गया बन्दे[१८]-खुदी, दरया बहा है वाह ! वाह !!
सब फर्ज़ कर्ज़ और गर्ज़ के इमराज़[१९] यकदम उड़ गये
हल फिर गया जेरो[२०]-जबर पर और सुहागा वाह ! वाह !!
दुन्या के दल बादल उठे थे, नज़रे-ग़लत अन्दाज़[२१] से
सो इक निगाह से चुक गया सारा सियापा वाह ! वाह !!
तन नूर से भरपूर हो, मामूर[२२] हो, मसरूर[२३] हो
यह उड़ गया, जाता रहा, पुर नूर हो, काफूर हो,

---

१ गुत्थी सुलझी, मुश्किल हल होगई. २ ताला और गांठ. ३ द्वैतरूपी स्वप्न ४ नेत्र ५ पति, स्वामिन् ६ आधार, आश्रय ७ पूजनीय ८ प्रकाश ९ ज्वाला. १० अग्नि का पर्वत ११ रमणता प्रत्येक वस्तु का आनन्द १२ प्रत्येक पदार्थ १३ प्राप्त हो १४ काग १५ मछली १६ पुल, द्वार १७ शरीर. १८ अहंकार रूपी बन्धन १९ रोग २० ऊँच नीच, बड़े छोटे. २१ नज़र हटते ही २२ पूर्ण २३ खुश, मस्त

अब शब कहाँ? और दिन कहां ? फ़र्दा[1] है नै इमरोज़[2] है
है इक सरूरे-लातग़य्युर[3], ऐश है नै[4] सोज़[5] है
उठना कहां ? सोना कहां ? आना कहां ? जाना कहां ?
मुझ बहरे[6]-नूरो-सरूर में, खोना कहां ? पाना कहां ?
मैं नूर हूं, मैं नूर हूं, मैं नूर का भी नूर हूं
तारों में हूं, सूर्य में हूं नज़दीक से नज़दीक हूं और दूर से भी दूर हूं
मैं मादनो[7]-मख़ज़न हूं, मैं मम्बा[8] हूं चश्मये-नूर का
आरामगह[9] आरामदेह[10] हूं, रौशनी का नूर का
मेरी तजल्ली[11] है यह नूरे[12]-अक़ल-ओ-नूरे-अनसरी[13]
मुझ से दरख़्शाँ[14] हैं यह कुल अजरामे[15]-चर्खे[16]-चम्बरी
हाँ! ऐ मुबारक रौशनी! ऐ नूरे[17]-जाँ! ऐ प्यारी "मैं" !!
तू, राम और मैं एक हैं, हाँ एक हैं, हाँ एक हैं
हर चश्म[18], हर शै[19], हर बशर[20], हर फ़हम[21] हर मफ़हूम[22] में
नाज़र नज़र मन्ज़ूर[23] मैं, आलिम[24] हूं मैं, मालूम मैं
हर आँख मेरी आँख है, हर एक दिल है दिल मेरा
हाँ! बुलबुलो-गुल मिहरो[25]-माह की आँख में है तिल मेरा
वहशत[26] भरे आहू[27] का दिल, शेरे-बबर का क़हर[28] का
दिल आशिक़े बेदिल का प्यारे, यार का और दैहर[29] का

---

१ कल २ आज ३ विकार रहित आनन्द ४ नहीं. ५ जलन, दुःख. ६ आनन्द और प्रकाश के समुद्र में ७ खान और भण्डार ८ निकास ९ आराम का स्थान. १० आराम देने वाला. ११ तेज १२ बुद्धि का तेज १३ पंच भौतिक तेज. १४ चमकीले १५ तारा गण १६ गोल आकाश या आकाश मण्डल के. १७ प्राण के तेज १८ चक्षु. १९ वस्तु. २० जीव जन्तु. २१ समझ २२ समझित २३ द्रष्टा दर्शन दृष्टि. २४ ज्ञानी. २५ सूर्य चाँद २६ घबराहट भरे. २७ मृग २८ आफ़त का २९ समय का

अमृत भरे स्वामी का दिल, और मार[१] पुर अज़ जहर का
यह सब तजल्ली[२] है मेरी, या लहर मेरे बहर का
इक बुलबुला है मुझ में सब, ईजादे[३]-नौ, ईजादे[४]-नौ
है इक भँवर मुझ में यह मर्गे[५]-नागहाँ[६] और ज़ादे-नौ
सोये पड़े बच्चे को वह आली उठाकर चूमना
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[७] का वह वसूरना
वह दो बजे शब का शफ़ा खाना में तिश्नह मरीज़ को
उठ कर पिलाना सोडावाटर काट अपनी नींद का
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गङ्ग में
छींटे उड़ाना, गुल मचाना, गाते जाना रङ्ग में
वह माँ से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना
वालिद से पिटना और चल्लाते हुए आँखों को मलना
कॉलेज के साइंस रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना
बारूद और गोलों से सफ़दर[९] सफ़ सिपाहें ताड़ना
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ यह हम ही हैं
गर्मी का मौसम, सुबह दम, साअतें[१०] हैं दो या तीन का
खिड़की में दीवा देखते हो टमटमाता तीन का ?
दीवे पे परवाने हैं गिरते बेसुधी में बार बार
बेचारह लड़का पढ़ रहा है इल्म[११] पर जाँ को निसार
बेचारे तालिबे[१२]-इल्म पे चहरे की ज़र्दी है मेरी
बे नीन्द लम्बे साँस और आहों की सर्दी है मेरी
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ यह हम ही हैं।

---

१ जहरीले साँप का २ प्रकाश ३ नई ईजाद ४ नई उन्नति ५ भयानक मृत्यु ६ नई उत्पत्ति ७ बच्चा ८ प्याला ९ पंक्ति फाड़ १० घड़ी ११ विद्या १२ विद्यार्थी

है लहलहाता खेत, पुर्वा चल रही है ठुम ठुमक
गाढ़े की धोती, लाल चीरा चौधरी की लट लटक
जोशे ज्वानी ! मस्त, अल्गोज़ा बजाना, उछलना
मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना, पिछड़ना और कुचलना
छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार
वह टाँग पर धर टाँग पड़ना, बोझ ऊपर हो सवार
शिद्दत[1] की गर्मी, चील अंडे के समय, सरे-दोपहर
जा खेत में हल का चलाना अर्क़[2] में हो तर बतर
और सर पै लोटा छाछ का, कुछ रोटियाँ, कुछ साग धर
भत्ता उठा कुत्ते का ले, औरत[3] का आना ऐंठ कर
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
दुलहन का दिल से पास आना, ऊपर से रुकना, झिजक जाना
शर्मो-हया का इश्क़ के चुङ्गल में रह रह के आना
वह माहे[4]-गुलरू के गले में डाल बाहें प्यार से
ठण्डे चश्मों के किनारे, बोसह[5] बाज़ी यार से
हाँ ! और वह चुपके से छिप कर, आड़ में अशजार[6] के
वे दाम खुफिया पुलिस बनना, राम की सरकार के
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
वह इस तरफ़ खा खा के मरना, उस तरफ़ फ़ाक़ों से गुम
वह बिलबलाना जेल में, जङ्गल में फिरना सुम बकुम[7]
और वह गदेले कुर्सियाँ, तकिये बिछौने, बग्गियाँ
सब मादरे-सुसती बवासीरी-ज़ुकाम और हिचकियाँ

---

१ अत्यन्त गर्मी २ पसीने से मुराद है ३ स्त्री. ४ चन्द्र मुख प्रिया ५ चुम्बन का लेन देन ६ वृक्ष ७ बोले (बहरे) और गूंगे.

यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
यह रेल में या तारघर में, महल कुवारिनटीन में
रूस, अफ़्रीका, ईरान् में, जापान या चीन में
सिसकना, दुःखड़े सुनाना, ख़ून् बहाना ज़ार ज़ार
वह खिलखिलाना कहकहों और चहचहों में बार बार
वह चर्क़ पर बारश न लाना, हिन्द में या सिन्ध में
फिर राम को गाली सुनाना, तंग होकर हिन्द में
वह धूप से सब को मिसाले[1]-मुर्ग़ मिरचाँ भूनना
बादल की साड़ी को किनारी चान्दनी से गून्दना
(चुप[2] हो के खानी गालियाँ, माले से उस शिशुपाल से)
खुश हो सलीबो-दार[3] पर, चढ़ना मुबारक हाल से
यह कुल तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
मोहताज[4] के, बीमार के, पापी के और नादार[5] के
हमलब[6]-ओ-हमबग़ल हूं, हमराज़[7] हूं बेयार का
सुनसान शब[8] दर्यां किनारे हैं खड़े डटकर तो हम
और क़ैदे-तख़तो-ताज में गर हैं पड़े जकड़े तो हम
सस्ते से सस्ते हैं तो हम, महंगे से महंगे हैं तो हम
ताज़ा से ताज़ा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम
वाहद[9] हूं, मुझ को मेरा ही सिजदा[10] सलाम है
मेरी नमस्ते मुझ को है और राम राम है
जानते हो? आशक़[11]-ओ-माशूक़[12], जब होते हैं एक

---

१ भुने हुये पक्षी के सदृश २ इस भारी पंक्ति में कृष्ण भगवान् सम्मिलित है ३ सूली. ४ भूखा ५ निर्धन ६ विलकुल समीप ७ भेद जानने वाला ८ रात्रि ९ एक अकेला १० झुकना प्रणाम ११ प्रेमी और प्रिया १२

बे शुभा[1] मेरी ही छाती पर वहम[2] सोते हैं नेक
पुण्य में और पाप में, हर चाल साँस और माँस में
दूर कर आँखों से परदा, देख जल्वा[3] घास में
कुछ सुना तुम ने ? अजब चालें मेरी चालाकियाँ
बे हजाबाना[4] करशमे, लाधड़क बे बाकियाँ[5]
हाँ, करोड़ों पेंच, जुर्म, अफ़आले[6]-नेक, अमाले-ज़िश्त[7]
मुझ में मुतसव्वर[8] हैं दोज़ख, मै-कदह[9], मसजिद, बहिश्त
मार देना, झूठ बकना, चोर-यारी और सितम्[10]
कुल जहाँ के पेंच रिन्दाना[11] पड़े करते हैं हम
ऐ ज़मीन् के बादशाहो ! पण्डितो, परहेज़गारो[12] !
ऐ पुलिस ! ऐ मुदई, हाकिम, वकील, ऐ मेरे यारो !
लो बता देते हैं तुम को राज़े-ख़ुफ़िया[13] आज हम
अपने मुंह से आप ही इन्कार ख़ुद करते हैं हम
"ख़्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूं मैं
सब की मलकीयत को, मक़बूज़ात[14] को और शान को"
यह सितम, यारो ! कि हरगिज़ भी तो सह सकता नहीं
ग़ैरे-ख़ुद[15] के ज़िक्र को, या नाम को, कि निशान को
ख़ुदकुशी[16] करते हैं सब क़ानून, तनक़ीह-ओ-जरह
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफ़ान को
कुल जहाँ बस एक ख़र्राटा है मस्ती में मेरा
ऐ ग़ज़ब[17] ! सच कर दिखाता हूं मैं इस बोहतान[18] को

---

१ निःसन्देह. २ एकत्र. ३ दर्शन. ४ पर्दा रहित करामात. ५ निर्भयता, निडरपना. ६ पुण्य कर्म. ७ पाप कर्म ८ कल्पित. ९ शराब खाना १० आश्चर्य, जुल्म. ११ निर्भय या निडर होकर. १२ व्रत और तप करने वाले १३ गुप्त, भेद. १४ अधिकार, भोग. १५ अपने से अतिरिक्त या भिन्न. १६ आत्मघात. १७ आश्चर्य. १८ झूठ.

क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो, मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई।
रिन्दमस्तों का शहनशाह हूँ मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई॥
सीना-ज़ोरी[1] और चोरी, छेड़-छाड़, अठखेलियाँ।
चुटकियाँ सीना में भरता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
खा के माखन, दिल चुराकर, यह गया, मैं वह गया।
मार कर मैं हाथ हाथों पर यह जाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूँ मैं।
बांसरी में गा बुलाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
आइयेगा, लो उड़ा दीजियेगा मेरे जिस्म[2] को।
नाम मिट जाने से मिलता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
दस्तो-पा[3], गोशो[4]-दीदा, मिस्ले-दस्ताना[5] उतार।
हुलिया सूरत को मिटाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
साँप जैसे केंचली को, फेंक नामो-नङ्ग[6] को।
बे सिलह[7] के वश में आता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥
नठ गया, वह नठ गया! नट कर भला जाय कहाँ।
मुंह तो फेरो! यह खड़ा हूं, लो! मुझे पकड़ो कोई॥
आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जाओगे।
आप को जकड़ो! अगर चाहो मुझे पकड़ो कोई॥
आतशे-सोज़ा[8] हूं, मुझ में पुण्य क्या और पाप क्या।
कौन पकड़ेगा मुझे? और हाँ! मेरा पकड़ेगा क्या?॥

---

१ ज़बर दस्ती. २ शरीर ३ हाथ पांव ४ कान और आँख. ५ दस्ताना की तरह ६ लज्जा और निर्लज्जता ७ हथियार रहित ८ सब कुछ जला देने वाली अग्नि.

[२७]

ज्ञानी की ललकार

(अर्थात् दुन्या की छत पर से ललकार)

१० राग आनन्द भैरवी, ताल धुमाली

बादशाह दुन्या के हैं मोहरें मेरी शतरंज के।
दिल्लगी की चाल हैं सब रंग सुलह-ओ-जंग के॥
रक्से-शादी[1] से मेरे जब कॉप उठती है ज़मीन्।
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता[2] हूं वहीं॥
खुश खड़ा दुन्या की छत पर हूं तमाशा देखता।
गह[3] बगह देता लगा हूं, वैहशियों[4] की सी सदा[5]॥
ऐ मुकाली[6] रेल गाड़ी! उड़ गयी! ऐ सिर[7] जली!
ऐ खरे-दज्जाल[8]! नखरा बाज़ीयों में जूं[9] परी॥
मोले[10] भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में।
ले डकारें[1] लोटती है रेत में या खेत में॥
छोड़ धोका बाज़ीयाँ और साफ कह, सच मुच बता।
मंज़ले-मक़सूद[11] तक कोई हुआ तुझ से रसा[12]?॥
पेट में तेरे पड़ा जो बह गया! लो बह गया!।
लैक[13] हाय! मंज़ले मक़सूद पीछे रह गया॥

---

१ मस्तता के नृत्य से. २ खिल कर हंसना ३ कभी कभी. ४ वनचरों ५ आवाज़, घोषणा ६ काले मुखवाली ७ जले हुए सिरवाली अर्थात् सिर से धुवाँ निकालने वाली ८ एक गधा को कहते हैं जो हज़रत ईसा के मृत्यु के तले रहता था और जिस का पेट अत्यन्त लम्बा था और बाक़ी अंग बहुत छोटे, सो उस गधे से रेल को दर्शाया है ९ परी के समान १० मोटी अथवा चौख से अभिप्राय है. ११ अन्तिम लक्ष्य स्थान, या असली घर. १२ पहुंचा १३ किन्तु

ऐ जवान् बाबू ! यह गर्मी क्यों ? ज़रा थमकर चलो ।
बैग ले कर हाथ में सरपट न यूँ जल्दी करो ॥
दौड़ते क्या हो बराते-नूर[1] के मिलने को तुम ? ।
यह न बाहर है, ज़रा पीछे हटो, बातन[2] को तुम ॥
क्यों हो मुजरम[3] ! पेशकारों की खुशामद में पड़े ? ।
यह कचेहरी वह नहीं तुम को रिहाई[4] दे सके ॥
पैहन कर पोशाक गैहने बुर्क़ा ओढ़े नाज़[5] से ।
चोरी चोरी गुलबदन[6] मिलने चली है यार से ॥
ऐ मुहब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी ख़ूबरू[7] ! ।
चौंक मत, घबरा नहीं, सुन कर मेरी ललकार[8] को ॥
निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़ कर दौड़ में ।
दिल हरम[9] है यार का, साकन हो, गिर नै[10] दौड़ में ॥
हो खड़ी जा ! बुर्क़ा जामा और बदन तक दे उतार ।
ये हवा हो एक दम में, ले अभी मिलता है यार ॥
दौड़ क़ासद[11] ! पर लगा कर, उड़ मेरी आँ ! पेच खाकर ।
हर दिलो[12]-हर जाँ में जाकर, बैठ जम कर घर बना कर ॥
"मैं खुदा हूँ", "मैं खुदा हूँ" राज़[13] जाँ में फूंक दे ।
हर रगो[14]-रेशे में घुस कर मस्ती[15]-ओ-मुल झोंक दे ॥
ग़ैरदानी[16], ग़ैरदानी[17] और गुलामी बंदगी (को) ।
मार गोले दे धड़ा धड़, एक ही दम फूक दे ॥

---

१ तेज के पुञ्ज या प्रकाश वाला. २ भीतर. ३ अपराधि ४ छुटकारा, मुक्ति. ५ नखरे से ६ पुष्प के बदन वाली, (अति कोमल यहाँ भूमि से अभिप्राय है. ७ अति सुन्दर. ८ आवाज़, ध्वनि. ९ मन्दिर. १० नहीं. ११ स्थित १२ संदेसा लेजाने वाला. १३ प्रत्येक चित्त और भाव में. १४ भेद, गुह्य. १५ प्रत्येक नस और पट्ठे में. १६ मस्ती (चिदानन्द) और शराब (पानामृत). १७ द्वैत दृष्टि. १८ द्वैतभावना.

रौशनी पर कर स्वारी, और से कर नूर-वारी[1] ।
हर दिलो-दीदा[2] में जा झंडा[3] अलफ का ठोंक दे ॥

[२८]

राम का गङ्गा पूजन

गंगा ! तैथों[4] सद[5] बलहारे[6] जाऊँ (टेक)
हाड चाम सब वार के फैंकूं ।
यही फूल पताशे लाऊँ ॥ १ ॥ गंगा०
मन तेरे चन्दरन को दे दूं ।
बुद्धि धारा में बहाऊँ ॥ २ ॥ गंगा०
चित्त तेरी मच्छली चब जावें ।
अहङ्क[7] गिर[8]-गुहा में दबाऊँ ॥ ३ ॥ गंगा०
पाप पुण्य सभी सुलगा कर ।
यह तेरी जोत जगाऊँ ॥ ४ ॥ गंगा०
तुझ में पडूं तो तू बन जाऊँ ।
ऐसी डुबकी लगाऊँ ॥ ५ ॥ गंगा०
पएडे जल थल पवन दशों[9] दिक् ।
अपने रूप बनाऊँ ॥ ६ ॥ गंगा०
रमण करूँ सत[10] धारा मांहि ।
नहीं तो नाम न राम धराऊँ ॥ ७ ॥ गंगा०

---

१ नेत्र से आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा २ प्रत्येक चित्त और चक्षु. ३ व मुराद अद्वैत के झंडा से है, और रसाली अलफ (मासिक पत्र) को ब्रह्मलीन स्वा राम ने गृहस्थाश्रम के समय केवल अद्वैत प्रतिपादन करने निमित्त निकाला था उ भी अभिप्राय है. ४ तुझ पर. ५ सौ बार ६ सदके जाऊं, कुर्बान जाऊं ७ अहंका ८ पर्वत की गुफा. ९ दशों ओर अर्थात् सर्व ओर. १० सप्त धारा या सप्त धरोव

[२६]

राम की गंगा-स्तुति

नदीयों दी सरदार ! गङ्गा रानी ! ।
छोटे जल दे देन बहार, गङ्गा रानी ! ॥
सानूं[1] रख जिन्दडी दे नाल, गङ्गा रानी ! ।
कदे[2] पार, कदे पार, गङ्गा रानी ! ॥
सौ सौ गोते गिन गिन मार, गङ्गा रानी ! ।
तेरीयां लैहराँ राम असवार, गङ्गा रानी ! ॥

[३०]

कश्मीर में अमर नाथ की यात्रा

(१) पहाड़ों की सैर

[राग पहाड़ी ताल चलन्त

पहाड़ों का यूं लम्बी[3] तानें यह सोना ।
यह गुञ्जाँ[4] दरख्तों का दोशाला होना ॥
यह दामन में सब्जा का मखमल बिछौना ।
नदी का बिछौने की झालर परोना ॥
यह राहत-मुजस्सम, यह आराम मैं हूं ।
यहाँ कोहो-दरया, यहाँ मैं ही मैं हूं ॥ १ ॥

---

१ हमें २ भव जन ३ लम्बी ४ हिलदार सीना ५ पत्ते ६ यथाक्रम घोड़े हुए सर्वोत्त मरगज ७ पर्वत की हलटी, किनारा पर्वत की तलेटी का मखमल मैदान ८ शान्तमूर्ति या शान्तस्वरूप ९ पर्वत और दरया

(२) पर्वत पर बादल और वर्षा

यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना।
वह दम भर में अब्रों[1] से पर्वत का घिरना॥
गरजना, चमकना, कड़कना, निखरना[2]।
छमाछम, छमाछम, यह बूंदों का गिरना॥
अरूसे-फ़लक[3] का वह हँसना, यह रोना।
मेरे ही लिये है फ़क़त[4] जान खोना॥ २॥

(३) कोसों तक कुदरती गुलज़ार का चले जाना, रंगा रंग के फूल हर चार सू[5] शिगुफ़्ता[6]

यह वादी[7] का रंगीं[8] गुलों[9] से लहकना।
फ़ज़ा[10] का वह बू से सरापा[11] महकना॥
वह बुलबुल सा[12] ख़ंदाँ[13]-लबों का चहकना।
वह आवाज़े-नै[14] का वहर[15]-सू लपकना॥
गुलों की यह कसरत[16], अरम[17] रूबू[18] है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है॥ ३॥

(४) एक और दिलकश मुकाम

जो जू[19] और चशमा है, नग़मा[20] सरा है।
किस अन्दाज़[21] से आब[22] बल खा रहा है॥

---

१ बादल. २ उज्जल होना, प्रकाशमान् दीप्तिमान्, स्वच्छ या निर्मल होना. ३ आकाश रूपी दुल्हन, मुराद इन्द्र से है ४ केवल. ५ चारों ओर. ६ खिले हुए. ७ घाटी. ८ भाँति २ के. ९ पुष्पों १० खुला मैदान ११ सिर से पाओं तक अर्थात् एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुगंधि देना १२ सदृश, समान १३ हँसते हुए, खिले हुए. १४ बांसरी की आवाज़ १५ सर्व ओर. १६ अधिकता १७ स्वर्ग का बाग़. १८ सामने. १९ नेहर. २० [illegible] २१ ढङ्ग. २२ जल.

यह तख्तों पै तख्ते हैं, रेशम बिछा है।
सुहाना[1] समा, मन लुभाना[2] समा है॥
जिधर देखता हूँ, जहाँ देखता हूँ।
मैं अपनी ही ताब[3] और शाँ[4] देखता हूँ॥ ३॥

(५) झरनों की बहार

नहीं चादरें, नाचती सीम तन[5] हैं।
यह आवाज़[6] पाज़ेब[7] हैं नाराजन[8] है॥
फुहारों के दाने, ज़मुर्रद-फ़िगन[9] हैं।
सफ़ाई आहा! रूये मह पुर[10] शिकन हैं॥
सबा[11] हूँ मैं, गुल चूमता, बोसा लेता।
मैं शमशाद[12] हूँ, झूम कर दाद[13] देता॥५॥

(६) कुद्रती महफ़ल

मेरे सामने एक मैहफ़ल सजी है।
हैं सब सीम[14]-सर पीर,[15] पुरसब्ज़[16] जी[17] हैं॥

---

१ दिल पसन्द २ मन को मोह लेने वाला ३ चमक दमक, प्रकाश, तेज ४ दबदबा मान शान शौकत ५ चाँद के बदन वाली (अर्थात् यह जल की धारा नहीं बल्कि सफ़ेद चाँदी के शरीर वाली चादरें हैं जो नाच कर रही हैं) ६ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है ७ आवाज़ दे रहे या शोर कर रही हैं ८ एक प्रकार का मोती है, मुराद यह है कि फुहारें को अपनी बूँदें बाहर फेंक रही हैं यह मानों अति सुंदर मोती बाहर फ़ेंक रही हैं ९ चन्द्र मुख १० बल डाले हुये है (अर्थात् चन्द्र भी इस सफ़ाई से ईर्षा या लज्जा कर रहा है) ११ प्रातः काल की आनन्द दायक वायु १२ सरु वृक्ष को कहते हैं १३ शाबाश करता उत्तर देता १४ चाँदी के सिर वाले अर्थात् सफ़ेद बाल या सिर वाले, अभिप्राय बर्फ़ के पर्वतों से है १५ वृद्ध १६ हरा भरा, प्रसन्न १७ चित्त

शजर[1] क्या हैं, मीना[2] पै मीना धरी है।
न झरनों का झरना है, कुलकुल[3] लगी है॥
लुंढाये यह शीशे कि बैह निकलीं नैहरें।
है मस्ती[4]-मुजस्सम यह, या अपनी लैहरें॥६॥

(७) श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना

रवां[5] आबे[6]-दरया है, कशती दवान्[7] है।
सबा[8] नुज़हत[9]-अग्गीं, सुबहदम[10]-य-ज़ान्[11] है॥
यह लैहरों पै सूरज का जल्वा[12] अयां[13] है।
बलन्दी पै बरफ इक तजल्ली[14]-फशां है॥
ज़हूर[15] अपने ही नूर[16] का तूर[17] पर है।
पदीद[18] अपनी ही दीद[19] कुल[20] बैहरो[21]-बर है॥७॥

(८) झील डल में इर्द गिर्द के पर्वतों का प्रतिबिम्ब पड़ना, वायु से जल का हिलना, और इसी कारण से वायु के झकोरों से बड़े भारी पर्वतों का हिलते दिखाई देना

डलकता है डल[22], दीदा[23]-ए-मह-लका सा।
धड़कता है दिल आयीना[24] पुर सफा का॥

---

१ वृक्ष. २ एक प्रकार का हरे (सब्ज़) रंग का पत्थर ३ सुराही या बोतल से जल निकलते समय जो शब्द होता है ४ निजानन्द स्वरूप. ५ चल रहा है ६ दरया का जल. ७ भाग रही अर्थात बैह रही है ८ प्रातः काल की पवन. ९ तरो ताज़गी से भरी हुई शुद्ध पवित्र वायु १० प्रातः काल ११ यौवनदे रही है, अर्थात प्रातः काल की वायु तरोताज़गी से भरी हुई फरफर चल रही है. १२ प्रकाश, तेज. १३ प्रकट, भासमान १४ चमक मार रही है १५ प्रकाश, दृश्य. १६ तेज १७ पर्वत से मुराद है १८ दृष्ट, ज़ाहर. १९ दृष्टि २० समस्त २१ पृथिवि और समुद्र या जल थल. २२ सरोवर का नाम. २३ चन्द्र मुख प्रिया के नेत्र समान २४ शुद्ध साफ शीशे की तरह.

(११) अमर नाथ का अति विशाल सुदार्क हाल[1] जिसे लोग गुफा कहते हैं

बरफ़ जिस में सुस्ती है, जड़ता है, ला[2]-शै।
अमर-लिंग इस्तादा[3] चेतन की जा[4] है ॥
मिले यार, हुआ वस्ल[5], सब फ़ासला तै[6]।
यही रूप दायम[7] अमर-नाथ का है ॥
यह आये उपासक, तअय्युन[8] मिटा सब।
रहा राम[9] ही राम "मैं" तूं मिटा जब ॥

[३१]

* निवास स्थान की रात्रि

(अर्थात् उत्तरा खंड में गङ्गातट पर एकान्त निवास स्थान की प्रथम रात्रि)

रात का वक़्त[10] है बियाबाँ[11] है।
ख़ुश-वज़ा[12] पर्वतों में मैदाँ है ॥ १ ॥

---

१ बड़ा खुला कमरा २ कुच्छ चीज़ नहीं ३ खड़ा हुआ. ४ स्थान पर है ५ मिलाप, मेल, अभेदता. ६ जब अन्तर, फ़र्क़ दूर हुआ, मिट गया. ७ नित्य, सर्वदा रहने वाला ८ भेद भाव, फ़र्क़, अन्तर, क़ैद, परिच्छिन्नता. ९ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है. १० समय. ११ मैदान. १२ उत्तम बनावट का ढंग, तरीका.

* स्वामी राम जब अपने कुटुम्ब केदारनाथ उत्तराखण्ड में पहुँचे, वहाँ रियासत टिहरी की राजधानी के समीप गङ्गातट पर एक सुन्दर एकान्त स्थान (सेठ मुरली धर का बागीचा) पाया, जिसे राम ने एकांत निवासार्थ चुना, उस स्थान पर [illegible] रात्रि के समय की शोभा राम वर्णन करते हैं।

आस्माँ[1] का बतादें क्या हम हाल ।
मोतियों से भरा हुआ है थाल ॥ २ ॥
चाँद है मोतियों में लाल धरा ।
अब्र[2] है थाल पर रूमाल पड़ा ॥ ३ ॥
सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल ।
रक्स[3] करती है नेचरे[4]-पुरहाल ॥ ४ ॥
बाद[5] को क्या मज़े की सूझी है ।
राम के दिल की बात बूझी है ॥ ५ ॥
पास जो बैह रही है गंगा जी ।
अम्बरे[6] उस के लद लदाने दी ॥ ६ ॥
ला रही है लपक कर राम के पास ।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा-बास[7] ? ॥ ७ ॥
कसरे-खिदमत[8] से बाद है खुरसंद[9] ।
जा मिली बादलों से हो के बलन्द ॥ ८ ॥
अब तो अठखेलियां ही करती है ।
दामने अबर[10] को लो उलटती है ॥ ९ ॥
लो उड़ाया वह पर्दा औ,रूमाल ।
आस्माँ दिखाया है माला माल ॥ १० ॥
शाद[11] नेचर[12] है जगमगाती है ।
आँख हर चार सू[13] फिराती है ॥ ११ ॥
क्या कहूं चाँदनी में गंगा है ।
दूध होंरों के रंग रंगा है ॥ १२ ॥

---

१ आकाश २ बादल ३ नाचती है ४ खुशी का पुंज स्वरूप प्रकृति ५ वायु ६ उसकी गन्ध, खुशी ७ गङ्गा उसकी सुगन्ध ८ सेवा के काम के ९ प्रसन्न, खुश. १० बादल का पल्ला, किनारा, सिरा ११ खुश, प्रसन्न. १२ प्रकृति. १३ तरफ.

वाह ! जंगल में आज है मंगल[1] ।
सैर कर इस तरफ़ की चल ! चल ! चल ! ॥ १२ ॥

[३२]

निवास स्थान की बहार (ऋतु इत्यादि) का वर्णन

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है (टेक)

(१) गंगा का है किनार[2], अजब सब्ज़ा-ज़ार है ।
बादल की है बहार हवा खुशगवार[3] है ॥
क्या खुशनमा[4] पहाड़ पै वह चशमा[5]-सार है ।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुत्फ़[6]-दार है ॥ आ० १

(२) बाहर निगाह[7] कीजिये तो गुलज़ार है खिला ।
अंदर सरूर[8] की तो भला हद कहाँ दिला[9] ! ॥
कालिज क़दीम का यह सरे-मू[10] नहीं हिला ।
पढ़ाता मारफ़त[11] का सबक़ मेरा यार है ॥ आ० २

(३) वक़्ते-सुबाहे[12]-ईद तमाशा त्यार है ।
गलगूना[13] मुंह पै मल के पड़ा गुलऽज़ार[14] है॥
शाहे-फलक[15] से या जो हुई आँख चार[16] हैं ।
मारे शरम के चेहरा बना सुरख़[17]-नार है ॥ आ० ३

---

१ आनंद २ तट, किनारा ३ मनोहर, आनंद दायक. ४ रमणीय ५ धारा बहती है ६ आनंद दायक. ७ दृष्टि ८ आनंद. ९ ऐ दिल ! १० बाल बीका नहीं हुआ (अर्थात पढ़ाना बंद नहीं हुआ). ११ आत्मज्ञान १२ आनंद की प्रातः काल का समय. १३ उबटना, (उगाल). १४ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला प्यारा. १५ सूर्य. १६ परस्पर दर्शन, परस्पर मेल. १७ आग की तरह लाल.

(४) क़तरे हैं ओस के कि दुर्रों[1] की क़तार है।
किरणों की उन में, बल[2] ये, नज़ाकत[3] यह तार है॥
मुर्ग़ाने[4]-ख़ुशनवां, तुम्हें काहे की आर[5] है।
गाओ बजाओ, रात[6] का मिटा दिल से बार[7] है॥ आ० ४

(५) माशूक़[8] क़द दरख़्तों पै बेलों का हार है।
नै[9] नै ग़लत है, ज़ुल्फ़ का पेचाँ[10] यह मार[11] है॥
वाह वा! सजे सजाये हैं, कैसा श्रृंगार है।
अश्जार[12] में चमकता है, ख़ुश आबशार[13] है॥ आ० ५

(६) अश्जार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त यार हैं।
हर रंग के गुलों से चमन लाला[14]-ज़ार है॥
भँवरे जो गूँजते हैं, पड़े ज़र[15]निगार हैं।
आनन्द से भरी यह सदा[16] ओङ्कार है॥ आ० ६

(७) गंगा के रुख़-सफ़ा[17] से फिसलती न गर[18] नज़र[19]।
लहरों पे अक्स[20] मिहर[21] का क्यों बेक़रार[22] है॥
विष्णु के शिव के घर का असासा[23] यह बाग़ है।
यहाँ मौसमे[24]-ख़िज़ाँ में भी फ़स्ले[25]-बहार है॥ आ० ७

---

१ मोतियों २ बल्कि ३ कोमलता या मकड़ी का धागा ४ अच्छा गानेवाले पक्षी ५ शरम ६ रात्रि ७ बोझ (अर्थात रात गयी और प्रातः काल हुआ) ८ प्रेम मूर्ति प्यारों के क़द समान ९ नहीं, नहीं १० पेचदार ११ साँप १२ दरख़्तों १३ झरना १४ सुर्ख़ रंग १५ सुनेहरी रंग जिन के परों पर होते हैं १६ ध्वनि या आवाज़ १७ शुद्ध रूप १८ अगर १९ दृष्टि २० प्रतिबिम्ब, साया २१ सूर्य २२ चञ्चल, अस्थिर २३ सम्पत्ति, माल २४ श्रावण भादों की ऋतु जब पत्ते झड़ने लगते हैं २५ बसंत ऋतु

(८) साक़ी[1] यह मै[2] पिलाता है, कुश्तों[3] को हार है ।
वाह क्या मज़े का खाने को ग़म का शिकार है ॥
दिलदारे[4]-ख़ुश अदा तो सदा हमकनार[5] है ।
दर्शन शराबे-नाब[6], सख़ुन[7] दिलके पार है ॥ आ० ८

(९) मस्ती मुदाम[8]-कार, यही रोज़गार है ।
गुलबीन[9] निगाह[10] पड़ते ही फिर किस का ख़ार[11] है ॥
क्यों ग़म से तू निज़ार[12] है क्यों दिलफ़गार[13] है ?
जब राम कल्ब[14] में तेरे ख़ुद यारे-ग़ार[15] है ॥ आ० ९

[३३]

ज्ञानी का घर (वा महफल)

राग पहाड़ी ताल धुमाली

सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पै सुहानी[16] मख़मल है ।
दिन को सूरज की महफल है, शब[17] को तारों की सभा बाबा ॥
जब झूम के यहां घन[18] आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं ।
चश्मे तंबूर बजाते हैं, गाती है मल्हार[19] हवा बाबा ॥
याँ पंछी मिल कर गाते हैं, पीतम[20] के संदेस सुनाते हैं ।
याँ रूप अनूप दिखाते हैं, फल फूल और बर्गे[21]-ग्रा बाबा ॥

---

१ आनंद रूपी शराब पिलाने वाला, अर्थात् ब्रह्मवित गुरु २ प्रेममद ३ लड़ाई अर्थात् विषय वासना. ४ अच्छे नखरे टखरे करने वाला प्यारा ५ साथ ६ अंगूर की शराब ७ बात चीत. ८ निर्द्वन्द्व रहने वाली. ९ पुष्प (गुल) देखने वाली. १० दृष्टि ११ काँटा (अवगुण) १२ दुबला पतला, दुर्बल. १३ घायल चित्त, ज़ख़्मी दिल. १४ अन्तःकरण. १५ घर का यार अर्थात् सच्चा प्यारा या अन्तर्यामी. १६ दिल को भाने वाली. १७ रात १८ बादलों के समूह. १९ वह राग जिस के गाने से वर्षा हो २० प्यारे २१ बाग़ की पत्ती

धन शौकत आनी जानी है, यह दुन्या राम कहानी है।
यह आलम आलम फ़ानी है, बाक़ी है जाने-ख़ुदा[1] बाबा॥

[३८]

आनो का स्वप्ना।

राग खम्माच, ताल तीन

घर में घर कर

इक रात्रि एक देखा, मैं काम कर रहा था
बैलों को हाँकता था, और हल चला रहा था
मेहनत से सेर[2] हो कर, धन्धे से शेर आकर
यह जी[3] में अपने आई, "बस यार अब चलो घर"
घर के लिये थी मेहनत, घर के लिये थे बाहर
झट पट स्नान करके, पोशाक कर के तन पर
घर की तरफ़ मैं लपका, पा[4] शौक़ से उठा कर
तेज़ी से डग[5] बढ़ाकर, जल्दी में गड बड़ा कर
कि लो दौड़ धूप ही ने, यह मचा दिया तहव्वर[6]
वह ख़्वाब[7] झट उड़ाया, यह पाओं घर में आया
बेदार ख़ुद को पाया, ले यार घर में घर कर
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया
क्या ख़ूब था तमाशा, यह ख़्वाब कैसा आया
बन बन में राम ढूँढा मैं राम ख़ुद बन आया
मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया
अब सब घरों का हूं घर, मैं राम! घर में घर कर

१ सत्यस्वरूप परमात्मा देव २ तृप्त होकर, हट ३ चित्त ४ पाओं ५ कदम ६ हैरानी, हल चल, व्याकुलता आश्चर्य ७ स्वप्न ८ जाग्रत

[३५]

ध्यानी की सैर (१)

राग बिहाग, ताल तीन

मैं सैर करने निकला, ओढ़े अबर[1] की चादर।
पर्वत में चल रहा था, हवा के बाज़ुओं[2] पर ॥
मतवाला[3] झूमता था, हर तरफ घूमता था।
झरने नदी-ओ-नाले, पैहचान कर पुकारे ॥
नेचर[4] से गूंज उट्ठी, उस वेद की ध्वनी की।
"तत्त्वमसि[5], त्वमसि", तू ही है जान सब की ॥
यह नज़ारा[6] प्यारा प्यारा, तेरा ही है पसारा[7]।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है ॥
सीनों में फिर हमारे, है मुनअ़कस[8] तो तू है।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है ॥
यह सुन जो मैं ने झाँका, नीचे को सीधा बाँका।
हर आबशारों[9]-चशमा, गुलो-बर्ग[10] का क़शमा ॥
अलवाने[11]-नौ दर नौ, अशख़ासे[12]-जिन्स हर[13] नौ।
हर रंग में तो मैं था, हर संग[14] में तो मैं था ॥
माँ[15] मामता[16] की मारी, जाती है वारी न्यारी।
शौहर[17] को पाके दुलहन[18], सौंपे है अपना तन मन ॥

---

१ बादल. २ पंख, पर. ३ मस्त. ४ प्रकृति, क़ुदरत. ५ यह (ब्रह्म) तू है, तू है. ६ दृश्य. ७ फैलाओ, तेरी ही है यह सृष्टि. ८ प्रतिबिम्बित. ९ झरना. १० पुष्प और पत्ते का झाड़. ११ प्रकार २ में भाँति ३ के रंग १२ पुरुष. १३ हर तरह के. १४ पत्थर अथवा धातो. १५ माता. १६ गोद. १७ पति. १८ पत्नी.

मुद्दत का बिछुड़ा बच्चा, रोता है माँ को मिलता।
है इफ़्त्यार मेरा, दिलो-जाँ वह ही निकला ॥
वह गदाज़े[1]-फ़रहत आमेज़, वह दर्दे-दिल दिलावेज़[2]।
पुर सोज़[3] राहते-जां[4], लज्जत भरे वह अरमां[5] ॥
वह निकले जेबे[6]-दिल से, बदले-[7]रवां में बदले।
मेंह बरसा मोतीयों का, तूफ़ान आँसूओं का,
झिम ! झिम ! झिम !

[३६]

ज्ञानी की सैर (२)

राग कल्याण, ताल तीन.

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा[8], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥१॥
मरक़ाये[9]-हुस्नो-इश्क़ हू में, मुझी में राज़ो-न्याज़[10] सब हैं।
हूं अपनी सूरत पै आप शैदा[11], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥२॥
ज़माना आयीना[12] राम का है, हर एक सूरत से है वह पैदा।
जो चश्मे[13]-हक़बीं खुली तो देखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥३॥
वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है ?
हबाबों[14]-दर्या का है तमाशा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥४॥

---

१ दिल का आनन्दमय पिघलना. २ दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुःख जो दिल को भावे. ३ जलनाव. ४ ज़िन्दगी का आराम. ५ अफ़सोस, आर्ज़ू, पछतावा. ६ दिल की जेब अर्थात्, हृदय की कोठड़ी से. ७ यह सब (दर्द इत्यादि) से आनन्द का अनुभव होकर निकला अर्थात् यह सब दुःख दर्द आत्म साक्षात्कार में बदल गये. ८ दर्शन, ज़ाहिर, प्रकट ९ सुन्दरता और प्रेम की पुस्तक (क़सीदा). १० गुप्त भेद और इच्छायें ११ आशिक़, आसक्त १२ शीशा, १३ तत्वदृष्टि का नेत्र. १४ बुलबुला और दरया.

सबब बताऊं मैं वजद[1] का क्या ? है क्या जो दरपर्दा[2] देखता हूं ।
सदा[3] यह हर साज से है पैदा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥५॥
बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आयीना में खुद आयीना[4] गर ।
अजब तहय्युर[5] हुआ यह कैसा ? कि यार मुझ में, मैं यार में हूं ॥६॥
मुकाम पूछो तो लामकां[6] था, न राम ही था न मैं वहां था ।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥७॥
अललत्वातर[7] है पाक जल्वा, कि दिल बना तूरे बर्क[8]-सीना ।
तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥८॥
जहाज दरया में और दरया जहाज में भी तो देखिये आज ।
यह जिस्म[10] कश्ती[11] है राम दरया, है राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥९॥

[३७]

बाह्य वर्षा से अन्तर्गत आनन्द की वर्षा की तुलना

(यह कविता रियासत टिहरी के वासिष्ठाश्रम अर्थात् वकून वन में उन दिनों लिखी गई जब राम से अन्त में अपना नाम देना भी छूट गया)

राग बिहाग ताल दादरा

"चार तरफ से अबर[12] की वाह ! उठी थी क्या घटा ! ।
बिजली की जगमगाहटें, राद[13] रहा था कड़कड़ा ॥ १ ॥
बरसे था मेंह भी झूम झूम, छाओ उमड़[14] उमड़ पड़ा ।
झोंके हवा के ले गये होशे[15]-बदन को यह उड़ा ॥ २ ॥

---

१ मस्तानानन्द, विस्मय २ पर्दे के पीछे ३ ध्वनि, आवाज ४ शीशा बनानेवाला, सिकन्दर से अभिप्राय है ५ आश्चर्य ६ देश रहित ७ लगातार, निरन्तर ८ शुद्ध दर्शन ९ बिजली के पर्वत की छाती की तरह. १० शरीर ११ नाओ १२ बादल १३ बिजली की कड़क १४ मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े जोर से वर्षा हुई. १५ शरीर के होश

हर रगे-जाँ[1] में नूर था, नग़मा[2] था ज़ोर शोर का।
अब्र-करों से था सिवाय दिल में सरूर[3] बरसता ॥ ३ ॥
आबे-हयात[4] की झड़ी ज़ोर जो रोज़ो-शब[5] पड़ी।
फ़िक्रो[6]-ख्याल बैठ गये, टूटी दुई[7] की झोंपड़ी ॥ ४ ॥

[३८]

राम से मुबारकबादी

राग भैरवी ताल चलन्त

नज़र आया है हर सू[8] मह[9]-जमाल अपना मुबारक[10] हो।
"यह मैं हूं" इस खुशी में दिल का भर आना मुबारक हो ॥ १ ॥
वह उरयानी[11] रुखे-खुरशीद[12] की खुद पर्दा हायल[13] थी।
हुआ अब फ़ाश[14] पर्दा, सितर[15] उड़ जाना मुबारक हो ॥ २ ॥
यह जिस्मो[16]-इस्म का काँटा जो ये दय सा खटकता था।
खलिश[17] सब मिट गयी, काँटा निकल जाना मुबारक हो ॥ ३ ॥
तमसखर[18] से हुये थे क़ैद साढे तीन हाथों में।
चले[19] अब वुसते-फ़िक्रो-तखय्युल[20] से भी बढ़ जाना मुबारक हो ॥ ४ ॥
अजब तसखीरे[21]-आलमगीर लाई सल्तनते-आली[22]।
महो[23]-माही का फ़रमाँ[24] को बजा[25] लाना मुबारक हो ॥ ५ ॥

---

१ नाड़ी के सब नस में. २ आवाज़. ३ आनन्द ४ अमृत वर्षा ५ दिन रात की ज़ोर से पड़ी ६ चिन्ता और सोच. ७ द्वैत की झोंपड़ी जो दिल में स्थित थी सब बैठ गयी. ८ हर तरफ़. ९ चन्द्रमुख या चन्द्र जैसा सौन्दर्य १० मिबारक, खुशी. ११ नंगा पन, स्पष्ट प्रकट होना १२ सूर्य मुख अर्थात अपना प्रकाश स्वरूप आत्मा. १३ रुके हुए थी. १४ गुप्त, प्रकट. १५ पर्दा. १६ नाम और रूप. १७ खटका, झगड़ा, चोट. १८ ठट्ठे से, हँसी से १९ चिन्तु. २० फ़िकर और ख्याल अर्थात सोच विचार की सीमा या अन्दाज़ा. २१ समस्त संसार को जीतने वाली विजय. २२ भारी राज्य. २३ चन्द्र-सूर्य या लोक परलोक. २४ आज्ञा. २५ आदर करना.

न खदशा[1] हर्ज का मुतलक़[2], न अंदेशा-खलल[3] बाक़ी।
फुरेरे[4] का बलंदी पर यह लेहरान मुबारक हो ॥ ६ ॥
तअल्लक़[5] से बरी[6] होना हरूफ़े[7]-राम की मानन्द।
हर इक पैहलू[8] से नुक़्ता-ए-दाग़[9] मिट जाना मुबारक हो ॥ ७ ॥

[२६]

ज्ञानी का आशीर्वाद

बदले है कोई आन[10] में अब रंगे[11]-ज़माना (टेक)
आता है अमन[12] जाता है अब जंगे[13]-ज़माना ॥ १ ॥
ऐ जैहल[14]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[15]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे[16]-ज़माना ॥ २ ॥
ग़म दूर, मिटा रश्क[17], न ग़ुस्सा, न तमन्ना।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे-ज़माना ॥ ३ ॥
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिल शाद[18] है क्या खूब उड़ा तंगे[19]-ज़माना ॥ ४ ॥
"लो[20] काठ की हंडियाँ से सिभे भी तो कहां तक।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे-ज़माना ॥" ५ ॥

---

१ डर. २ बिलकुल, नितान्त ३ फ़साद बिगाड़ का फ़िक्र. ४ झंडा ५ सम्बन्ध या आसक्ति ६ आज़ाद, निरापत्त ७ राम के मरण (र, आ, म). ८ पहलू. ९ धब्बा १० बिन्दु का चिह्न ११ घड़ी. १२ समय का रंग ढंग १३ सुख, चैन १४ युद्ध का समय १५ अविद्या. १६ ईर्षा. १७ निर्लज्जता का समय १८ ईर्षा, द्वेष. १९ प्रसन्न चित्त २० समय की तंगी, मुसीबत २१ काठ की हंडियां को अग्नि पर रखने से क्या लाभ होगा, यदि कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का ग़म रूपी पत्थर रख कर उसे फूंक दो

पगड़ी, पाजामा, दुपट्टा, अंगरखा।
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था ॥ ५ ॥
दामनी तोड़ी व माला को घड़ा।
पर निगाहे[1]-हक़ में है वही तिला[2] ॥ ६ ॥
मोत्याबिन्द दिल की आँखों से हटा।
मर्ज़ो-सिहत[3], ऐन[4] राहते-राम[5] था ॥ ७ ॥

[४१]

राम का नाच

राग नट नारायण ताल दीपचंदी

नाचूं मैं नटराज रे ! नाचूं मैं महाराज ! (टेक)

सूरज नाचूं, तारे नाचूं, नाचूं पन महताब[6] रे ! ॥ १ ॥ नाचूं०
तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे ! ॥ २ ॥ नाचूं०
धादर[7] नाचूं, वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव रे ! ॥ ३ ॥ नाचूं०
ज़र्रह[9] नाचूं, समुद्र नाचूं, नाचूं मोघरा[10] काज रे ! ॥ ४ ॥ नाचूं०
मधुआ[11] लव बदमस्ती वाला, नाचूं पी पी आज रे ! ॥ ५ ॥ नाचूं०
घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पापा दाज रे ! ॥ ६ ॥ नाचूं०
राग गीत सब होवत हरदम, नाचूं पूरा साज रे ! ॥ ७ ॥ नाचूं०
राम ही नाचत, राम ही बाजत, नाचूं हा निर्लाज रे ! ॥ ८ ॥ नाचूं०

---

१ तत्वदृष्टि, आत्मदृष्टि २ स्वर्ण, सोना ३ रोग और निरोग ४ ठीक, निश्चय पूर्वक. ५ राम की शान्त दशा, आनन्दावस्था ६ चाँद. ७ बादल. ८ पहाड़, पेड़ी. ९ परमाणु,अणु. १० भारी ११ प्रेम रूपी मधु का प्याला.

त्याग

[४२]

मेरा मन लगा फकीरी में (टेक)

डंडा कूंडा लिया बगल में, चारों चक जागीरी में ॥मे० १
मंग तग के टुकड़ा खावे, चाल चले अमीरी में ॥ मे० २
जो सुख देखियो राम संगत में, नहीं है वज़ीरी में ॥मे० ३

[४३]

जङ्गल का जोगी (योगी)

(यह कविता १९०६ में टिहरी के व्यासिगनाथ के वन में उन दिनों लिखी जब राम से अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव भी छूट गया था)

हर हर ओम्, हर हर ओम् -टेक

जङ्गल में जोगी बसता है, गह[1] रोता है गह[1] हसता है।
दिल उसका कहीं न फसता है तन मन में चैन बरसता है ॥ १ ॥
खुश फिरता नंग मनगा है, नैनों में बहती गंगा है।
जो आजाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ॥ हर० २
गाता मौला[2] मतवाला[3] है, जब देखो भोला भाला है।
मन मनका उस की माला है, तन उस का एक शिवाला है ॥हर० ३
नहीं परवाह मरने जीने की, है याद न खाने पीने की।
कुछ दिन की सुद्धि न महीने की, है पवन कमाल पसीने की ॥हर०४

१ कभी २ मनमौजी/बेपरवा ३ मस्त

पास इस के पंछी[1] आते हैं, और दरया गीत सुनाते हैं।
बादल अशनान कराते हैं, वृक्ष[2] उस के रिश्ते नाते हैं॥ हर० ५
गुलनार[3] शफ़क़[4] यह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी।
जोगी की निगाह[5] हैरान् गहरी, को तकती रह रह कर है परी॥ हर० ६
यह चाँद चटकता गुल[6] जो खिला, इस मिहर[7] की जोत से फूल झड़ा।
फव्वारह फरहत[8] का उछला, फुहार[9] का जग पर नूर[10] पड़ा॥ हर० ७

[४४]

अल्वदा[11] मेरी रियाज़ी[12] ! अल्वदा।
अल्वदा ए प्यारी रावी[13] ! अल्वदा॥ १॥
अल्वदा ऐ अहले[14]-ख़ाना ! अल्वदा।
अल्वदा मासूमे-नादां[15] ! अल्वदा॥ २॥
अल्वदा ऐ दोस्तो[16]-दुश्मन ! अल्वदा।
अल्वदा ऐ शीतो-ओशन[17] ! अल्वदा॥ ३॥
अल्वदा ऐ क़ुतबो-तद्रीस[18] ! अल्वदा।
अल्वदा ऐ खुवसो-तक़दीस[19] ! अल्वदा॥ ४॥
अल्वदा ऐ दिल[20] ! खुदा ! ले अल्वदा।
अल्वदा राम ! अल्वदा[21], ऐ अल्वदा॥ ५॥

---

१ पक्षी. २ वृक्ष, दरख्त ३ अनार के रंग वाली ४ लाली जो आकाश में सूर्य के उदय अस्त समय होती है ५ दृष्टि ६ पुष्प ७ सूर्य ८ खुशी, आनन्द ९ फुहार, भाफ १० प्रकाश तेज ११ रुख़सत हो, तुझे नमस्कार हो १२ गणित विद्या १३ रावी दरया का नाम है जो लाहौर में बहता है १४ घर के लोग, १५ नादान बच्चे. १६ मित्र-शत्रु १७ सर्दी गर्मी. १८ पुस्तक और पाठशाला १९ लिखना, तुरा. २० ऐ दिल ! तुझ को भी रुख़सत हो, ऐ खुदा (ईश्वर) तुझ को भी रुख़सत (नमस्कार) हो. २१ ऐ रुख़सत के शब्द तुम को भी रुख़सत हो.

[४१]

त्याग का फल

[महाभारत के कुछ श्लोकों का भावार्थ]

राग बरवा ताल कुवाली, या राग बिहाग ताल चर्चरी

(यह कविता राम भगवान् ने सन् १९०६ में उन दिनों में बनाई जब भान से अपना नाम देना भी स्वयं छूट गया)

अपने मज़े की खातर गुल[1] छोड़ ही दीये जब।
रूये[2]-ज़मीं के गुलशन मेरे ही बन गये सब ॥ १ ॥
जितने जुबाँ[3] के रस थे कुल तर्क कर दीये जब।
बस जायक़े जहाँ[4] के मेरे ही बन गये सब ॥ २ ॥
खुद के लिये जो मुझ से दीदों[5] की दीद[6] छूटी।
खुद हुस्न[7] के तमाशे मेरे ही बन गये सब ॥ ३ ॥
अपने लिये जो छोड़ी ख़्वाहिश[8] हवाखोरी की।
बादे-सबा[9] के झोंके मेरे ही बन गये सब ॥ ४ ॥
निज[10] की गरज़ से छोड़ा सुनने की आर्ज़ू[11] को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब ॥ ५ ॥
जब देह ही के अपनी फिकरो[12]-ख़याल छूटे।
फिकरो-ख़याले रंगीं[13] मेरे ही बन गये सब ॥ ६ ॥
आहा! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो-ईस्म[14] पर ही ॥ ७ ॥

---

१ फूल २ पृथिवी भर के बाग ३ जिह्वा ४ संसार के ५ नेत्रों की ६ दृष्टि ७ सौन्दर्य ८ इच्छा ९ प्रातः वायु १० अपनी या स्वार्थ दृष्टि से ११ आशा १२ शोक चिन्ता, १३ आनन्द दायक या भांति २ के विचार, १४ नाम रूप

यह दस्तो[1]-पा हैं सब के, आँखें यह हैं तो सब की।
दुन्या के जिस्म[2] लेकिन मेरे ही बन गये सब ॥ ८ ॥

निजानन्द

[४६]

राग मांड ताल दादरा

आप में यार देख कर, आयीना[3] पुर सफा कि यूं।
मारे खुशी के क्या कहें, शशदर[4] सा रह गया कि यूं ॥ १ ॥
रो के जो इल्तमास[5] की, दिल से न भूलयो कभी।
पर्दा हटा दूई मिटा, उस ने भुला दिया कि यूं ॥ २ ॥
मैं ने कहा कि रंजो[6]-ग़म, मिटते हैं किस तरह कहो।
सीना[7] लगा के सीने से, माह[8] ने बता दीया कि यूं ॥ ३ ॥

---

[४६]

(१) जैसे साफ़ पानी में वस्तू पूरी तरह नज़र आती है, इस तरह, अपने भीतर अपना प्यारा (प्रियात्मा) देख कर मैं ऐसा चकित हो गया कि खुशी के मारे मुख से कुछ बोल न सका।

(२) जब मैंने उस प्यारे से रो कर प्रार्थना की "कि मुझे कभी न भूलना", तो उस ने द्वैत का पर्दा बीच से हटा दिया और मेरे से अभेद होकर अर्थात् मेरा ही स्वरूप बन कर झट मुझे भुला दिया (क्योंकि परस्पर एक दूसरे का स्मरण तो द्वैत में ही हो सकता है)।

(३) मैंने उस प्यारे से कहा कि "शोक-चिन्ता कैसे मिटते हैं ?" तो उस ने छाती से छाती मिला कर (अर्थात् पूर्ण अभेद हो कर) कहा कि ऐसे मिटते हैं, और तरह से नहीं।

---

१ हाथ, पाओं २ सब शरीर ३ साफ शीशा ४ आश्चर्य ५ प्रार्थना ६ दुःख पीड़ा ७ छाती ८ चन्द्र मुख प्यारे ने

गरमी हो इस बला कि हाय, भुनते हाँ जिस्मे मर्दो-ज़न[1]।
अपनी ही आबो[2]-ताब है, ख़ुद हि हूं देखता कि यूं ॥ ४ ॥
दुन्या-ओ-आक़बत[3] बना, धाह था जो जहल[4] ने किया।
तारों सा मिहरे[5]-राम ने, पल में उड़ा दिया कि यूं ॥ ५ ॥

[४७]

ग़ज़ल ताल दादरा

हस्ती-ओ[6]-इल्म हूं, मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा।
किब्रयाई[7]-ओ-ख़ुदाई है फ़क़त[8] काम मेरा ॥ १ ॥
चश्मे[9]-लेला हूं, दिले-मँजनूं[10], य दस्ते[11] फ़रहाद।
बोसा[12] देना हो तो दे ले, है लबे-जाम[13] मेरा ॥ २ ॥

---

(४) गरमी इतनी भारी (तीक्ष्ण) हो कि दाने की तरह पुरुष-स्त्री भुन रहे हों, परन्तु मुझे ऐसा भान होता है कि यह सब मेरा ही तेज और ताप है और मैं ही स्वयं भुना जा रहा हूं।

(५) लोक और परलोक जो तुच्छ अज्ञान से बना था, राम ने उसे ऐसे उड़ा दिया जैसे सूर्य तारों को उड़ा देता है।

---

१ स्त्री पुरुष २ चमक और दमक ३ लोक और परलोक ४ अविद्या, अज्ञान ५ सूर्य रूपी राम ६ सच्चिदानन्द हूं ७ स्वात्म अभिमान या महात्मता और ईश्वरता ८ केवल ९ लैला लैली की आँख १० मित्र मजनूं का चित्त (लैली मजनूं दो आशिक माशूक पंजाब देश में हुए हैं और मजनूं का चित्त अपनी लैला की आँख (या दृष्टि) पर आसक्त आशक्त था, इसलिये लैली की चक्षु का उदाहरण यहां दिया है ११ (शिरीं शीरीं का प्यारा आशिक) फरहाद का हाथ (जिसने पर्वत को खोद डाला था) १२ चुम्बन जैसा आशीर्वाद लगता हो तो मुझसे १३ मेरा मुँह सभी प्याला भरे साथ है

गोशे[1]-गुल हूं, रुखे-यूसफ[2], दमे-ईसा[3], सरे-सरमद[4] ।
तेरे सीने[5] में बसूं हूं, है यही धाम[6] मेरा ॥ ३ ॥
हलके-मंसूर[7], तने-शम्स[8], व इल्मे उलमा[9] ।
चाह या बैहर[10] हूं और बुदबुदा[11] इक गाम मेरा ॥ ४ ॥

[४८]

८ राग ज़िला ताल दादरा

क्या पेशवाई[12] बाजा, अनाहद[13] शब्द है आज ।
वैलकम[14] को कैसी रौशनी, समदान्या[15] है आज ॥ १ ॥

---

[४८]

(१) स्वागत करने वाला प्रणव ध्वनि का बाजा क्या उत्तम बज रहा है, और सुवागत के वास्ते कैसा उत्तम वा स्वच्छ प्रकाश जगमगा रहा है । अभिप्राय यह है कि—प्रणव-उच्चारण अर्थात् अहंग्रह उपासना से आत्म-साक्षात्कार होता है और साक्षात्कार से पूर्व चारों ओर भीतर प्रकाश ही प्रकाश भान होता है, इस लिये साक्षात्कार से थोड़ा पूर्व की अवस्था को दर्शाते समय प्रणव ध्वनि और प्रकाश इस (अनुभव) का स्वागत करने वाले वर्णन हुए हैं ।

---

१ फूल का कान २ यूसफ का मुख ३ ईसा का श्वास ४ सरमद का सिर. ५ हृदय ६ घर. ७ मंसूर (ब्रह्मज्ञानी) का कंठ ८ शम्स तब्रेज़ का तन (शरीर). ९ विद्वानों की विद्या. १० समुद्र ११ बुलबुला १२ आगे चल कर लेने वाला १३ अनहद ध्वनी, ॐ (प्रणव) १४ मुबारकबादी (स्वागत) १५ उत्तम, शुद्ध, पवित्र.

चक्कर से इस जहान के फिरे असल घर को हम।
'फ़ुटबाल सब जमीन है, पा[1] पर फिदा है[2] आज ॥२॥

चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़[3] हूँ मिह्र[4] साँ।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ॥ ३ ॥

---

(२) इस संसार-चक्कर से निकल कर हम जब अपने असली धाम (निज स्वरूप) की ओर मुड़े, तो पृथ्वि हमारे लिये एक फ़ुटबॉल अर्थात् खेलका गेंद हो गई और, अब यह हमारे चरणों पर वारे जाती है। अभिप्राय—जब वृत्ति आत्मस्वरूप से विमुख थी और संसार या संसार के विषयों में आसक्त थी तो संसार दूर भागता था, पर जब वृत्ति संसार से मुँह मोड़ कर अन्तर्मुख हुई तो संसार हमारे चरणों पर गिरने लग पड़ा।

(३) संसार तो चक्कर में है, पर सूर्यवत् मैं उस चक्कर का केन्द्र हूं और लोग धोके से कहते हैं कि आज सूर्य चढ़ा है (क्योंकि सूर्य तो नित्य स्थित रहता है)। अभिप्राय—लोग इस भ्रम में हैं कि ईश्वर कहीं बाहिर है और उस के ढूंढने में चक्कर लगाते फिरते हैं, पर आत्मदेव सूर्यवत् सब का केन्द्र हुआ सब के भीतर स्थित है, केवल अज्ञान के बादल से आच्छादित है और उस के दूर हटने पर यह नित्य उपस्थित आत्मा या आत्म-ज्ञान विद्यमान होता है, परन्तु लोग धोखे से यह कहते हैं कि हमने उसे ढूँढ पाया।

---

१ पाद, पावों २ प्राण दिये हुए, अर्पित ३ केन्द्र ४ सूर्य के समान.

शहज़ादे[1] का जलूम[2] है, अब तख्ते-ज़ात[3] पर।
हर ज़र्रह[4] सदक़ा[5] जाता है, नग़मा[6]-सरा है आज ॥४॥

हर वर्गो-मिहरो[7]-माह का रक्सो-सरोद[8] है।
आराम अमन चैन का तूफाँ बपा है आज ॥ ५ ॥

---

(४) युवराज अर्थात् सूर्य का अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का अब शुभ समा हो रहा है अर्थात् उदयकाल अब हो रहा है, इस वास्ते हर एक २ (परमाणु) उस पर प्राण दे रहा या क़ुर्बान जा रहा है। अभिप्रायः—वृत्ति का अपने परम स्वरूप में लय होने का अब समय आरहा है, इस लिये प्रत्येक परमाणु उस ज्ञानी पर वारे न्यारे जा रहा है।

(५) इस समय प्रत्येक पत्ता, सूर्य और चन्द्र का नाच-राग हो रहा है, और सुख आनन्द शान्ति का समुद्र बेह रहा है। अभिप्रायः— इस साक्षात्कार पर प्रत्येक पत्ता, चन्द्र और सूर्य प्रसन्नता में नृत्य कर रहे हैं और चारों ओर प्रसन्नता, शान्ति और सुख का समुद्र बह रहा है।

---

१ युवराज २ राज तिलक ३ स्वराज्य की गद्दी ४ परमाणु ५ वारे जाता, प्राण देता या क़ुर्बान होता है ६ आवाज दे रहा है, गीत गा रहा है ७ प्रत्येक पत्तें और चन्द्र सूर्य का ८ नाच, राग

किस शोख़े-चश्म[1] की है यह आमद[2] कि नूरे-बर्क़[3]।
दीदों[4] को फाड़ फाड़ के राह देखता है आज ॥ ६ ॥

आता करम[5]-फ़शाँ, शाहे अब्र[6] दस्त है।
बारश की राह[7] पानी छिड़कता खुदा है आज ॥ ७ ॥

---

(६) किस तीक्ष्ण-दृष्टि प्यारे का यह आगमन है कि जिस की इन्तज़ार में बिजली का तेज आँखें फाड़ २ कर देख रहा है? अभिप्राय:—ऐसा आनन्द का समय देख कर साधारण मनुष्य के चित्त में संशय उठ पड़ता है कि ऐसा कौन प्रभाव शाली यह आ रहा है जिस की प्रतीक्षा में विद्युत भी आँखें फाड़ २ देख रहा अर्थात् घोर प्रकाश कर रहा है।

(७) जिसके हाथ में बादल है या जिस का हाथ कृपा-वृष्टि बादल के समान करने वाला है, ऐसा कृपालु महाराजाधिराज (सूर्य) आ रहा है और वर्षा के स्थान पर आनन्द रूपी जल की वृष्टि कर रहा है। *अभिप्राय:—जो कृपा का अधिष्ठान या समुद्र है,* ऐसे प्रकाश स्वरूप आत्मा का अनुभव हो रहा है और बादल के स्थान पर अब ईश्वर स्वयं आनन्द की वृष्टि कर रहा है।

---

१ तीक्ष्णदृष्टि वाला प्यारा, (आत्मा) २ आगमन ३ बिजली का तेज या प्रकाश ४ आँखों को ५ कृपालु कृपा वृष्टि करने वाला. ६ वह बादशाह जिस के हाथ में बादल हो अर्थात् सूर्य, या जिसका हाथ बादल के समान कृपावृष्टि करता हो ७ वर्षा के स्थान पर.

झुक झुक सलाम करता है अब चाँदे-ईदं है।
इकबाल[1] राम राम का खुद हो रहा है आज ॥ ८ ॥

[४६]

राग ज़िला ताल दादरा

गुल[1] को शमीम[2], आब[3] गोहर[4] और ज़र[5] को मैं।
देता बहादरी हूं दिलो शेरे-नर[7] का मैं ॥ १ ॥
शाहों को रोब[8] और हसीनों[9] को हुस्नो-नाज़[10]।
देता हूं जबकि देखूं उठा कर नज़र[11] को मैं ॥ २ ॥
सूरज को सोना चाँद को चाँदी तो दे चुके।
फिर भी त्वायफ[12] करते हैं देखूं जिधर को मैं ॥ ३ ॥
अब्रुए[13]-कैहकशां[14] भी अनोखी[15] कमन्द है।
बे कैद हो असीर[16] जो देखूं इधर को मैं ॥ ४ ॥

(८) ईद का जो चाँद अर्थात् द्वितीया का चन्द्र निकला है वह मानो राम को नमस्कार झुक झुक कर कर रहा है। इस प्रकार राम अपना स्वागत (मान-प्रतिष्ठा) स्वयं आप हो रहा है। अभिप्राय:—इस साक्षात्कार के बाद तो द्वितीय का चाँद जिस के आगे लोग झुकते हैं, वह स्वयं उस आत्मज्ञानी के आगे झुक २ कर नमस्कार करता है। इस प्रकार राम स्वयं अपना स्वागत (यश) आप हो रहा है।

१ स्वागत प्रताप, प्रभाव २ पुष्प ३ सुगन्ध ४ चमक ५ मोती ६ स्वर्ण ७ नर शेर, सिंह ८ दबदबा, प्रभाव ९ सुन्दर लोग या सुंदरियों को. १० सौन्दर्य और नखरा ११ दृष्टि १२ गुज़र, नाच १३ आँखों की भवें १४ आकाश में एक लम्बी सफेदी जो रात्रि के समय नज़र आती है जिस को (Milky Path) दूधिया रास्ता या आकाश गंगा कहते हैं १५ विचित्र, १६ कैद, बद्ध, आसक्त

तारे झमक झमक के घुमाते हैं राम को।
आँखों में उन की रहता हूं, जाऊँ किधर को मैं॥ ५॥

[५०]

राग भैरवी ताल पश्तो

यह इधर से मिहर[1] आ चमका, अहाहाहा, अहाहाहा।
उधर मह[2] बाम से लपका, अहाहाहा, अहाहाहा॥ १॥
हवा अटखेलियां करती है मेरे इक इशारे से।
है क्रीड़ा[3] मौत पर मेरा, अहाहाहा, अहाहाहा॥ २॥
यकताई[4] ज़ात[5] में मेरी असंख्यों रंग हैं पैदा।
मज़े करता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ३॥
कहूं क्या हाल इस दिल का कि शादी[6] मौज[7] मारे है।
है इक उमड़ा हुआ दरया, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ४॥
यह जिस्मे[8]-राम, ऐ बद[9] गो! तसव्वर[10] महज़[11] है तेरा।
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा[12] अहाहाहा॥ ५॥

[५१]

ग़ज़ल ताल पश्तो

पीता हूं नूर[13] हर दम, जामे-सहर[14] पै हम।
है आस्मां[15] प्याला, यह शराबे-नूर[16] वाला॥ टेक

---

[1] सूर्य [2] चाँद [3] खेल. [4] यायुक्त [5] एक, अद्वैत. [6] वास्तव स्वरूप [7] खुशी, आनन्द [8] लेहरें मारना [9] राम का शरीर. [10] बुरा बोलने वाले या ताना मारने वाले; अभिप्राय भेदवादी से है. [11] भ्रम, अनुमान. [12] केवल, [13] यह शब्द प्रसन्नता और हर्ष का वाचक है [14] प्रकाश [15] प्रभात का प्याला [16] आकाश. [17] प्रकाश रूपी मदिरा का जामामृत

है जी[1] में अपने आता, दूं जो है जिस को भाता।
हाथी, गुलाम, घोड़े, ज़ेवर, ज़मीन, जोड़े॥
ले जो है जिस को भाता, मांगे विगैर दाता॥ पीता हूं० १
हर क़ौम की दुआयें[2], हर मत की इल्तजायें[3]।
आती हैं पास मेरे, क्या देर क्या सवेरे॥
जैसे अड़ाती गायें जंगल से घर को आयें॥ पीताहूं० २
सब ख्वाहशें, नमाज़ें, गुण, कर्म, और मुरादें।
हाथों में हूं फिराता, दुन्या हूं यूं बनाता॥
मेमार[4] जैसे ईंटें, हाथों में है घुमाता॥ पीता हूं० ३
दुन्या के सब बखेड़े, झगड़े, फ़साद, भेड़े।
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को बदल सकते॥
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मम्माल[5] हैं यह॥ पीता हूं० ४
नेचर[6] के लाज़[7] सारे, अहकाम[8] हैं हमारे।
क्या मिहर[9] क्या सतारे, हैं मानते इशारे॥
हैं दस्तो[10]-पा हर इक के, मर्ज़ी पै मेरी चलते॥ पीता हूं०५
कशशे-सिक़ल[11] की क़ुदरत, मेरी है मिहरो[12]-उलफत।
है निगह[13] तेज मेरी, इक नूर की अन्धेरी॥
बिजली शफ़क़[14] अङ्गारे, सीने[15] के हैं शरारे॥ पीताहूं० ६
मैं खेलता हूं होली, दुन्या से गेन्द गोली।
ख्वाह इस तरफ को फेंकूं, ख्वाह उस तरफ चला दूं॥

---

१ दिन २ प्रार्थनायें. ३ निवेदन या दरख्वास्तें ४ मकान बनाने वाला ५ आंखों में सुर्मे की तरह ६ प्रकृति (क़ुदरत) ७ नियम, क़ानून ८ आज्ञा, हुक्म, उपदेश ९ सूर्य १० हाथ और पाओं. ११ आकर्षण शक्ति (Law of gravitation). १२ कृपा (मिहरबानी) और प्यार १३ दृष्टि १४ दोनों काल के मिलते समय आकाश में जो लाली होती है १५ दिल

पीता हूं जाम[1] हर दम, नाचूं मुदाम[2] थम थम।
दिन रात है तरश्शुम[3], हूं शादे-राम[4] बेग़म॥ पीता हूं० ७

[५२]

ग़ज़ल ताल क़व्वाली

हुबाबे[6] जिस्म लाखों मर मिटे, पैदा हुए मुझ में।
सदा हूं बहरे[7] वाहद, लहर है धोखा फ़रानों[8] का॥ १॥
मेरा सीना[9] है मशरक़[10] आफ़ताबे[11]-ज़ाते ताबा का।
तलू ए सुबह-ए शादी[12], बाज़ुदन[13] है मेरे मिज़गाँ[14] का।२॥

[५२]

(१) मुझ में बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और उत्पन्न हो गये, पर मैं नित्य अद्वैत रूपी समुद्र ही हूं, और मुझ में नानत्व-रूपी लहरें केवल धोखा हैं

(२) मेरा जो हृदय है वह पूर्व है जहां से (प्रकाशस्वरूप आत्मा का) सूर्य प्रगट होता है और मेरे हृदय-नेत्र की पलकों का खुलना ही आनन्द की प्रात:काल का चढ़ना है। अर्थात् हृदय आत्मा के साक्षात्कार का स्थान है और हृदय के नेत्र खुलने से (साक्षात्कार होने से) चारों ओर प्रसन्नता की प्रात: उदय होती है।

१ प्रेम प्याला २ नित्य, हमेशा ३ आनन्द से आँसुओं का धीमे धीमे टपकना या बरसना ४ बेग़म राम बादशाह हूं ६ देह का बुदबुदा अर्थात देह या शरीर रूपी बुदबुदा ७ अद्वैत का समुद्र अर्थात् अद्वैत रूप समुद्र ८ नानत्व, अनगिनत, अनन्त, अर्थात द्वैत कथन धोखा है ९ हृदय, १० पूर्व, ११ प्रकाशस्वरूप आत्मा (सूर्य) का पूर्व अर्थात् उदय स्थान है १२ आनन्द की प्रातः का उदय स्थान, १३ खुलना १४ पलक अर्थात् ज्ञान नेत्र की पलकें

ज़ुबाँ अपनी बहारे[1]-ईद का मुयज़्दह[2] सुनाती है।
दुरों[3] के जगमगाने से हुआ आलम[4] चरागाँ का ॥ ३ ॥

सरापा-नूर[5] पेशानी[6] पै मेरी मह[7] दरख़्शाँ[8] है।
कि भूमर[9] है जवाँ[10] सीमीं पे गिर्जाये-ज़िमिस्ताँ[11] का ॥ ४ ॥

---

(३) मेरी वाणी आनन्द की बहार की खुशखबरी सुनाती है और उस वाणी से शब्दरूपी मोतियों के झरने या जगमगाने से दीपमाला का समय बन्ध गया है। अर्थात् अविद्या या अन्धकार की रात्रि मेरी वाणी से प्रकाशित हो जाती है।

(४) मेरी चमकीली ललाट (पेशानी) पर अर्थात् पर्वतों की शिखर पर चाँद ऐसे चमक रहा है कि मानो पार्वती के चान्दी रूप चमकीले माथे पर भूमर लटक रहा है ॥

---

१ ईद अर्थात निजानन्द की बहार २ खुशखबरी, आनन्द की सूचना. ३ मोती, यहाँ अभिप्राय शब्दों से है ४ (ज्ञान रूपी) दीपकों का लोक अर्थात चारों ओर ज्ञानका प्रकाश ही प्रकाश हो गया ५ प्रकाशमान् या प्रकाश से पूर्ण ६ माथा, पर्वतों से अभिप्राय है ७ चाँद ८ प्रकाशमान ९ माथे पर लटकने वाला जेवर (गहना), १० चाँदी जैसी चमकीली पेशानी (बर्फ़) पर ११ शीत स्वरूप पार्वती (उमा).

खुशी से आन जामे[1] में नहीं फूली समाती अब।
गुलों[2] के बार[3] से टूटा, यह लो दामाँ[4] पियावाँ का ॥ ५ ॥
चमन में दौर[5] है जारी, तरब[6] का, चहचहाने का।
चहकने में हुआ तबदील, शेवन[7] मुर्ग़-नालाँ[8] का ॥ ६ ॥
निगाहे[9]-मस्त ने जब राम की आमद[10] की सुन पाई।
है मजमा[11] सैद[12] होने को यहां चैदशी ग़ज़ालों का ॥ ७ ॥

---

(५) आनन्द इतना बढ़ गया कि आप भी अब तन के भीतर इसे नहीं समाते, अथवा राम को पर्वतों में एक स्थान पर अब स्थित होने नहीं देते। बल्कि जैसे पुष्पों के बोझ से वन का पल्ला टूट गया कहलाता है या पुष्प अधिकता के कारण वन से बाहिर उड़ जाते हैं, वैसे ही राम भी इस निजानन्द के बढ़ने से पर्वतों से नीचे उतरा कि उतरा।

(६) इस संसार रूपी उपवन में आनन्द के चहचहाने का समय जारी है और इस (चहचहाहट) से पक्षियों का रोना भी चहकने में बदल गया है।

(७) मस्त पुरुष की दृष्टि ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की प्रतीक्षा (इन्तज़ार) लोग ऐसे करने लगे कि मानो जंगली मृगों का समूह देखने को उत्सुक है (अर्थात् जैसे मृग जल की इन्तज़ार में टिकटिकी बान्धे रहते हैं, वैसे सब लोग राम की इन्तज़ार में लगे हैं).

---

१ भीतर के प्याले रूपी शरीरमें, २ पुष्प, फूल ३ बोझ ४ पल्ला, पुराद जंगल का तट या किनारा. ५ समय, काल चक्र. ६ खुशी. ७ रुदन शोक खेद, विलाप ८ रोते हुए पक्षियोंका ९ मस्त पुरुषकी दृष्टि. १० आगमन ११ समूह, हजूम. १२ शिकार होवें, बद्ध होवे अर्थात मारे जावें को १३ जंगली मृगों का

[५२]

ग़ज़ल

मुझ बैहरे-ख़ुशी[1] की लैहरों पर दुन्या की किश्ती रहती है।
अज़[2] सैले-सरूर धड़कती है छाती और किश्ती बैहती है॥
गुल[3] खिलते हैं, गाते हैं रो रो बुलबुल, क्या हंसते हैं
नाले[4] नदियाँ।
रंगे-शफ़क़[5] घुलता है, बादे-सबा[6] चलती है, गिरता है
छम छम बारां[7]। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ १ ॥

करते हैं अजम[8] जगमग, जलता है सूरज धक धक, सजते
हैं बाग़ो-बियबाँ[9]।
बसते हैं नंदन पैरस, पुजते हैं कांशी मक्का, बनते हैं
जिन्नतो-रिज़वा[10]। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ २ ॥

उड़ती हैं रेलें फर फर, बैहती हैं बोटें[11] झर झर, आती है
आँधी सर सर।
लड़ती हैं फौजें मर मर, फिरते हैं जोगी दर दर, होती
है पूजा हर हर। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ ३ ॥

चर्ख़[12] का रंग रसीला, नीला नीला; हर तरफ दमकता है,
कैलास झलकता है, बैहर[13] डलकता है, चाँद चमकता है।
मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ ४ ॥

---

१ ख़ुशी का समुद्र २ आनन्द के तीव्र तूफान (बहावों) से ३ पुष्प, ४ धारा, चश्मे. ५ प्रातःकाल और सायंकाल की आकाश में लाली बादलों में होती है. ६ पर्वा-वायु. ७ वर्षा. ८ ग्र.रे. ९बाग़ और जंगल १०स्वर्ग और स्वर्ग का प्रबन्धक, ११ बेड़ी, किश्ती. १२ आकाश १३ समुद्र.

आज़ादी है, आज़ादी है, आज़ादी मेरे हाँ।
गुंजायशो[1]-जा सब के लिये बेहदो-पायाँ[2] ॥

सब वेद और दर्शन, सब मज़हब, कुरआन, अञ्जील
और ज़ैन्दावस्ता[3]।

बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद, था रहना सेहना इन सब का।
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ५ ॥

ये कपल, कनाद और अफलातूं, अरस्तू, कांट[4] और हैमिल्टन।
श्रीराम, युधिष्ठिर, अलकन्दर, विक्रम, कैसर, अलजवथ, अकबर।
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ६ ॥

मैदाने-अबद[5], और रोज़े-अज़ल, कुल माज़ी[6], हाल
और मुस्तकबिल।

चीज़ों का बेहद रद्दो बदल[7], और तसलसुल[8]-ए दैहर का है दल बल,
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ७ ॥

है रिश्ता[9]-ए-वहदत दर कसरत[10], हैं इल्लतो सिहत[11] और
राहत[12]।

हर विद्या, इल्म, हुनर, हिकमत; हर खूबी, दौलत और बरकत।
हर निमत, इज्ज़त और लज्ज़त; हर कशिश का मर्कज़[13],
हर ताकत।

---

१ स्थान की गुंजायश (प्रत्ती) २ बेशुमार, अपार ३ बुद्ध मत की पुस्तक. ४ पुरुष के गणधरों के ये नाम हैं ५ समर, स्थान ६ प्रलय काल का दिन ७ भूत, वर्तमान और भविष्य. ८ बदलते रहना, विकार. ९ समय का चक्कर. १० एकता का भाव ११ अधिकता, मात्रत्व १२ द्वार शुल, या रोगिता निरोगिता . १३ आराम १४ केन्द्र.

हर मतलब, कारण, कारज सब, क्यों, किस जा[1], कैसे,
क्योंकर, कब,
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ८ ॥
हूं आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, ज़ाहर, बातिन[2], मैं ही मैं।
माशूक़[3] और आशिक़[4], शाइर[5], मज़मून, बुलबुल, गुलशन[6],
मैं ही मैं ॥ ९ ॥

नोट—यह कविता हिन्दी या उर्दू कविता के ढंग पर नहीं; यह अमरीका देश के व्हाल्ट व्हिट मैनियन ढंग पर कही हुई है और उन दिनों में लिखि गई जब राम से अन्त में अपना नाम देना बंद हो गया था। जिन पाठकों को व्हाल्ट व्हिट मैनियन ढंग से परिचय न होवे Leavos of grass by Whalt Whitman ऐसे नाम की पुस्तक को देखें।

(सम्पादक)

(नोट—यह कविता अंग्रेज़ी कविता Drizzlo Drizzlo के अनुवाद के रूप में है और उन्हीं दिनों लिखी गई जब अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव राम से छूट गया था).

[५४]

ग़ज़ल ताल पश्तो

ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बैह रहा है।
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!! (टेक)
फैली सुबहे[7]-शादी, क्या चैन की घड़ी है।
सुरूर के छुटे फ़व्वारे, फ़रहत[8] अटक रही है॥

१ स्थान. २ अन्दर. ३ मित्र, इष्ट, दयितजन. ४ आसक्त वा भक्त. ५ कवि. ६ बाग़. ७ आनन्द की प्रातः. ८ खुशी, आनन्द.

क्या नूर[1] की झड़ी है, झिम ! झिम !! झिम !!!

शबनम[2] के दल ने चाहा, पामाल[3] कर दें गुल[4] को।
सब फिरकर मिल कर आये, कि निढाल करदें दिलको॥
आया सबा[5] का झोंका, यह सबाये[6] रोशनी का।
झड़तो है शबनमे ग़म, झिम ! झिम !! झिम !!!

उड़ कर पड़ा हूं दौक से खाली जहान में।
तसकीने[7]-दिल भरी है मेरे दिल में जान में॥
सूंघें ज़मां[8], मकां[9], मेरे पाओं मिस्ले[10]-सग।
मैं कैसे आसकूं हूं क़ैदे-बियान[11] में॥
ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!!

---

१ प्रकाश २ ओस. ३ अधीन करदें पाओं में रौंद दें ४ फूल. ५ पूर्वी वायु अर्थात् वह वायु जो पूरब से चल रही हो अथवा वह पवन जो प्रातः काल चलती है ६ प्रकाश रूपी वायु, यहां अभिप्राय सूर्य से है ७ दिल में चैन, शान्ति आराम. ८ देश. ९ काल. १० कुत्ते के समान वर्तन. ११ वर्णन के बन्धन.

[५५]

ग़ज़ल ताल कवाली

(१) जब उमडा दरया उल्फ़त[1] का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारिकबादी है।
खुश[2] खंदः है रंगीं गुल का, खुश शादी शादमुरादी है।
बन सूरज आप दरख़शां[3] है, खुद जंगल है, खुद वादी[4] है॥
नित राहत है, नित फ़रहत है, नित रंग नये आज़ादी है १॥टेक॥

(५५)

(१) जब प्रेम का समुद्र बहने लग पड़ा तो हर तरफ प्रेम की बस्ती नज़र आने लग पड़ी। अब सुन्दर पुष्प की तरह हंसना और खिलना रहता है, नित्य चित्त की प्रसन्नता और आनन्द है। आप ही सूर्य बन कर चमक रहा है और आप ही जंगल बस्ती बन रहा है, नित्य आनन्द, शान्ति, और नित्य सर्व प्रकार की खुशी आज़ादी हो रही है।

१ प्रेम, २ अच्छा खिला हुआ ३ प्रकाशमान ४ आबाद स्थान.

(२) हर रग रेशे में, हर मू[1] में, अमृत भर भर भरपूर हुआ।
सब कुलफत[2] दूरी दूर हुईं, मन शादी[3] मर्ग से चूर हुआ।
हर बर्ग[4] बधाइयाँ[5] देता है, हर ज़र्रह[6] अर्रह तूर[7] हुआ।
जो है सो है अपना मज़हर[8], ख्वाह आबी[9] नारी[10] बादी[11] है।
क्या ठंडक है, क्या राहत[12] क्या शादी[13] है आज़ादी है॥ २॥

---

(२) हर रग और नाड़ी में और रोम रोम में आनन्द रूपी अमृत भरा हुआ है। जुदाई के सब दुःख और कष्ट दूर हो गये और मन (अहंकार के) मरने (मौत) की खुशी से चूर हो गया है। अब प्रत्येक पत्ता बधाइयाँ (स्वस्ति) दे रहा है, और परमाणु मात्र भी ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हुआ। अब जो है सो सब अपना ही झाँकी-स्थान या ज़ाहर करने का स्थान है। ख्वाह यह पानी की शकल हो ख्वाह अग्नि की और ख्वाह हवा की सूरत है (यह तमाम मुझ अपने को ही जाहिर करने वाले हैं)।

---

१ सिर का बाल २ जुदाई का कष्ट दुःख ३ आनन्द के अनन्त बढ़ने से जो मृत्यु होती है. ४ प्रत्येक पत्ता ५ स्वस्ति वाचन ६ परमाणु ७ अग्नि का पर्वत ८ झाँकी का स्थान, ज़ाहर होनेका स्थान ९ पानी से उत्पत्तिवाला १० अग्नि से उत्पन्न हुआ ११ वायु से उत्पत्ति वाला १२ आराम १३ प्रसन्नता, खुशी.

(३) रिम झिम, रिम झिम आँसू बरसें, यह अब्र[1] बहारें देता है।
क्या खूब मजे की बारिश में यह लुत्फ वसल[2] का लेता है।
किश्ती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता[3] है।
यह ग़र्क़ाबी[4] है जी[5] उठना, मत झिजको, उफ़ बरबादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आज़ादी है ॥३॥

---

(३) आनन्द की वर्षा के आँसू रिम झिम बरस रहे हैं, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है। इस ज़ोर की वर्षा में यह (चित्त) क्या खूब अभेदता (एकता) का आनन्द ले रहा है। (शरीर रूपी) किश्ती तो आनन्द की लहरों में डूबने लग रही है मगर यह बड़ा (आनन्द में) उन्मत्त उसे कब चलाता है? (शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि (देहाध्यास) यह डूबना, वास्तव में जी उठना है, इस लिये ऐ प्यारों! इस मौत से मत झिझको (झिझकने में अपनी बरबादी है)। इस मृत्यु में तो क्या ठंडक है क्या आराम है और क्या ही आनन्द और क्या ही स्वतंत्रता है (कुछ वर्णन नहीं हो सकता)।

---

१ बादल २ अभेदता, एकता ३ चलाता है ४ डूब जाना, ५ ज़िन्दा होना.

(४) मातम, रंजूरी[1], बीमारी, गलती, कमजोरी, नादारी[2]।

ठोकर ऊंचा नीचा, मिहनत जाती (हैं) उन पर जाँ वारी।

इन सब की मददों के बाइस[3], चश्मा मस्ती का है जारी।

गुम शीर[4], कि शीरीं तूफां में, कोह[5] और तेशा फरहादी है।

क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ॥४॥

---

(४) रोना पीटना, शोक चिन्ता, बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, निर्धनता, नीच ऊँच, ठोकर अरु पुरुषार्थ, इन सब पर प्राण वारे जा रहे हैं और इन सब की सहायता से मस्ती का समुद्र बह रहा है। मियां शीरीनी के इश्क़ (आशक़ि) में फहाद का तेशा और पहाड़ अरु शीरीं लोप हो रहे हैं। क्या शान्ति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्याही आज़ादी हो रही है।

---

१ रोना पीटना शोक चिन्ता २ निर्धनता जिस समय पास कुछ न हो ३ कारण ४ शीरीं नदी को फरहाद अपनी प्रिया (शीरीं) के इश्क़ (आशक़ि) में पहाड़ पर से तोड़ कर मैदानों में लाया था. ५ पर्वत

(५) इस मरने में क्या लज़्ज़त है, जिस मुंह को चाट[1] लगे इसकी।
थूके है शाहंशाही पर, सब नेऽमत दौलत हो फीकी।
मैं[2] चाहो? दिल सिर दे फूंको, और आग जलाओ भट्टी की।
क्या सस्ता बादा[3] बिकता है, "लेलो" का शोर मुनादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ॥५॥

(५) इस मरने में क्या ही आनन्द (लज़्ज़त) है, जिस मुंह को इस लज़्ज़त की चटक (स्वाद) लग गयी वह शाहंशाही पर थूकता है और सर्व धन दौलत (वैभव) फीका हो जाता है। अगर वह (आनन्द की) शराब चाहो, तो दिल और सिर को फूंक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्ठी जलाओ। वाह! (निजानन्द की) क्या सस्ती शराब (अपने सिर के इवज़) बिक रही है, और (फ़कीर की तरह) "लै लो" "लै लो" का शोर हो रहा। इस शराब से क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आज़ादी है।

१ चटक, स्वाद, लज़्ज़त. २ शराब ३ आनन्द रूपी शराब.

(६) इल्लत[1] मालूल[2] में मत डूबो, सब कारण कार्य्य तुम ही हो।
तुम ही दफ़तर से ख़ारिज हो, और लेते चारज तुम ही हो।
तुम ही मसरूफ़ बने बैठे, और होते हारिज[3] तुम ही हो।
तू दावर[4] है, तू मुकला[5] है, तू पापी तू फ़र्यादी है।
नित फ़रहत है, नित राहत है, नित रंग नयी आज़ादी है ॥६॥

---

(६) हेतु (कारण) और फल (कार्य्य) में मत डूबो, क्योंकि सब कारण कार्य्य तुम ही हो, और जो दफ़तर से ख़ारिज होता है अथवा जो नौकर होता है यह सब तुम आप हो। तुम ही सब काम में मशगूल होते हो। तुम ही उस में विक्षेप डालने वाले होते हो। तुम ही न्यायकारी, तुम ही वकील और तुम ही पापी और फ़रयादी होते हो। स्वाहा! नित्य चैन है नित्य शान्ती है और नित्य राग रंग और आज़ादी है।

---

१ कारण २ कार्य्य ३ किसी काम में हरज करने वाले ४ न्याय कारी, मुंसिफ़, जज ५ वकील

(७) दिन शब[1] का झगड़ा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है।
जब खुलता दीदये रौशन हैं, हंगामये-ख्वाब[2] कहां फिरहैं?।
आनन्द सरूर[3] समुद्र है जिसका आग़ाज़[4], न आख़िर है।
सब राम पसारा दुन्या का, जादूगर की उस्तादी है।
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है ॥७॥

यमनोत्री

गुलाब फ़िरदौस

इस शिखर पर माया की दाल नहीं गलती और न दुन्या की दाल ही गलती है अत्यन्त गरम २ धारा ईश्वर कृत लाल २ पुष्पों की सुन्दर फुलवाड़ी आबशारों (झरनों) की बहार, चमकदार चाँदी को शरमाने वाले श्वेत दोपट्टे (झाग, फेन) और उन के नीचे आकाश की रंगत को लजाने वाला यमना रानी का गात (तन) बात बात में काश्मीर को मात करते हैं आबशार (झरने) तो तरंगेबेखुदी (निराभिमानता की लटक) में नृत्य कर रहे हैं यमुन. रानी साज़ बजा रही है राम शाहंशाह गा रहा है:—

---

(७) सूर्य यद्यपि आप सफेद है, मगर दिन रात का झगड़ा अर्थात् श्वेत कालेका भेद उस में नहीं देखा जाता, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वि के घुमने पर निर्भर हैं। ऐसे ही जब आँख खुलती है तो स्वप्न फिर बाकी नहीं रहता, बल्कि चारों ओर अनन्त और नित्य आनन्द का समुद्र उमड़ता दिखाई देता है। यह संसार सब राम का पसारा है और जादूगर (राम) की यह उस्तादी है और यूं तो नित्य चैन है, शान्ति है और नित्य राग रंग और नयी आज़ादी है।

१ रात २ ख्वाब घाट ३ स्वप्न की दुन्या, स्वप्न का झगड़ा वियाद. ४ आनन्द, खुशी ५ आदि, शुरू

(९) सब ऋषियों के आईना[1] दिल में, मेरा नूर[2] दरख़शां[3] था।
मुझ ही से शाइर[4] लाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१०) मैं ख़ालिक़[5], मालिक दाता हूं, चशमक[6] से दैहर[7] चलाता हूं।
क्या नक़्शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(११) इक कुन[8] से दुन्या पैदा कर, इस मन्दिर में ख़ुद रहता हूं।
हम तनहा शैहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१२) यह मिसरी हूं जिस के बाइस[9] दुन्या को इशरत[10] शीरीं[11] है।
गुल[12] मुझ से रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१३) मसजूद[13] हूं, क़िबला[14], काबा हूं, माबूद[15] अज़ां[16] नाक़ूस[17] का हूं।
सब मुझ को कुफ़ बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१४) कुल आलम[18] मेरा साया है, हर आन बदलता आया है।
ज़िल[19] क़ामत[20] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१५) यह जगत हमारी किरणें हैं फैलीं हर सू[21] मुझ मर्कज़[22] से।
शाँ बूक़लमूं[23] दिखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१६) मैं हस्ती[24] सब अशया[25] की हूं, मैं जान मलायक[26] कुल की हूं।
मुझ बिन बेबूद[27] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

---

१ अन्तःकरण रूपी शीशा. २ प्रकाश. ३ चमकता था. ४ कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती है) ५ सृष्टि के रचने वाला. ६ आँख की झपक में ७ युग, समय ८ आज्ञा हुक्म या संकेत. ९ सबब, कारण. १० विषय आनन्द, विषयभोग पदारथ ११ मीठी. १२ पुष्प फूल १३ उपजा, पूजा कीया गया १४ जिसकी तर्फ मुंह करके पैग़म्बर पूजा [ध्यान] की जाती है. १५ पूजनीय १६ बांग १७ शंख १८ सब संसार १९ साया, प्रतिबिम्ब २० विश्व. २१ तरफ़. २२ केन्द्र २३ नाना प्रकार के. २४ अस्ति, जान सब की. २५ वस्तु. २६ फरिश्तों (देवताओं) की. २७ न होना, असत, अविद्यमान.

(१७) बेजानों में हम सोते हैं, हैवान[1] में चलते फिरते हैं।
इन्सान में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१८) संसार तजल्ली[2] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही मैं हूं।
हम क्या शोले[3] भड़काते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१९) जादूगर हूं, जादू हूं खुद, और आप तमाशा[4]-बीं मैं हूं।
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(२०) है मस्त पड़ा मेहमां में अपनी, कुछ भी गैर[5] अज़ राम नहीं।
सब कल्पित धूम मचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

नोट—यह कविता राम महाराज ने उस समय लिखी थी जिन दिनों वे, यह निश्चय करके टिहरी नगर से छै कोस की दूरी पर, गोदी सिरवीं ग्राम के समीप एक गुहा (गुफा) वमरोगी में कुछ दिन निराहार रहे थे, वहाँ से बेहोश, दुम दुम्बा के डेराबर भेज दो रथी रा गा तट पर ही पड़े पाटी थी और भागदरूपे सब को पा कर जगाया था.

[५७]

राग गुज़ल गुलाब ताल दादरा

(१) चलना नसीम[6] का तुम ठुमक, लाना प्यामे[7]-यार है।
टुक आँख कब लगने मिली, तीरे-निगह[8] तय्यार है ॥

(१) प्रातःकाल की वायु का ठुमक ठुमक चलना अपने प्यारे यार (स्वरूप) का संदेशा ला रहा है। ज़रा भी आँख भी लगने नहीं मिलती, क्योंकि जब ज़रा लग जाती है (सोने लगता हूं) तो झट उस प्यारे (स्वरूप) की दृष्टि (प्रकाश) का तीर लगना आरम्भ होता है जिससे मैं सोने न पाऊं अर्थात् उसे भूल न जाऊँ।

---

१ पशुओं. २ तेज, चमक. ३ अग्नि की लपटें. ४ तमाशा देखने वाला ५ राम के अतिरिक्त. ६ प्रातःकाल की वायु ७ ईश्वर (प्यारे) का सन्देशा. ८ दृष्टि का तीर.

(२) होशो-ख़िरद[1] से इत्तफ़ाक़न, आँख गर दो चार हैं।
बस यार की फिर छेड़-ख़ानी का गर्म बाज़ार है॥

(३) मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है।
सख़्ती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इन्कार है ?॥

(४) लिखने की ने[2], पढ़ने की फ़ुरसत, कामकी, ने काज की।
हम को निकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार है।

---

(२) अगर अकस्मात अक़्ल और होश में आने लगता हूं या मन बुद्धि का संग करने लगता हूं, तो उसी समय प्यारा छेड़खानी करने लग पड़ता है, जिस से फिर बेहोश और आत्मानन्द से पागल हो जाऊँ, अर्थात् मैं सब दुन्या का न रहूं, सिर्फ़ प्यारे (स्वस्वरूप) का ही हो जाऊँ। (इस छेड़खानी से)।

(३) ऐसा मालूम होता है कि प्यारे का हम से एक मतलब (उद्देश) के कारण प्यार है और वह उद्देश हमारा दिल लेना है, भला सख़्ती से क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है ? (अर्थात् जब पैहिले से ही हम प्यारे के हवाले दिल करने को त्यार बैठे हैं तो अब सख़्ती से क्यों छीनना चाहता है ?)।

(४) दिल को प्यारे के अर्पण करने से न लिखने की फुरसत रही, और न किसी काम काज की आप तो वह बेकार (अकर्ता) था ही अब हमको भी वैसा ही बेकार कर दिया है।

---

१ होश और अक़्ल. २ नहीं.

(५) पैहरा मुहब्बत का जो आवे, हमबग़ल होता है वह।
गुस्सा नवीयत का निकालें रूबरू दिलदार है॥
(६) सोने में हाज़िर ख़्वाब में, जागे में ख़ाको[1]-आब में।
हँसने में हँस मिलता है, मिल रोता है ज़ार[2] यार है॥
(७) गह बर्क़-वश[3] खंदाँ[4] बना, गह अब्रतर[5] गिरयाँ[6] बना।
हर सूरतो हर रंग में पैदा बुते-अय्यार[7] है॥
(८) दौलत ग़नीमत जान दर्दे-इश्क़ की, मत खो उसे।
मालो-मता[8], घर-बार, ज़र, सिदक़े मुबारिक वार[9] है॥

(५) जब प्रेम का समय आता है तो वह (प्यारा) झट हमबग़ल (संग या मूर्तिमान्) हो लेता है, ऐसी दशा में हम किस पर गुस्सा निकालें, क्योंकि सामने वह स्वयं खड़ा है।
(६) सोने में वह हाज़िर है, जाग्रत में भी साथ है, पृथ्वी, जल (अर्थात् जल थल) पर वह मौजूद है, हँसते समय वह साथ मिल कर हँसता है और रोते समय वह (अभेद हुआ) साथ रोता है।
(७) कभी बिजली की तरह चमकता है और हँसता है, और कभी बादल बरस कर रोता है, मगर हमें तो प्रत्येक रूप और रंग में वही प्रकट होता दिखाई देता है।
(८) ऐ प्यारे जिज्ञासु! इश्क़ (प्रेम) के धनको उत्तम जान, इसको मत खो, बल्कि इस प्रेम की आग पर सारे घर बार, धन, दौलत को वार दे।

१ पृथिव और जल २ कभी बिजली की मानिन्द. ३ हंसता हुआ. ४ बादल की तरह तरबतर. ५ रोते हुवे. ६ वह और जिस के वार का अन्दाज़ा लगया जावे, अथवा अपने प्यारे का तराज़ू ७ माल धन असबाब. ८ धन. ९ मुबारिक आप इश्क़ की है.

(९) मंज़ूर नालायक़ को होता है, इलाजे-दर्दे-इश्क़[1] ।
जब इश्क़ ही माशूक़ हो, क्या सिहत में बीमार है ॥
(१०) क्या इन्तज़ार-ओ-क्या मुसीबत, क्या बला क्या ख़ारे-दश्त[2] ।
शोला[3] मुबारिक जब भड़क उट्ठा, तो सब गुलनार[4] है ॥
(११) दौलत नहीं, ताक़त नहीं, तालीम नै[5] तकरीम[6] नै ।
शाहे[7]-ग़नी को तो फ़क़त, इर्फ़ाने-हक़[8] दर्कार है ॥
(१२) उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख़्वाहिशें ।
दीदार[9] का लीजिये मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है ॥

---

(९) इस प्रेम के दर्द का इलाज करना तो अज्ञानी पुरुष को मंज़ूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक़ (इष्ट देव) हो तो क्या ऐसी निरोगता में भी बीमार है ? ।

(१०) इन्तज़ार, मुसीबत, बला और जंगल का काँटा यह सब उसी समय जल कर फूल (आग का पुष्प) हो गये, जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई ।

(११) दौलत, बल, विद्या और इज़्ज़त तो नहीं चाहिये, उस (अनन्य भक्त या ब्रह्मवित्) बेपरवाह बादशाह को तो केवल आत्मज्ञान (ब्रह्म विद्या) की ही आवश्यकता है ।

(१२) कई बरसों की आशा (स्वरूप के अनुभव में जो पर्दे या ओट का काम कर रही हैं) इन सब छोटी बड़ी आशाओं को (आत्मज्ञान से) जला दो, और जब इस तरह से इच्छाओं की दीवार उड़ जावे तो फिर प्यारे (स्वस्वरूप) के दर्शन का आनन्द लो ।

---

१ इश्क़ की दर्द (पीड़ा) का इलाज (औषध) २ जंगल के कांटे ३ प्रेमाग्नि या ज्ञानाग्नि की शुभ ज्वाला ४ अनार का फूल, यहां अग्नि के पुष्प से भी मुराद है. ५ नहीं ६ इज़्ज़त, बुज़ुर्गी. ७ अमीर, या दलीदिल बादशाह. ८ आत्म ज्ञान. ९ दर्शन

(१३) मंसूर से पूछी किसी ने, कूचये-जानाँ[1] की राह।
सुन साफ दिल में राह बतलाती जुबाने-दार[2] है॥

(१४) इस जिस्म से जाँ कूद कर, गंगाये-वहदत[3] में पड़ी।
कर लें महोत्सव आन्दर, ला यह पड़ा मुरदार है॥

(१५) नज़राफ़ लाता है जुनूँ, चशमों मिरा दिल फ़र्शे-राह।
पैहलू[4] में मत रखना खिरद[5] को, राह यह बदकार है॥

---

(१३) मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेत्ता का नाम है, जब यह सूली पर चढ़ाया गया तो उस समय एक पुरुषने उस से (प्यारे की गली) स्वस्वरूप के अनुभव करने का रास्ता पूछा॥ मंसूर तो चुप रहा क्योंकि वह सूली पर उस समय था, मगर सूली की नोक अथवा सिरे ने (जिस को जबाने दार कहते हैं) मंसूर के दिल में साफ चुभकर बतला दिया, कि यह रास्ता है अर्थात् प्यारे के अनुभव का (सिर्फ दिलके भीतर जाना ही) रास्ता है।

(१४) इस शरीर से शरीरक भाव कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड़ गये हैं अब इस मृतक शरीर (मुर्दे) को (प्रारब्ध भोग रूपी) पक्षी खावें और महोत्सव कर लें (क्योंकि साधु के मरने के पश्चात भण्डारा (भोजन) होता है और मस्त पुरुष अपने शरीर को ही सर्व के अर्पण करना भण्डारा समझता है, इस वास्ते राम जब मस्त हुए तो शरीर को मृतक देखकर भण्डारे के वास्ते पक्षियों को बुलाते हैं।

(१५) जब हम चिदानन्द के कारण पागलपन आने लगे तो उस समय अपने पास प्रकार की अक्ल न रक्खो, बल्कि अपने दिल और आँखों के द्वारा उस बेबुद्धि को आने दो।

---

१ ईश्वर के घर का रास्ता २ सूली की नोक से अभिप्राय है ३ एकता की गंगा अद्वैत रूपी समुद्र ४ पास समीप ५ बुद्धि

(१६) पल्ला छुटा इस जिस्म से, सिर से टली अपने बला।
वैल्कम! ऐ तेग़े खूंचकां[1], क्या मर्ग[2] लज्ज़तदार है॥
(१७) यह जिस्मो-जाँ नौकर को दे, ठेका सदा का भर दिया।
तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इस से कार है॥
(१८) खुश हो के करता काम है, नौकर मेरा चाकर मेरा।
हो राम बैठा बादशाह, हुश्यार खिदमतगार है॥
(१९) सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों[3] से नींद।
गुफलत नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार[4] है॥

---

(१६) जब राम शान्ति मस्त हुए तो बोल उट्ठे "इस शरीर से अब सम्बन्ध छूट गया है इस लिये इस की ज़िम्मे वारी की सिर से बला टल गयी। अब तो राम खून पीने वाली तलवार (मुसीबत) की भी स्वागत करता है क्योंकि रामको यह मौत बड़ा स्वाद देती (बा स्वादिष्ट) है।

(१७) यह देह मात्र तो अपने नौकर (ईश्वर) के हवाले करके उस से नित्य का ठेका लेलिया है, अब ऐ प्यारे (स्वस्वरूप)! जान तेरा काम, हम को इस (शरीर) से क्या मतलब है?

(१८) नौकर बड़ा खुश हो के काम करता है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि खिदमतगार (सेवक) बड़ा हुश्यार है॥

(१९) नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन ज़रा भी सोता नहीं, मानों उसकी आँखों में नींद ही नहीं, और दम भर भी इस सुस्ती नहीं, हर घड़ी जगता ही रहता है।

---

१ खून बलधाने वाली अर्थात खून करने वाली तलवार. २ मृत्यु. ३ आँ
४ जागा हुआ.

(२०) नौकर मेरा यह कौन है ? आक़ा[1] हूं इस का कौन राम ?
ख़ादिम[2] हूं मैं या बादशाह ? यह क्या अजब इसरार[3] है ।

(२१) वाहिद[4]-मुजर्रद[5], लाशरीको[6], ग़ैर सानी[7], बे बदल ।
आक़ा कहां ख़ादिम कहां ? यह क्या लग़व गुफ़्तार है ॥

(२२) तनहांस्तम[8], तनहास्तम, दर चेहरो-बर[9] यकतास्तम[10] ।
नुतक़ो[11]-ज़ुबां का राम तक आ पहुंचना दुशवार[12] है ॥

(२३) ऐ बादशाहाने जहां ! ऐ अंजुमे[13]-हफ़्त आस्मान ! ।
तुम सब पै हूं मैं हुक्मरान्, सब से बड़ी सरकार है ॥

---

(२०) ऐ राम ! मेरा नौकर कौन है ? और मालिक उसका कौन है ? मैं क्या मालिक हूं या नौकर हूं ? यह क्या आश्चर्य भेद है (कुछ नहीं कहा जा सकता है)

(२१) मैं तो अकेला अद्वैत नित्य असंग और निर्विकार हूं, मालिक और नौकर कहां ? यह क्या ग़लत बोल चाल है ।

(२२) अकेला हूं, मैं अकेला एक हूं, पृथ्वि तल पर मैं ही अकेला हूं, वाणी और वाक इन्द्रिय का मुझ तक पहुंचना कठिन है (अर्थात वाणी इत्यादि मुझे वर्णन नहीं कर सकती) है ।

(२३) ऐ दुन्या के बादशाहो ! और ऐ सातों आसमानों के तारो ! मैं तुम सब पै राज्य करता हूं, मेरा राज्य सब से बड़ा है ।

---

१ मालिक २ नौकर, सेवक ३ भेद, गुप्त बात. ४ एकमेव द्वितीयम ५ संग रहित या असंग. ६ अपूर्व. ७ अद्वितीय और निर्विकार. ८ मैं अकेला हूं ९ पृथ्वि के पृष्ठ अर्थात् सब तल पर. १० अकेला हूं ११ वाक् वाणी, वार, और बोली १२ कठिन, मुश्किल १३ ऐ सातों आकाशों के तारो ।

(२४) जादू निगाहे[1] यार हूं, नशा लने[2] मैं-गूं हूं मैं ॥
आबे-हयाते-रस हूं मैं, अबरु मेरी तलवार है ।

(२५) यह काकुले[3]-जुलमाते- माया, पेच, पेचां[4] है, पले[5]
सीधे को जल्वा[6]-ए-राम है, उलटे को डसता मार[7] है ॥

---

(२४) मैं अपने प्यारे (स्वरूप) की जादूभरी दृष्टि हूं, निजानन्द भरी मस्तीकी शराब का नशा मैं हूं, अमृत स्वरूप मैहूं, भवें (माया) मेरी तलवार हैं।

(२५) यह मेरी माया की काली जुल्फें (अविद्या के पदार्थ) पेचदार (आकर्षक) तो हैं मगर जो मुझ को (मेरे असली स्वरूप की ओर से) सीधा जानकर देखता है उस को तो वास्तविक राम के दर्शन हो जाते हैं, और जो उलट (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी काली जुल्फों को) देखता है उसको ("राम" शब्द का उलट "मार") अविद्याका साँप काट डालता है।

---

१ प्यारे की जादू भरी दृष्टि २ आनन्द रूपी शराब की क़िस्म वाले मधे को पीने वाला अमृत की ओर जाने वाला मार्ग या अमृत स्वरूप ३ (माया रूपी) काली घनघोर जुल्फें ४ पेचदार. ५ लेकिन. ६ राम का दर्शन ७ साँप (सर्प)

[५८]

राग भैरवी ताल केहरवा

(१) बिछुड़ती दुलहन[1] वतन[2] से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है।
कि फिर न आने की है कोई दब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १॥

[५८]

(१) जब लड़की पति के साथ विदाई लाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है, तो लड़की और माता पिता के रोमांच हो जाते हैं और घबराये हुए गला रुक जाता है। लड़की के घर वापिस फिर आने की कोई आशा मालूम नहीं होती, इसवास्ते सर्वदा की जुदाई होते देख कर माता पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

१ विवाहित लड़की २ घर ३ उपाय रास्ता

(२) यह दीनो[1]-दुन्या तुम्हें मुबारिक, हमारा दुलहा[2] हमें सलामत[3]।
पै याद रखना, यह आख़िरी छब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २ ॥

---

(२) (लड़की फिर मन में यह कहने लगती है) कि हे माता पिताजी! यह घर और आप की दुन्या तो आपको मुबारिक हो और हमारा पति हमको मगर यह (जुदा होते समय की) आख़री छब (अवस्था) ज़रूर याद रखनी, "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है" ॥ ऐसे ही जब पुरुष की वृत्ति रूपी लड़की (अपने) पति (स्वस्वरूप) के साथ वियाही जाती अर्थात आत्मा से तदाकार होती है तो उसके मात पिता (अहंकार और बुद्धि) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे बे बसीके रुकता जाता है, और उस वृत्ति को अब वापिस आते न देखकर कर सर्व इंद्रियों में रोमांच हो जाता है, उस समय वृत्ति भी अपने संबन्धीयों से यह कहती मालूम देती है, कि ऐ अहंकार रूपी पिता! और बुद्धि रूपी माता! यह दुन्या अब तुम्हें मुबारिक हो और हमको हमारा दुलहा (स्वस्वरूप)।

---

१ धर्म और संसार अर्थात लोक परलोक २ विवाहित लड़का पति. ३ सलामत.

(३) है मौत दुन्या में बस ग़नीमत[1], ख़रीदो राहत[2] को मौत के भाओ।
न करना चूं तक, यही है मज़हब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ ३ ॥

(४) जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख़्वाबे-ग़फ़लत[4] है सख़्त, ऐ जाँ!।
फ़्लोरोफ़ारम हैं सब मतालब[5], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ४ ॥

---

(३) (अहंकार की) यह मौत दुन्या में अति उत्तम है, और इस मौत के दुन्या के, सब आरामों के भाव ख़रीदलो, इस में चूं चरा (क्यों, कैसे) न करना ही धर्म है। यद्यपि इस (मौत) को ख़रीदते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

(४) हे प्यारे! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो यह तो घोर स्वप्न है, क्योंकि यह सब विषय के पदार्थ तो फ़्लोरोफ़ारम दवाई की तरह हैं जिस को सूंघने (अर्थात भोगने) से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है।

---

१ उत्तम. २ आराम. ३ धर्म. ४ कुबुद्धि अवस्था है ५ इच्छाएँ, प्रयोजन, उद्देश, मुरादें, मतलब.

(५) ठगों को कपड़े उतारदेदो, लुटा दो अस्बाबो-मालोज़र सब।
खुशी से गर्दन पे तेग़[1] धर तब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ५ ॥

(६) जो आर्ज़ू को है दिल में रखते, हैं बोसा[2] दीवाना सग[3] को देते।
यह फूटी क़िसमत को देख जब कब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ६ ॥

(७) कहा जो उसने[4] उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के प्यारे अर्जुन!।
यह सुन के नादाँ के खुश्क हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ७ ॥

---

(५) ठगों को कपड़े उतार कर देदो और माल अस्बाब सब लुटा दो, और (अहंकारकी) गर्दन पर खुशी से तलवार रखदो, चाहे तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे (मगर जब तक आनन्द से अपने आप अहंकार को नहीं मारोगे तब तक किसी प्रकार का भला आप का नहीं होगा।

(६) जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चुम्मा (बोसा) देते हैं, ऐसी फूटी प्रारब्ध को देख कर रोमाच हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

(७) जब उस (कृष्ण) ने अर्जुन को कहा, कि सर्व सम्बन्धियों को टुकड़े २ कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी (अर्जुन) के खुश्क होंट हो जाते हैं, और रोमाच होते हैं, और गला रुकता है।

---

१ तलवार, २ चुम्मा ३ पगला कुत्ता ४ यहाँ कृष्ण से अभिप्राय है.

(८) लहू का दरया जो चीरते हैं, हैं तख़्त पाते वोही हक़ीक़ी[1]।
तअल्लुक़ों[2] को जला भी दो मन, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥८॥

(९) है रात काली घटा भयानक, गज़ब दरिन्दे[3] हैं, घने जंगल।
अकेला रोता है निफ़्ल[4] या रब! खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥९॥

(१०) गुलों[5] के बिस्तर पे ख़्वाब ऐसा, कि दिल में आँखों[6] में ख़ार[7] भर दे।
है सीना[8] क्यों हाथ से गया दब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥१०॥

---

(८) (फिर कृष्ण जी कहते हैं कि ऐ प्यारे अर्जुन!) जो पुरुष लहू का दरया (अर्थात् संबन्धियों को) चीरते हैं (मारते हैं) वह ही (स्वराज्य) असली तख़्त पाते हैं, इसलिये ऐ प्यारे! सर्व सांसारिक संबन्धों को जला भी दो, पर यह सुन कर उस अर्जुन के रोमांच होते हैं, और गला रुका जाता है।

(९, १०) (ऐसा स्वप्न आ रहा है कि) रात काली है, भयानक घटा छा रही है, क्रूर वा रुधिर के प्यासे पशु (शेर इत्यादि) हैं और बड़ा भारी जंगल है, उस वन में लड़का अकेला रोता है रोमाञ्च हो रहे हैं, गला रुक रहा है। मगर पुष्पों के बिस्तर पर ऐसा भयानक ख़्वाब आ रहा है कि दिलमें और आँखों में काँटे भर दे, परन्तु ऐ प्यारे! हाथ से छाती क्यों दब गयी? जिस कारण ऐसा भयभीत स्वप्न आ रहा है, और रोमाञ्च होते जाते हैं तथा गला रुके जाता है।

---

१ वास्तव में वा असली स्वराज्य २ सम्बन्धों को ३ पशु ४ बच्चा ५ पुष्पों के ६ आँखों में ७ काँटे ८ छाती

(११) न बाक़ी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से जम के बैठे।
है पिछला लिक्खा पढ़ा भी ग़ायब[1], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ११ ॥

(१२) है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की ताबो-ताक़त[2]
न असर करता है नैशे-अक़रब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १२ ॥

(१३) पीये निगाहों के जाम[4] रज कर, न सिर की सुद्ध बुद्ध रही न तन की।
न दिन ही सूझे है, नै[5] तो अब शब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १३ ॥

---

(११) इस विचार (संकल्प) से (गंगा किनारे) जम कर बैठे थे कि अब बाक़ी कोई विद्या नहीं छोड़ेंगे, मगर अब तो पिछला लिखा पढ़ा भी गुम हो गया है; रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है।

(१२) पट्ठों में ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने की भी ताक़त नहीं रही, और न अब बिच्छू का डंक ही कुछ असर करता है, बल्कि ऐसी हालत हो रही है "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुका जाता है"।

(१३) प्यारे की दृष्टि (दर्शन) रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रज कर पिये हैं कि अपने सिर और तन की भी सुद्धिबुद्धि नहीं रही। अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नज़र आवे है, बलकि रोमांच हो रहे हैं, और गला रुका जाता है।

---

१ गुम गया, २ हिम्मत और बल ३ बिच्छू का डंक ४ प्याले ५ नहीं ६ रात.

(१४) हवासे ख़मसा[1] के बन्द थे दर[2], किधर से क़ाबिज़ हुआ है आकर।
बला का नश्शा, सितम[3], तअज्जुब खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ १४ ॥

(१५) यह कैसी आंधी है जोशे मस्ती की, कैसा तूफ़ाँ सरूर[4] का है!।
रही ज़मीं मह[5] न मेहरो-कौकब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ १५ ॥

(१६) थीं मन के मन्दिर में रक़्स[7] करतीं, तरह तरह की सी ख़्वाहिशें मिल।
चिराग़े-ख़ाना[8] से जल गया सब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ १६ ॥

---

(१४) पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों के दरवाज़े तो बन्द थे, मगर मालूम नहीं कि किस तरफ़ से यह (मस्ती का ज़ोर) अन्दर आकर क़ाबिज़ हो गया है जो बला का नशा है और सितम ढा रहा है, जिससे रोमांच खड़े हो रहे हैं, और गला रुके जा रहा है।

(१५) यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा छा रही है और निजानन्द का जोश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चाँद, सूर्य, तारे की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही, अर्थात् द्वैत बिलकुल भासमान न रही, बल्कि रोंगटे खड़े हैं और गला रुका हुआ है।

(१६) मन रूपी मन्दिर में जो नाना प्रकार की इच्छाएँ नाच रही थीं, वह घर के दीपक से (आत्मानुभव से) सब जल गयीं, अर्थात् अपने अन्दर ज्ञान अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सर्व प्रकार के संकल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया।

---

१ पाँचों ज्ञान इन्द्रियों के. २ दरवाज़े. ३ बड़े ग़ज़बका मालूम. ४ आनन्द ५ चाँद ६ सूर्य और तारे ७ नाच करती. ८ घर का दीपक स्वयमात्मा के प्रकाश.

(१७) है चौड़ चौपट यह खेल दुन्या, लपेट गंगा में इस को फेंका।
मरा है फ़ीला[1] उड़ा है अशहब[2], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १७ ॥

(१८) पड़ा है छाती पे धर के छाती, कहां की दुई[3] कहां की वहदत[4]।
है किस को ताक़त बियान की अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १८ ॥

(१९) यह जिस्मे-फ़र्ज़ी[5] की मौत का अब, मज़ा समेटे से नहीं सिमिटता।
उठाना दुभर[6] है वेहमे क़ालिब[7], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १९ ॥

---

(१७) यह दुन्या शतरञ्ज के खेल की तरह है, इस सारी को लपेट कर अब गंगा में फैंक दिया, यह फीला मरा और यह घोड़ा मरा, यह देख कर रोम खड़े हैं अब गला रुके है।

(१८) अब प्यारा छाती पर छाती धर कर पड़ा है, अब तो कहाँ की द्वैत और कहाँ की एकता है! किस को बताने की अब ताक़त है, केवल रोंगटे खड़े हैं और गला रुके है।

(१९) (यह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है?) यह संकल्पमयी (भासमान) शरीर की मौत का आनन्द है जो समेटे से भी नहीं सिमिटता है। अब तो (इस आनन्द के भड़कने से) यह पंचभौतिक शरीर उठाना भी कठिन हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे रोम खडे हैं और गला रुक रहा है।

---

१ हाथी २ घोड़ा ३ द्वैत ४ एकता ५ कल्पित शरीर ६ कठिन, दुश्वार ७ भ्रम का शरीर.

(२०) कलेजे ठंडक है, जी[1] में राहत[2], भरा है शादी[3] से सीनाये राम[4]।
हैं नैन[5] अमृत से पुर, लबा लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २०॥

[५६]

ग़ज़ल भैरवी ताल पश्तो

कैसे रंग लागे अब भाग जागे, हरी गयी[6] सब भूक और नग[7] मेरी।
चूड़े साँच स्वरूप[8] के चढ़े हम को, टूट पड़ी जब पांच की घँग[9] मेरी॥
तारों संग[10] आकाश में लशकती[11] है, बिन डोर अब उड़ी पतंग[12] मेरी।
झड़ी नूर[13] की बरसने लगी जोरों[14], चंद सूरमें एक तरंग मेरी॥

(२०) कलेजे (हृदय) में शान्ति है और दिल में अब चैन है, खुशी से राम का हृदय भरा हुआ है, और नैन (आनन्द के) अमृत से लबालब भरे हुये हैं अर्थात् आनन्द के मारे आँसू टपक रहे हैं, और रोम खड़े हैं तथा गला रुक रहा है।

१ चित्त में २ चैन ३ खुशी ४ राम का हृदय ५ चक्षु, ६ उड़ गयी दूर हो गयी ७ शरम ८ सत्यस्वरूप ९ पहनने का कड़ा यहां अभिप्राय अहंकार से है १० साथ ११ चमकती १२ यहां वृत्ति से अभिप्राय है १३ प्रकाश की वर्षा, १४ ज़ोर से.

[६०]

ग़ज़ल क़व्वाली

बिठा कर आप पैहलू[1] में, हमें आँखें दिखाता है।
सुना बैठेंगे हम सखी, फ़क़ीरों को सताता है॥ १॥
अरे दुन्या के बाशिन्दो[2]! डरो मत बीम[3] को छोड़ो।
यह शीरीं[4]-रू तो मिसरी है, भवें नाहक़[5] चढाता है॥ २॥
यह सलवट[6] डालना चेहरे पे गंगा जी से सीखा है।
है अन्दर से महा शीतल, यह उपर से डराता है॥ ३॥

[६०]

(१) राम का शरीर जब रोगी हुआ था तो राम अपने (प्रेमात्मा) स्वरूप से यूं कहते हैं:—ऐ प्यारे (प्रेमात्मा) अपने समीप बिठला कर हमें आँखें दिखलाता है, यह याद रख, हम सखी कह बैठेंगे, क्या फ़क़ीरों को सताता है?

(२) ऐ संसारी लोगो! मत डरो, भय को छोड़ दो, क्योंकि यह मधुर मुख वास्तव में मिसरी रूप है परन्तु भवें व्यर्थ चढ़ा लेता है (अर्थात् ऊपर २ से कोप में आ जाता है और यह भी व्यर्थ)।

(३) चेहरे पर बल डालना (त्योरी चढ़ाना) हमारा प्यारा स्वरूप गंगाजी से सीखा है (क्योंकि बहते समय गंगा के जल पर भँवर पड़ते हैं मगर अन्दर से जल बिलकुल ठंडा होता है, वैसेही यह प्यारा) अन्दर से महा शीतल है और ऊपर से डराता है।

१ अपने पास २ बसने वाले, निवासी ३ डर, ख़ौफ़ ४ मधुर मुख मीठे बोल वाला. ५ व्यर्थ ६ माथे पर बल, त्यूरी

धनावट की जबीं पुर[1] चीन है उलफ़त[2] से मुलव्व[3] दिल।
धनावट चालबाज़ी से यह क्यों भरें में लाता है ॥ ४ ॥
अगर है ज़र्रः ज़र्रह[4] में बलकि लाखवें जुज़ में।
तो जुज़्व[5]-ओ-कुल भी सब यह है, दिगर भट उड़ ही जाता है ॥५॥
निगाहे-ग़ौर रख क़ायम ज़रा बुरक़ाः[6] को ताके जा।
यह बुरक़ा साफ़ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है ॥ ६ ॥
तलातम[7]-खेज़[8] चेहरे-हुस्नो[9] ख़ूबी है अहाहाहा।
हवास-ओ-होश की किश्ती को दम भर में बहाता है ॥ ७ ॥

---

(४) प्यारे की बलों से भरी ललाट केवल बनावटी है, क्योंकि दिल उस का प्रेम से लबालब भरा हुआ है, मगर मालूम नहीं कि यह बनावटी चालबाज़ी से लोगों को भरें में क्यों ले आता है।

(५) अगर परमाणु मात्र में यह है और उस के लाखवें भाग में भी यह है, तब व्यष्टि और समष्टि भी योंही सब है, उस से अतिरिक्ति अन्य कुछ रह ही नहीं सकता।

(६) निरन्तर विचार-दृष्टि से (इस माया के) पर्दे को देखते जा, इस विवेक से यह पर्दा साफ़ उड़ जाता है और वह प्यारा (आत्मा) नज़र आने लगता है।

(७) अहाहाहा अपने सौन्दर्य का समुद्र क्या लहरें मार रहा है, जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है अर्थात् मन बुद्धि जिसे देख कर चकित हो जाते हैं।

---

१ बलवाली पेशानी से भरा हुआ माथा २ प्रेम ३ लबालब भरा हुआ. ४ परमाणु मात्र. ५ व्यष्टि और समष्टि. ६ बुरका. ७ पर्दा ८ लेहरें मारने वाला. ९ सौन्दर्यता का समुद्र.

हसीनों[1] ! हुस्न-ओ-खूबी है मेरी जुलफ़े[2]-सियाह का ज़िल[3] ।
अबस[4] साया-परस्तों[5] का पड़ा दिल तलमलाता है ॥ ८ ॥
अरे शोहरत ! अरे रुसवाई ! अरे तोहमत[6] ! अरे अज़मत[7] ।
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला[8] छुड़ाता है ॥ ९ ॥

यह कविता पंजाबी भाषा में है इस में राम महाराज ईश्वर को सेवक का पद देकर पुरुष को उपदेश कर रहे हैं।—

[६१]

ग़ज़ल फ़ैदरवा

वाह वा कामां[9] रे नौकर मेरा, सुगर सियाना[10] रे ।
नौकर मेरा (टेक)

(८) ऐ प्यारे सुन्दर पुरुषों ! (यह याद रखो) तुम्हारी खूबसूरती (सुन्दरता) जो है वह मेरी काली जुल्फ़ (माया) ही का केवल साया है, परछाईं (छाया) को पूजने वालों का (रूप से मोहित या माया-आसक्त पुरुषों का) चित्त व्यर्थ तलमलाता (टमटमाता) है ।

(९) ऐ यश ! ऐ अपयश ! ऐ कलङ्क ! ऐ बड़प्पन ! तुम सब अब लड़ २ के मरो, राम तो तुम सब से साफ पल्ला छुड़ाता है (तुम से पृथक होता है) ।

[६१]

(टेक) वाह वाह काम करने वाले नौकर मेरे, शाबाश ! वाह रे बुद्धिमान् नौकर मेरे, शाबाश ! ।

१ सुन्दर पुरुषो. २ काली जुल्फ़ अर्थात् माया ३ साया, प्रतिबिम्ब ४ व्यर्थ है. ५ रूप से मोहित होने वाले यहां अभिप्राय मायासक्त से. ६ कलङ्क. ७ बुजुर्गी, बड़ाई ८ अलग होता है. ९ काम करने वाला. १० बड़ा बुद्धिमान, अक़्लमन्द.

खिदमत करदयाँ कदे न डरदा, रोजे अजल[1] तो सेवा करदा।
लूं लूं[2] वे विच रैंहदा वसदा[3], हर शै-समाना[4] वे नौकर मेरा॥ वाह वाह० १

जद मौला[5] मौला पन[6] छडदा, नौकर नखरे टसरे फडदा।
फिरभी टैहल[7] ओह पूरी करदा, हर नाच नचानारे[8] नौकर मेरा॥ वाह वाह० २

---

(१) मेरा नौकर (ईश्वर) सेवा करने से कभी भी नहीं डरता है और अनादि काल से सेवा करता चला आता है और (वह ऐसा नौकर है कि) मेरे रोम रोम में बसता है और सर्व वस्तु में रम रहा है।

(२) जब ईश्वर अपने ईश्वरपन को छोड़ता है अर्थात् जब वह पुरुष अपनी ब्रह्मदृष्टि को त्यागता है तब ईश्वर रूपी नौकर भी उस समय नखरे टसरे करने लग पड़ता है, पर तो भी वह सेवा पूरी करता है। वाह वाह! हर तरह के नाच नाचने वाला (काम करने वाला) मेरा नौकर है।

---

१ अनादि काल से २ रोम रोम में ३ नौकर ४ प्रत्येक वस्तु में समाने वाला, सर्वव्यापक ५ ईश्वर ६ ईश्वरपन ऐश्वर्य ७ सेवा ८ हर नाच नाचने वाला और नचाने वाला

बादशाही छड अदंल[1] मल्ली, पर यह शाह कोलों फद चल्ली।
नौकर तूं उठ चौरी मली[2], हाय दीवा[3] राना नौकर मेरा ॥ वाह वाह० ३

ये समझी दा झगड़ा पाया, नौकर तों इतबार[4] उठाया।
विच दलीलां वक़्त गँवाया, विधहे[5] ग़ज़ब निशाना रे नौकर मेरा ॥ वाह वाह० ४

---

३) जब इस ने अद्वैत तत्त्व-दृष्टि छोड़ कर द्वैत-दृष्टि (मैं पापी, मैं पापात्मा वाली दृष्टि) पकड़ी, अर्थात् ईश्वरपना छोड़ कर उसकी चपरास इख़्तयार करी और बजाये उस से सेवा कराने के उस की खुद सेवा करनी शुरू की, (उसे चँवर करना शुरू कीया), तो शाह (सर्व के मालिक पुरुष) से सेवा कब तक सहन हो सकता था निदान (ईश्वर) उसे धोखे दे दे कर उस से वह ख़राब दृष्टि छुड़ा देता है) इस वास्ते मेरा यह नौकर (ईश्वर) बड़ा योग्य है।

४) जो पुरुष अपने नौकर (ईश्वर) पर अपना विश्वास नहीं रखता वह मूर्खता से उलट अपने घर में झगड़ा डाल लेता है, और व्यर्थ तरह तरह की दलीलों में समय खो बैठता है, अरे प्यारे ! मेरा नौकर तो हर काम में ग़ज़ब का निशाना लगाता है।

---

१ चपड़ास २ चँवर करा ३ भोला भाला, नेक. ४ निश्चय, यकीन ५ छेदे,

लाया अपने घर विच डेरा, राम अकेला सूरज जेड़ा।
नूर जलाल[1] है नौकर मेरा, दिगर[2] न जाना रे नौकर मेरा ॥५॥
-सुघड़ सियाना रे नौकर मेरा, वाह वाह कमा रे नौकर (टेक)

[६२]

रागनी झिंझोटी ताल चाचर

उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर, तरह २ की यह सारी दुन्या।
ये[3] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो ली[4] यह सारी
दुन्या ॥ १ ॥

मैं सांस लेता हूँ रंग घुलते हैं, चाहूँ दम में अभी उड़ा दूँ।
अजब तमाशा है रंग रलियां, है खेल जादू यह सारी दुन्या ॥२॥

पड़ा हूँ मस्ती में गर्की-बेगुद, न गैर[5] आया चला न ठैहरा।
नशे में खर्राटा सा लीया था, जो शोर वर्पा है सारी दुन्या ॥३॥

भरी है खुशी हर एक सरारी में, जर्रह जर्रह है मिहर[6] आसा।
लड़ाई शिकवे में भी मजा है, यह ख्वाब चौमा[7] है सारी दुन्या॥४॥

---

(५) राम बादशाह ने, जो अकेला सूर्य है, जब अपने असली घर (स्वस्वरूप) में स्थिती की तो नौकर अपना स्वयं प्रकाश ही पाया, अन्य कोई नौकर नज़र न आया।

अरे ! यह मेरा नौकर बड़ा बुद्धिमान् है। वाह वाह काम करने वाले मेरे नौकर !

---

१ तेज प्रकाश २ अन्य, दूसरा ३ क्या ४ हो गयी, ख़तम हो गयी। ५ दूसरा, अन्य ६ सूर्यवत् ७ विचित्र स्वप्न

गिफ़ाफ़ा देखा जो लम्बा चौड़ा, हुआ तहय्युर[1], कि क्या ही होगा।
जो फाड़ देखा, ओहो! कहूं क्या? हुई ही कय थी यह सारी दुन्यां॥ ५॥
यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरु न इस का, ख़तम न हो यह।
जो सत्य पूछो! है राम[2] ही राम॥ यह मैहज़[3] धोखा हैं सारी दुन्या॥ ६॥

वेदान्त

[६२]

आज़ादी

सोहनी ताल दीपचंदी

वल ऐ आज़ादा! खुशी की रूह[4]! उम्मीदों की जान।
बुलबुल सा दम से तेरे पेच खाता है जहान॥
मुलके-दुन्या के तेरे बस इक करशमा[5] पर लड़े।
खून के दर्या वहाये, नाम पर तेरे मरे॥
हाय मुक्ति! रुस्तगारी[6]! हाय आज़ादी! निजात[7]।
मक़सदे-जुमला मज़ाहब[8] है फक़त तेरी ही ज़ात॥

---

१ आश्चर्य हैरानी २ राम कवि के नाम से मुराद है ३ केवल ४ आनन्द के स्वरूप. ५ नाज़, नख़रा टसरा. ६ छुटकारा. ७ मुक्ति. ८ सब मतों या धर्मों का उद्देश्य या लक्ष्य.

उंगलियों पर यह्रो गिन्ते रहते हैं हफ़्ते[1] के रोज़।
कितने दिन को आयेगा यकशंबः[2] आज़ादी[3]-फ़रोज़॥
हम ग्रोदी के मुक़ैय्यद[4] मथी आज़ादी से दूर।
हो गये नशे पै लट्टू, बहरे-आज़ादी[5]-सरूर॥
साहिबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर।
क़ैदे-तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर॥
फंदे में फँस कर तड़फता मुर्ग़ है हैरान हो।
काश[6]! आज़ादी मिले तन को, नहीं तो जान को॥
सम्हा[7] जो लज़्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था।
सच कहूँ, लज़्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था॥
क्या है आज़ादी? जहां जब जैसा जो चाहें करें।
खाना पीना ऐश[8] गुलछर्रों में सब दिन काट दें?॥
राग शादी नाच इशरत[9]-जलसे रंगा रंग के।
बंगले, बाग़ात-आली योरोपियन[10] ढंग के?॥
कुर्ता[11] टोपी की नयी, फैशन निराला बूट का।
दिलकशो[12]-बेदाग़ मिलना बदन पर वह सूट का?॥
दिलको रंगत जिस्म की भाये शादी[13] बेखटके करें।
धर्म की आर्यान[14] सुनके ताक़ पर तै कर घरें?॥
भागरें फिटन के आगे कोचवान् का पोश पोश।
अबलकों[15] का वह निकलना, हिनहिना जोश जोश?॥

---

१ सप्ताह के दिन. २ रवि वार. ३ आज़ादी देने वाला. ४ आसक्त, क़ैदी. ५ आज़ादी के आनन्द की ख़ातिर ६ हैरान करे. ७ वाह, धन्य. ८ चित्त ९ विषय भोग. १० विषयानन्द ११ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान. १२ यूरोप तर्ज़. १३ . दिनाकैप. १४ सूर्ती. १५ चित्त, माथा आदि १६ घोड़े.

कोट पैहनाता है नौकर, जूता पैहनाये गुलाम।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द येनुतफ़ा हराम!॥
मुंह में गट गट सोडावाटर और सिगारों का धूंवा।
ज़ोफ़[1] को दिल में शिकायत, राम की अब जा[2] कहां?॥
क्या यह आज़ादी है? हाय! यह तो आज़ादी नहीं।
गोये[3]-चौगां की परेशानी है, आज़ादी नहीं॥
अस्प[4] हो आज़ाद सरपट, क़ैद होता है स्वार।
अस्प हो मुतलक़[5] इनां,[6] हैरान रोता है स्वार॥
इंद्रियों के घोडे छूटे बाग डोरी तोड़ कर।
यह मरा वह गिर पड़ा, स्वार सिर मुंह फोड़ कर॥
ताज़ी[7] तौसन तुंदख़ू[8] पर दस्तो-पा[9] ज़कड़े कड़े।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा,[10] जान के लाले पड़े॥
जाने[11]-मन! आज़ाद करना चाहते हो आप को।
कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[12] के साँप को?॥
हाँ वह है आज़ाद जो क़ादिर[13] है दिल पर जिस्म पर।
जिस्का मन क़ाबू में है, कुदरत[14] है शकलो-इस्म पर॥
ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[15] सर बसर[16]।
वार के फैंकू मैं इसपर दो जहां का मालो-ज़र[17]॥

---

१ कमज़ोरी २ स्थान, जगह ३ खेलने वाली गेंद ४ घोड़ा ५ पूरी, बिलकुल. ६ अपने बस में अर्थात लगाम डोरी से क़ाबू कीया हुवा. ७ अर्बी घोड़ा ८ बद-मिज़ाज, तेज़ ९ हाथ पाँव जकड़े हुए. १० स्वार का नाम है. ११ ऐ मेरी जान (प्यारे). १२ बग़ल, कफ़रियाली. १३ बलवान, वशी. १४ ताक़त, बल १५ आराम. १६ लगातार. १७ धन, दौलत

वेदान्त आलमगीर

[८४]

(१) गर कमिशनर हो, लाट साहब हो।
या कोई और ग़ैर साहब हो॥
हर कोई उस तलक नहीं जाता।
अधिकारी ही है दख़ल पाता॥
लेक[1] जब अपने घर में आना हो।
कौन है उस वक़्त जो मानेः[2] हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ़[3] उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त, ग़ैर से यारी।
तब तो कहना बजा था अधिकारी॥
यह तो जी! अपने घरकी विद्या है।
पाना इस को फ़र्ज़ सब का है॥
"मैं हूं खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो[4] इस्मो, नौकर, दास॥
"मैं हूं बेलौस, पाक[5], आला[6]-ज़ात" ।
जैहल[7] की हो कभी न जिस में रात॥
मैं हूं खुर्शेदे तेज़ अनवर[8] आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप॥

---

१ किन्तु. २ मना करने वाला ३ अफ़सोस, शोक ४ शरीर और नाम ५ स्वच्छ बेदाग, शुद्ध, पवित्र निर्लिप्त ६ परम स्वरूप ७ अविद्या, अज्ञान. ८ ९ प्रकाशों का प्रकाश.

वेद है मेरा एक ख़र्राटा।
भेद दुन्या का मेरा ख़र्राटा॥
राम कहता नहीं है सैकिंडहैंड[1]।
वह तो ख़ुद है श्रुति, न सैकिण्डहैंड॥
यह जो कमज़ोर आप होते हैं।
लुक़माये[2] तीन ताप होते हैं॥
हों न पढ़ाने के जो अधिकारी।
उन को मिलता नहीं है अधिकारी॥

(२) एक दफ़ा देव-ऋषि नारद ने।
रहम कर ख़ोक[3] से कहा उस ने॥
"चल तुझे ले चलेंगे हम वैकुंठ।
लीला अद्भुत विचित्र है वैकुंठ"॥
ख़ूक बोला राज़ब से तब नादाँ।
"क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वाँ[4]?॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो"।
ख़ोक बोला "मैं जाऊं काहे को?"॥
यह न समझा वहां जो जाऊंगा।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा॥
हविसे-दुन्या[5] के प्यारे शहतीरों!।
ऐ सतूनहाये दुन्या या बोहतान[6]!॥
तुम न जी[7] में ज़रा भी घबराओ।
खटका मुतलक़ न दिलमें तुम लाओ॥

---

१ दूसरे से सुनी सुनाई २ ग्रास ३ बराह, सूअर. ४ यहां से मुराद है दुन्या के लालच ६ झूटे ७ चित्त.

"हाय ! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[१] कर देगा, ज़बर[२] कर देगा ॥
तुम रखो अपने जी में इत्मीनान[३] ।
शक नहीं इस में रत्ती भर तू जान ॥
गर अवारज़[४] तेरे बदल देगा ।
साथ तुम को भी और कर देगा ॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
जालसाज़ी में, झूठ की जड़ में ॥
ख़ाक दुन्या की मत उड़ाइयेगा ।
असल अपना न भूल जाइयेगा ॥
"मैं हूँ यह जिस्म", फोहश बोली है ।
स्वांग छोड़ो, सितम[५] यह होली है ॥
(३) मिस्र की खोद लें जो मीनारें ।
हाये ! मुर्दों भरी वह मीनारें ॥
ममी मुर्दे उन्हों में रक्खे थे ।
ऐसी तरकीबों अक्लमन्दी से ॥
गो हज़ारों बरस भी हों बीते ।
मुर्दे आते नज़र हैं ज्यूँ जीते ॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशिन्दो ! ।
गुस्सा मत करना, ज़ाहिदो[६] ! रिन्दो[७] ॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम ? ।
ममी मीनारें बन गये हो तुम ? ॥

---

१ नीचा २ ऊंचा ३ धैर्य हौसला, तसल्ली ४ गर्द गिर्द, दुःख ५ ग़ज़ब की होली ६ कर्मकाण्डी ७ मस्त

जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
मर्मी क्यों हो हज़ार साल के अब। ॥
क्यों हो ज़िन्दा[1] बदस्ते मुर्दा आप।
नाम रौशन डुबोया उन का आप ॥
वह तो जीते थे, तुम भी जी उट्ठो।
मुर्दा बच्चे न उन के हो बैठो ॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम।
काम करते हो अपना दास का तुम ॥
बेटा वही सपूत होता है।
बाप से बढ़ के जो पूत होता है ॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषीयों का।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना ॥
जब यह कहता है एक नालायक़।
"भृगु मेरा बुज़ुर्ग था लायक" ॥
भृगु मनसूब[2] उस से होता है।
शर्म से अर्क़[3] २ रोता है ॥
दुःख मत दो उन्हें सताओ मत।
शर्म से सर नगूं[4] बनाओ मत ॥
नाम-लेवे[5], अजब मिले ऐसे।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे ? ॥
मूछ दाढ़ी लगा के बुड्ढे की।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा ॥

---

१ जीते जी मौत के हाथ होना २ नसल से निसबत रखना अर्थात् संबन्धी, ३ पसीना २ रोना ४ नीचे सिर, ५ नाम लेने वाले

उस को वाजिब है तरबीयत पाये।
वक्त पर यूं बुज़ुर्ग ही होगा ॥
उन की डाढी लगाया चाहते हो।
तरबीयत[1], से गुरेज़[2] करते हो ॥
है मुनासिब बुज़ुर्ग की ताज़ीम।
खुंदावर[3] चाहिये तकरीम[4] ॥
बूढ़ा खाता है खिचड़ी पतली रोज़।
नक्ल से बन क्या हो यह पीरोज़[5] ॥
प्यारे! बनियेगा आप जिन्दा पीर।
उन बुज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर ॥
नक्श जब है उतारता नक्काश।
नक्ता रहता है असल को नक्काश
नक्श यह गरचे बादशाह का हो।
फिर भी मुर्दा है, ख्वाह किसी का हो ॥
फेल[6] अतवार[7] ऋषीयों मुनीयों के।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते ॥
अमल ज़ाहिर जो उन को ज़ेबा थे।
वक्त था और, और ही दिन थे ॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे ॥
करके तक़्लीद[8] तुम बना ही लो।
सूरते शेर, नारह[9] क्योंकर हो? ॥

---

१ पालन पोषण तालीम पाना २ भागना ३ खमी करने वाली ४ इज्जत ५ मुरदा ६ कर्म ७ विधियाँ ८ ऊपर की रेखा देखो, मगर दर्शाकत के किसी की पैरवी करना, का नकल करना ९ मर्म

आओ तजवीज़ एक बतलायें।
ऋषी बनने की बात जतलायें॥
देह सूक्ष्म को और कारण को।
चीर कर चढ़िये मेहरे[1]-रौशन को॥
चढ़िये ऊपर को असल अपने को।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो॥
मेहरे-रौशन जो आत्मा है तेरा।
यह ही वासिष्ठ कृष्ण राम का था॥
उस में निष्ठा, नशस्त, कर मुख़तार।
छोड़िये ज़िकरो फ़िकर सब बेकार॥
नक़ल मत कीजीये फ़ेले-बेरूनी[2]।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी॥
ब्राह्मणो! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर घर फिरो पढ़ाते जा॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शिकायत करें, वह सच्चे हैं॥
जबर से, क़ैहर[3] से, मुहब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[4] से॥
वक़्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे॥
गंगा हर वक़्त बैहती रहती है।
साफ़ निर्मल जभी तो रहती है॥

---

१ प्रकाश स्वरूप सूर्य (आत्मा) २ बाहर के कर्मों की ३ सख़्ती या ग़ुस्से. ४ लिहाज़ से

काँटे बोता है, भूट हो जिस में।
याद रखना, है मौत ही उस में॥

ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकिन

[६५]

पिदरे[1]-मजनूं ने पिदरे-लैली[2] से।
गिरया[3]-ज़ारी से था कहा उसने॥
मेरी सारी रियासतें लीजे।
उमर भर तक गुलाम कर लीजे॥
मेरे लड़के को लैली आहू-चश्म।
दीजे, छोड़ दीजे, आख़िर रश्म[4]॥
पिदरे लैली ने फिर मुहब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के॥
मैं तो हाज़िर हूं लैली देने को।
उज़र कोई भी है नहीं मुझ को॥
पर वह आख़िर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[5] का टुकड़ा है॥
वह भी इन्सां शिकम से आयी है।
आसमाँ से तो गिर न आयी है॥
क़ैस[6] तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह मजनूं[7] है, इस में क्या शक है॥

---

१ मजनूं (एक आशिक़) का पिता २ लैली (माशूका) का पिता ३ रोते हुए ४ गुस्सा, सख्ती ५ वृक्ष, दरख़्त ६ मजनूं ७ पागल.

ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूँ ? ।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूँ ? ॥
मर्ज मजनूँ का पहले दूर करो ।
सिर से सौदा[1] अगर काफ़ूर करो ॥
शौक से लीजे, तब तुम्हारी है ।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है ॥
हाय ज़ालिम, सितमगर[2] ने रैहा ! ।
घाये नादाँ गरूर सूरते[3], जैहा ! ॥
देता लैली को वाये आज नहीं ।
और मजनूँ का तो इलाज नहीं ॥
और तो सब इलाज कर हारा ।
बचता मजनूँ नहीं वह बेचारा ॥
मारा मजनूँ बगैर लैली के ।
था न चारा[3] बगैर लैली के ॥
हिन्दू पंडित ! महात्मा साधो ! ।
जी कड़ा क्यों है ? रैहा को राह दो ॥
जीव मजनूँ बना है दीवाना ।
वहशते-गम छानता है वीराना ॥
दश्ते दुन्या[4] में व्हैशी आवारह ।
लैली "आनन्द" के लिये पारह[5] ॥
लैली समझे गुलों को चुनता है ।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है ॥
सर्व[6] को जान कर यह लैला है ।

---

१ पागलपन २ ज़ालिम (तकलीफ देने की सूरत वाला) ३ इलाज ४ दुन्या के जंगल ५ बेकरार अशान्त, अस्थिर ६ एक वृक्ष का नाम है

वैह्म से जान, अपनी खो दी है ॥
चश्मे शाह[1] को चश्मे लैली मान ।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ॥
असली आनन्दे-ज़ात से महरूम[2] ।
ख़ारो-ख़स[3] में मचा रहा है धूम ॥
गाह[4] आनन्द ज़र को माने है ।
बोल[5] में गाह ख़ाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को ।
नग रह जावे, नाक हाथों को ॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[6] ।
इस के पीछे फिरे हैं मुतहय्यर[7] ॥
सारी वहशत,[8] यह वादियां[9]-गर्दी ।
लैली ख़ातिर है, जुमला[10] सिरदर्दी ॥
लैली मिलते जुनूं[11] जायेगा ।
ब्रह्म विद्या विर्द[12] न जायेगा ॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म विद्या से ।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म विद्या से॥
शम हो पहले, ज्ञान पीछे हो ।
सेर[13] होलें, तआम[14] पीछे हो ॥
हाये पंडित ! गज़ब यह ढाते हो ।
उलटी गंगा पड़े बहाते हो ॥

---

१ हूर की आँख २ रहित, विहीन बेख़बर ३ ख़ाक मिट्टी में ४ कभी ५ मूत्र, पेशाब (अभिप्राय विषय भोग) ६ बदलने वाली ७ आश्चर्यवान, हैरान हुए ८ पशुपन ९ जंगलों में भ्रमण १० सब, कुल ११ पागलपन १२ विद्या, बगैर १३ तृप्त, सन्तुष्ट १४ भोजन, खाना

चैप से आन, अपनी गों की है ॥
चश्मे-आहू[1] को चश्मे-लैली मान ।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ॥
असली आनन्दे-ज़ात से महरूम[2] ।
ख़ाको-ख़स[3] में मचा रहा है धूम ॥
गाह[4] आनन्द ज़र को माने हैं ।
गोल[5] में गाह ख़ाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को ।
नंग रह जावे, नाक हाथी को ॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[6] ।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[7] ॥
सारी वहशत,[8] यह वादियों[9]-गर्दी ।
लैली ख़ातिर है, जुमला[10] सिरदर्दी ॥
लैली मिलते जुनूं[11] जायेगा ।
ब्रह्म विद्या बिदूं[12] न जायेगा ॥
शम दम आवेंगे ब्रह्म विद्या से ।
फ़िक्र आयेंगे ब्रह्म विद्या से ॥
शम हो पहले, ज्ञान पीछे हो ।
सेर[13] होलें, तआम[14] पीछे हो ॥
हाये पंडित ! ग़ज़ब यह ढाते हो ।
उलटी गंगा पड़े बहाते हो ॥

---

१ हिरन की आंख. २ रहित, बिहीन बेनसीब. ३ ख़ाक मिट्टी में. ४ कभी ५ भूत, ऐशाव (अभिमान विषय भोग). ६ बदलने वाली ७ आश्चर्यवान, हैरान हुए ८ पागलपन. ९ जंगलों में घूमना १० सब, कुल ११ पागलपन. १२ बिना, बगैर. १३ तृप्त, सन्तुष्ट. १४ भोजन, खाना.

यह इसी पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥
वेद-वालों! यह मौत मत रखना।
धीः[1] को, बुद्धि को घरमें मत रखना॥

लड़की घर में न ज़ेब[2] देती है।
धन पराया, फ़रेब देती है॥
ब्रह्म-विद्या का दान अब कर दो।
वरना इज़्ज़त से हाथ धो बैठो॥

वक़्त देखो, समय को सिंभालो!
ज़ात क़ायम हो, काया[3] पलटा लो॥
नंगो-नामूस अब इसी में है।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है॥

हुआ तारा तुम्हारा पूरब को।
ब्रह्म-विद्या चली है यूरप को॥
हिंद मजनू बना है दीवाना[4]।
तलमलाता है मिसले[5]-परवाना॥

मुज़दए[6]-वसल अब सुना देना।
खुशो खुर्रम[7] अदा से गा देना॥
वेद का फ़र्ज़ यह चुका देना
फ़र्ज़ अपना यह कर अदा देना॥

---

१ लड़की रूपी बुद्धि. २ अच्छी लगती है. ३ शरीर. ४ पागल. ५ पतंग की तरह. ६ अभेदता (आत्म साक्षात्कार) की खुशखबरी. ७ मग्न प्रसन्न.

[६६]

गुनाह

पाप क्या है? गुनाह कितने हैं?।
दाखिले[1] जेहल सारे फ़ितने[2] हैं॥
आत्मा जिस्म ही को ठहराना।
जूठ पापों का यह है लगधाना॥
आत्मा पाक[3], हस्त[4], बेहतर[5], है।
इल्म-वाहिद[6], सरूरे अकबर[7] है॥
जिस्म को शाने-आत्मा[9] देना।
रात को आफ़ताब[10] कह देना॥
किज़्बो-बुतलाँ[11] यही है पाप की जड़।
एक ही जेहल तीन ताप की जड़॥
क्या तकब्बुर[12] है? किबरयाई[13]-ए-ज़ात (को)।
बेच देना दरोग़[14] जिस्म के हात॥
क्रोध क्या है? जलाले[15]-वाहिदे ज़ात (को)।
बेच देना दरोग़ जिस्म के हात[16]॥
क्या है शहवत[17]? सरूरे पाके-ज़ात[18]।
बेच देना हक़ीर[19] जिस्म के हात॥

---

१ अज्ञान में प्रविष्ट २ फ़िसाद झगड़े ३ शुद्ध, पवित्र ४ असली नाम, वास्तव वस्तु ५ परम, सर्वोपरि ६ अद्वैत ज्ञान ७ घनानन्द ८ शरीर, देह ९ आत्मा का पद १० सूर्य ११ झूठ मूठ स्वयं झूठ, सुतरां झूठ १२ अभिमान, अहंकार १३ स्वरूप की बड़ाई १४ झूठा शरीर १५ अद्वैत स्वरूप की महिमा की रौनक १६ हाथ, कर १७ विषयानन्द १८ शुद्ध स्वरूप आत्मा का आनन्द १९ तुच्छ

क्या अदावत[1] है ? पाक वहदते-ज़ात[2] ।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
हिर्स[3] क्या ? सब पै कवज़ा-ए-कुल्ली[4]-ए-ज़ात ।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
मोह क्या है ? क़्यामे-यकसाँ[5] ज़ात ।
वेचदेना हक़ीर जिस्म के हात ॥
वस गुनाह क्या है ? आत्मा का हक़[6] ।
जहल[7] को छीन देना हक़ नाहक़[8] ॥
हस्ते[9]-मुतलक़ का जहल में संसर्ग[10] ।
तोशा[11] है पाप का, गुनाह का वर्ग[12] ॥

[६७]

कलियुग

सच्चे दिल से विचार कर देखो ।
तुम ने पैदा किया है कलियुग को ॥
"मैं नहीं हूं ख़ुदा" यह कलियुग है ।
"जिस्म ही हूं", यक़ीन यह कलियुग है ॥
"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है ।
चार वाकों का मत, यह कलियुग है ॥

---

१ शत्रुता, दुश्मनी २ अद्वैत स्वरूप आत्मा ३ लालच. ४ सर्व व्यापक की
कीयत (सर्वव्यापकता) का क़ब्ज़ा या अधिकार. ५ एक रस स्वरूप की
ता. ६ अधिकार ७ अविद्या, अज्ञान ८ व्यर्थ, बिना प्रयोजन ९ सतस्वरूप.
विद्य, द्गल्न ११ भार, असबाब, क़लीटा. १२ पत्ता, फल

खाऊं पीयूं मज़े उड़ाऊंगा।
हां विरोचन[1] का मत, यह कलियुग है॥
बंदा-ए-जिस्म[2] ही बने रहना।
सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है॥
जिस्म से कर नशिस्त[3] अपनी दूर।
हू[4] जांये आत्मा में खुद मसरूर[5]॥
जिस्म में गर निवास रक्खोगे।
ज्ञान से गर हिरास[6] रक्खोगे॥
पाप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़।
ताप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़॥
दूर कलियुग अभी से कीजेगा।
दान दीजेगा, दान दीजेगा॥
ठीक कर युग है, यह नहीं कलियुग।
दान कर दूर, कीजिये कलियुग॥
हिंद पर ग्रैहन[7] लग गया काला।
दान देने से थोल हो वाला॥

[८८]

दान

दान होता है तीन क़िस्मों का।
अन्न का, इल्म का, व इरफ़ां[8] का॥

---

१ असुरों के राजा का नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा कर के मानता और पूजता था २ शरीर का अनुचर, गुलाम या देहाभक्त बने रहना. ३ बैठक, स्थिति. ४ हो जाइये, या हो बैठिये ५ आनन्द, मग्न ६ भय ७ ग्रहण ८ ज्ञान दान (ब्रह्म-विद्या)

अन्न का दान एक दिन के लिये।
जिस्मे-वेरूं[1] को तक़्वीयत[2] देवे॥
इल्म का दान उमर भर के लिये।
जिस्मे-दोयम[3] को कर धनी देवे॥

दान इर्फ़ां का तो अबद[4] दायम।
कर सरूरे[5]-अज़ल में दे क़ायम॥
सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान॥

पंडितो! ज्ञान दान दीजेगा।
हिंद में आम दान दीजेगा॥
गर[6] यह कलियुग का गैहन[7] है बाक़ी।
कसर है ज्ञानदान देने की॥

लो चला टल गयी है, वाह वाह वा।
हिंद रौशन हुआ है, आहाहा हा॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम॥

हुक्मे नातिक़[8] है राम का तुम पर।
बंधिये बिस्तर को, अब उठाओ तुम॥
हिंद ही रह गया है क्या तुम को?।
आग में, जलमें, सिर छिपाओ तुम॥

---

१ बाहर (स्थूल) शरीर. २ पुष्टि. ३ यहां अभिप्राय सूक्ष्म शरीर से है. ४ नित्य, सदा के लिये ५ अनादि निजानन्द ६ यदि, अगर. ७ ग्रहण ८ अटल न टूटने वाला

[६९]

नै

ख़ाली बिलकुल है बांस की यह नै[1]
चन्द सूराख़दार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाई[3] ।
निकस उस नै से सात सुरें आई ॥
रागनी राग सब हुए ज़ाहिर ।
मुख़्तलिफ़ भाग सब हुए बाहिर ॥
एक ही दम[4] ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लीयों[5] उछल आया ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुख़्तलिफ़ ज़मज़में[6] बने क्योंकर ? ॥
सामया[7], बासरा[8], ख़्याली-अक़ल ।
सब में वासिल[9] हुआ, करे है नक़ल ॥
मर्द, औरत, गदा[10] में, शाहों में ।
क़ैहक़हों, चैहचहों में, आहों में ॥
क़ुतब[11] तारे में, मेहर[12] में, माह[13] में ।
झोंपड़े में, मेहलसरा, राह में ॥

---

१ बांसुरी. २ चुम्बन, प्रसन्नता. ३ बांसुरी बजानेवाला ४ स्वास ५ कलेजा आनन्द से इतना तेहराने लगा कि मसहूला अन्दर न समा सकी. ६ राग, गीत, सुरें. ७ सुनने की शक्ति ८ देखने की शक्ति ९ अभेद हुआ. १० साधु, फ़क़ीर. ११ ध्रुव तारा १२ सूर्य. १३ चांद.

एक ही दम का यह पसारा है।
सब में वासिल है, सब से न्यारा है॥
दारे[1]-दुन्या की इक तिही[2] नै में।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है।
सारी दुन्या तेरा पसारा है॥

[७०]

शीश मन्दिर

शीश मन्दिर में इक दफा बुल[3]-डाग।
आ फँसा तो हुआ बगूला आग॥
जौक़[4] दर जौक़ पल्टनें सग[5] थे।
ठट[6] के ठट लग रहे थे कुत्तों के॥
सख़्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये।
चार जानिब[7] से तैश[8] में आये॥
बिगड़ा मुंह उस का, वह भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे॥
जब यह भौंका, सदाये-गुम्बज़[9] से।
क्या ही औसाँ[10] बाख्ता हुए इस के॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर धाये!।
मर गया डाग, सिर को धुन कर धाये!॥

---

१ दुन्या का घर. २ ख़ाली (खोखले) बांसरी ३ एक प्रकार का कुत्ता ४ गिरोह के गिरोह. ५ कुत्ते ६ झुंड के झुंड. ७ चारों ओर से ८ गुस्सा ९ गुम्बज़ की आवाज़ १० आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त

शीश मन्दिर में आ के कुत्ता के।
जाहिले[1]-ग़ैर-शनू मरा भौंके॥
चैन में क्यों भरमता जाता है।
अपने आपे में क्यों न आता है॥

[७१]

दृष्टान्त

गौंड[1] मालिक मकान का आया।
मर्दे-दाना[2] ने जल्वा[3] फरमाया॥
रूये[4]-ज़ेबा[5] को हर तरफ पाया।
फुर्ते शादी[6] से सीना भर आया॥
फर्शे-अतलस नफीस झालरदार।
अतरो-अंबर लतीफ़ खुशबूदार॥
तख़्ते-ज़र्री[7] पै रेशमी तकिये हैं।
गद्दे-मख़मल के ज़ेब देते हैं॥
बैठा ठस्से से ज़ीनते-खाना[8]।
शुद्ध ख़ुशी दिल में, झूमता शाना[9]॥
जब नज़र चार सू[10] उठा देखा।
कुछ न अपने से मासिवा[11] देखा॥
गरचे वाहिद[12] था, पर हज़ारों जा[13]।
जल्वा[13] अफ़ग़न रूये-सफ़ा[14] देखा॥

---

१ द्वैत देखने वाला मूर्ख या अज्ञानी २ ईश्वर ३ ज्ञानी पुरुष ४ दर्शन ५ सुन्दर स्वरूप ६ आनन्द की अधिकता ७ सुनैहरी तख़्त ८ घर को शोभा देने वाला स्वस्वरूप ९ कंधे १० तरफ ११ इतर, अतिरिक्त १२ अद्वैत स्थान, १४ प्रकाशमान १५ शुद्ध स्वरूप.

गाह[1] मूछों को ताओ दे दे के।
सूरते-वीर[2] रस में आ देखा ॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का।
पान होंटों तले दबा देखा ॥
तेग़[3] मिसरी की देखने के लिये।
प्यारी प्यारी भवें चढ़ा देखा ॥
ग़ुंचः[4]-गुल की दीद[5] की ख़ातिर।
क्या तहे-दिल[6] से खिलखिला देखा ॥
अब्रे[7]-नैसां का लुतफ़ लेने को।
तार आँसू का भी लगा देखा ॥
ग़ैर देखे है जैसे इस तन को।
इस तरह इस से हो जुदा देखा ॥
अक्स[8] इक छोड़ असल को आवे।
सब वजूदों[9] में फिर समा देखा ॥
गोलियां पीली काली सुर्ख़ और सबज़।
मुंह से अपने निकाल बाज़ीगर ॥
आप ही देखता है अपने रंग।
आप ही हो रहा है मुतहय्यर[10] ॥
बैठ हर तरह शीश मन्दिर में।
ठाठी पट्टे ने बन बना देखा ॥
(सुषुप्ति) मस्त कारण शरीर बन, बैठा।
चार कूटों में लेटता देखा ॥ ५ (व्यष्टि)

---

१ कभी. २ वीर पुरुष के रूप में ३ तलवार ४ खिला हुवा पुष्प ५ दृष्टि ६ दिल भर कर. ७ वर्षा ऋतु का बादल ८ प्रतिबिम्ब. ९ वस्तुओं (शरीरों) में १० आश्चर्य, हैरान

(स्वप्न में) खुद जो जिस्मे-ख्याल को धारा।
जुमला[1] आलम ख्याल का देखा ॥ (समष्टि)
(जाग्रत में) जागी सूरत क़बूल की जब खुद।
सब को फिर जागता हुआ देखा ॥
तुझ से बढ़ कर हूँ, तेरा अपना आप।
मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा ? ॥
एक ही एक ज़ाते-वाहिद[2] राम[3]।
जुमला सूरत में जा बजा देखा ॥
गद्दी, तकिये से मैं नहीं हिलता।
हिलता किस ने सुना है या देखा ॥
क्यों खुशामद की बात करते हो।
शीशे मसनद[4] मकान ही कब था ॥
यह तो सब इक ख़्याली लीला थी।
मौज में अपनी आप ज़ाहिर था ॥
मौज भी आप, लीला खीला[5] आप।
लाल नुतक़ो[6]-जुबां, वां पर था ॥
नुतक़ में और शब्द में मौजूद।
एक वाहिद सफ़ोद रौशन था ॥

[७२]

फोहे[7]-नूर का खोना

ज़ेरे-नादिर[8] हुआ मुहम्मद शाह।
देहली उजड़ी जलील अबतरे[9]-आह ॥

१ समस्त २ अद्वैत तत्त्व ३ कवि का नाम और ईश्वर से भी मुराद है ४ गद्दी, तख़्त ५ खेल इत्यादि ६ अक़ल, समझ सब हैरान था. ७ हीरे का नाम ८ नादिर बादशाह के अधीन ९ बहुत बुरा

गरचे नादिर ने खूब ही ढूंडा।
न मिला कोहे-नूर का हीरा ॥
कह दिया इक हरीस[1] लौंडी ने।
है छिपाया कहाँ मुहम्मद ने ॥
"उस को पगड़ी में सीं के रखता था।
जुदा उस को कभी न करता था" ॥
फिर तो वेहद तपाक से आकर।
बोला नरमी से, प्यार से नादिर ॥
"ऐ शाहे-मेहर्बान्, मुहम्मद शाह!।
यार भाई है तेरा नादिर शाह ॥
पगड़ियां आज तो बदल लेंगे।
दिल मुहब्बत से खूब भर लेंगे ॥
रस्मे-उलफ़त[2] अदा[3] करो हम से।
यह मुहब्बत वफ़ा करो हम से" ॥
छुट गयीं गो हवाइयां मुंह पर।
ज़ाहिर पंदा[4] से बोला "हां हां" कर ॥
"शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह"!।
मारा बेबस रंगीला देहली-शाह ॥
थी मुहम्मद को ज़ाहरी इज़्ज़त।
यह तबद्दुल[5] था असल में जिल्लत[6] ॥
क़ीमते-ममलकत[7] से बढ़ कर था।
हीरा पगड़ी में उस को खो बैठा ॥

---

१ लालची २ प्रेम की रीति, रस्म ३ पूरी करो ४ ऊपर से देख कर ५ बदलना. ६ ख्वारी ७ सारे राज्य की कीमत

ऐ अज़ीज़ो ! यह इज़्ज़तो-दौलत ।
नफ़स नादिर है, पर सरे उल्फ़त ॥
दामे-तज़वीर[1] में न आजाना ।
जाँ न भरें में फस फसाजाना ॥
मिलओ पायदह[2] से हो खुर्सन्द[3] ।
या के हीरा बने हो दौलतमंद ॥
चैन पत्थर को है कहाँ हरगिज़ ।
अमन हीर बिना नहीं हरगिज़ ॥
जानी[4] जौहर से जानी इज़्ज़त है ।
बाकी मा औ[5]-मनी की इल्लत[6] है ॥
क्यों तू फलके खिताब लेता है ।
आ'मा का इताब[7] देता है ॥
तू करीम-जहाँ[8] है, दाता है ।
छोटा अपने को क्यों बनाता है ॥
सब को रौनक है तेरे जल्वे[9] से ।
तुझ को इज़्ज़त भला मिले किस से ॥
सनद सर्टीफिकेट डिग्री की ।
आर्ज़ू में है बंदे गम तन की ॥
तू तो माबूद[10] है ज़माने का ।
बंद मत हो किसी बहाने का ॥

---

१ दगा फरेब का जाल २ गर्व या मान का हेतु रूप धन या पारितोषिक ३ मगन ४ असली रत्न ५ अहंकार और धन इत्यादि ६ वास्ते, कारण ७ खफगी गुस्सा क्रोध ८ जहान का धनी (दाता) ९ मक्खार १० पूजने योग्य, पूजनीय

[७३]

खिताब व नपोलियन[1]

वाह रे नपोलियन ! नडर शाह-मर्द ।
टिड्डी दल फौज तेरे आगे गर्द ॥
"हालट[2] !" कह कर सिपाहे-दुश्मन को ।
लर्ज़ां[3] कर दे अकेला लशकर को ॥
जाँ बाज़ी में, शेर-मर्दी में ।
खुश खुशां दश्ते-ग़मनवरदी[4] में ॥
रोब[5] से और ग़ज़ब की सौलत[6] से ।
तू बराबर था हिन्दू औरत के ॥
राजपूतों की औरतों का दिल ।
न हिले, गरचे कोह[7] जाये हिल ॥
उन की जानब से शेर को चैलंज[8] ।
लैक शोहरत के नाम से है रंज ॥
पुश्ते-कुश्तों[9] के कर दिये हर सू[10] ।
खूं के जूए[11] भर दिये हर सू ॥
मुलक पर मुलक तू ने मारलिया ।
पर कहो, उस से क्या सँवार लिया ? ॥
देना चाहता था राज को वुसअत[12] ।
पर मिली हिर्सो-आज़[13] को वुसअत ॥

---

१ नपोलियन बादशाह के नाम खिताब, अर्थात मान पद २ खड़े हो जाओ. ३ कम्पा देना. ४ ग़म दूर करने के जंगलमें ५ प्रभाव ६ दबदबा, डर ७ पर्वत ८ बुलावा मुक़ाबला करने वास्ते ९ मरे हुओं के ढेर. १० हरतरफ ११ नदियें, नहरें, १२ विस्तार, विशालता १३ लालच, लोभ, आशा

दिल तो वैसा ही रह गया पियासा ।
जैसा जंगो-जदल[1] से पहिले था ॥

[७४]

सीज़र[2]

ऐ शहनशाहे-जूलयस सीज़र ! ।
सारी दुन्या का तू बना अफ़सर ॥
इतना किस्से को तूल क्यों खेंचा ? ।
दिल ज़िमीं में फ़ज़ूल क्यों खेंचा ? ॥
सैल दिल में रहा नश्रग्रव[3] खेज़ ।
यदशा[4] पैहलू में, मौजे-दर्द-अंगेज़[5] ॥
आ ! तेरी मंज़लत[6] को बढ़ायें ।
हिन्दू[7]-ए-कैवान् से भी परे जायें ॥
क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा ।
जिस में शै[8] आये वह है शै से बड़ा ॥
जुज़्व[9] कुल[10] से हमेशा छोटा है ।
छोटा कमरे से बक्स-च-लोटा है ॥
जबकि तुझ में जहान् आता है ।
आँख में पैहरो[11]-बर समाता है ॥
कोहो-दर्या-श्रो शैहरो स्वहरा[11] बाग़ ।
बादशाहो-गदा श्रो-बुलबुलो-ज़ाग़[12] ॥

१ लड़ाई. २ रूम के बादशाह का नाम. ३ श्रद्दर्द बढ़ाने वाला. ४ डर. ५ दर्द देने वाली लैहर. ६ पद ७ शनी तारे के सिरे से भी हट, ८ वस्तु. ९ टुकड़ा (हिस्सा). १० सारा, तामम, पूरा ११ पृथिवी और समुद्र. १२ जंगल. १३ कौवा, काक

इल्म में और शऊर[1] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे॥
खुद को महदूद[2] क्यों बनाते हो।
मंज़ल अपनी पड़े घटाते हो? ॥
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं॥
मुलके-सरसब्ज़ और ज़मीन् शादाब[3]।
हैं, शुआ[4] में तेरी सुराबो[5]-आब॥
शम्स[6] मर्कज़[7] नज़ामे-शमसी[8] का।
है नहीं, तू है आथा सब का॥
नूर तेरे ही से ज़िया[9] लेकर।
मिहर[10] आता है, रोज़ चढ़ बढ़ कर॥
अपनी किरणों के आब में खुद ही।
डूब मत मर सुराब में खुद ही॥
जान अपने को गर लिया होता।
फ़यज़ा आलम पै झट किया होता॥
सल्तनत में मती[11] चरिन्द व परिन्द।
राजे माहराजे होते ज़ाहद[12]-व-रिंद॥
ज़ात में हल[13] दिल किया होता।
हल उक़दा[14] को यूं किया होता॥

---

१ समझ, ज्ञान. २ परिच्छिन्न. ३ शुभ, आनन्ददायक पृथिवी. ४ किरण ५ मृगतृष्णा का जल. ६ सूर्य ७ केन्द्र. ८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम ९ प्रकाश. १० सूर्य. ११ अधीन, सेवक १२ परहेज़गार और मस्त अथवा कर्म कांडी और विरक्त. १३ प्रकाश, लीन १४ गुप्त भेद

हाथ में खड्ग हो कि चख़ा हो।
कलम हो या बलन्द झंडा हो॥
जुदा अपने को इन से जानते हैं।
इन के टूटे रंज न मानते हैं॥
आप का शूरवीर इस तन से।
जुदा माने हैं जैसे आहन[1] से॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया।
क्या हुआ गर कलम यह टूट गया॥
तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।
रंज़ो ग़म कैसा? असल या कर याद॥
ऐ ज़माँ[2]? क्या यह तुम में ताक़त है?।
ऐ मकाँ[3]! तुझ ही में लियाक़त है?॥
कर सका क़ैद मुझ को, मुझ को क़ैद,।
पतङ्ग से तुम हो कलअदम[4] नापैद[5]॥
फिकर के पाप के उड़ें धूएँ।
गर कभी हम से आन कर उलझें॥
पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुए डर के।
धज्जियाँ जेहल[6] की उड़ीं डर से॥

[७५]

शाहे ज़माँ[7] को वरदान

कैसरे हिन्द! बादशाह दावर[8]।
जागता है सदा शाहे-ख़ावर[9]॥

---

१ लोहा २ काल ३ देश ४ नाश ५ कटा ६ अज्ञान ७ ज़माने अर्थात् वर्तमान समय के बादशाहों को वरदान ८ इन्साफ़ करने वाला ९ पूर्व का बादशाह अर्थात् सूर्य

राज घर तेरे मगरबो-मशरक़ ।
चमकता है सदा शाहे-मशरक़[1] ॥
शाहे-मशरक़ की महज़ विधा है।
रानी विद्याओं की यह विद्या है ॥
जाहे-ज़ाती[2], रहे क़रीब तुम्हें ।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥
नूर[3] का कोह[4] दमाग में दमके ।
हिंद का नूर ताज पर चमके ॥
तेरे फिक्र -खियाल के पीछे ।
शीरीं चशमा[5] अजीब बहता है ॥
यह ही चशमा था व्यास के अन्दर ।
ईसा अहमद इसी में रहता है ॥
इस ही चशमे से वेद निकले हैं ।
इस ही चशमे से कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे-हयात[6] यां पीजे ।
दु:ख काहे को यार सहता है ? ॥
पिछले ऋषियों ने इसी चशमे से ।
घड़े भर भर के आब[7] के रक्खे ॥
दुन्या पलटे, ज़माना बदलेगा ।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
मिहर[8] डूबेगा, क़ुतब[9] टूटेगा ।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥

---

१ सूर्य २ स्वस्वरूप की विभूति या पदवी ३ प्रकाश ४ पर्वत, यहां कोहेनूर (प्राण के हीरे) से अभिप्राय है ५ मीठा सरोवर. ६ अमृत ७ जल, यहां अमृत से अभिप्राय है ८ सूर्य ९ ध्रुव तारा

रस्मों[1]-मिल्लत तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा॥
ऐसे चश्मे से भागते फिरना।
प्यासी पानी को ताकते फिरना॥
शिफ़ना[2] रखेगा बेहूदे-ख़ातरे आब[3]।
जा पड़ा आग तापते फिरना॥
राम को मानना नहीं काफ़ी।
जानना उसका है फ़क़त शाफ़ी[4]॥
बर्कले, कैंट, मिल्ल, हैमिलटान्[5]।
जुस्तजू[6] में तिरी हैं सरगर्दान्[7]॥
बाइबल, वेद, शास्त्र, कुरआन।
भाट तेरे हैं, ऐ शाहे-रहमान[8]।
अपनी अपनी लियाक़तें ले कर।
तर ज़ुबान[9] गा रहे हैं तेरी शान॥
मद्दाह ख़्वाँ[10] शायरों को दो इनआम।
पर्दे-दरबारे-ख़ासो-जलसा ए आम॥

[७६]

आनन्द अन्दर है

सग[11] ने हड्डी कहाँ से इक पाई।
शेरे-नर देख फ़िक्र यह आई॥

---

१ रस्म रिवाज २ प्याला ३ जल अर्थात् अमृत के लिये ४ आराम देने वाला पाप से मुक्त करने वाला, ५ यह सब यूरप के फिलास्फरों (तत्त्व वेत्ताओं) के नाम हैं ६ तलाश ७ भटकते फिरते ८ कृपालु महाराजा ९ मीठी बातों से १० स्तुति करने वाले ११ कुत्ता

कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले।
हड्डी इक उस से शेर छीन न ले॥
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह।
भागा राई[1] को तुम दया कर यह॥
अज़ीम[2] चुभती थी मुंह में जब रग को।
खून लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे-नर, बादशाहे-तन्हा[3]-रौ।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ सो सौ॥
वह तो न आँख भरके तकता है।
सगे-नादां[4] का दिल धड़कता है॥
स्वर्ग की नेमतें हों, दुन्या की।
हैं तो वह हड्डियां ही मुर्दे की॥
इन में लज्ज़त जो तुम को आती है।
दर असल एक आत्मा की है॥
ऐ शहनशाहे-मुलक! ऐ इन्दर!।
छीनता वह नहीं यह ज़रो-गौहर[5]॥
राज दुन्या का और स्वर्गों-बहिश्त्।
बाग़ो-गुलज़ारो-संगमरमरे-खिश्त[6]॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों।
बारे[7]-ग़म, यह तुम्हें मुबारक हों॥

---

१ सेवक. २ हड्डी ३ अकेला चलने वाला राजा ४ मूर्ख कुत्ता. ५ स्वर्ण (धन) और मोती. ६ संगमरमर की ईंटें ७ ग़म का भार

हैयता यह तुम्हारे मख़्लूक़ात ।
क़ब्ज़ करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
आक़े-मन ! नूरे-ज़ात ही का नाथ[1] ।
फ़ौज रखता नहीं है सूरज साथ ॥
जो गुनी[2] ज़ात में हैं हीरो-वीर[3] ।
अल्लाग़र दर मजूसे-घर[4] ना वीर ॥
सब दहानों[4] से वह ही खाता है ।
स्वाद खाने भी मन के आता है ॥
"यह हूं मैं", "यह हो तुम", यह असलीयत[5]
मोजज़ा[6] है तिरा, न असलीयत ॥
सूरते-अश्काल[7] सब करामत है ।
तेरी कुदरत की यह अलामत है ॥

[६७]

सकन्दर को अवधूत के दर्शन

क्या सकन्दर ने भी कमाल किया ।
गुलगुला शोरो[9]-शर का डाल दिया ॥
बर लबे-आब[10] सिन्ध जब आया ।
डट गया फ़ौज लेके, फ़िल्हाया ॥
उन दिनों एक सालिको-मालिक[11] ।
से मुलाक़ी[12] हुआ, रहा हक्‌ दक्‌ ॥

---

१ मालिक. २ अमीर. ३ बहादुर योधा ४ मुख. ५ मुर्दे. ६ ढोंग ७ रूपाकार. ८ शकलें, मूरतें, नाम रूप ९ शोर इत्यादि. १० दरया सिन्ध के किनारे. ११ ईश्वर भक्त, विरक्तात्मा या मस्त पुरुष १२ मिला

क्या अजब था फकीर आलमगीर।
क़लब[1] साफी मिसाले-गङ्गा नीर[2]॥
उस की सूरत जमाले-सुल्तानी[3]।
गुफतगू में जलाले[4]-इरफानी॥
इस स्वामी ने कुछ न गिरदाना[5]।
ज़ोरो-ज़ारी[6]-ओ-ज़र से फुसलाना॥
शीशा आयीनागर[7] को दिखलाया।
दंग ज़ूं आयीना वह हो आया॥
रह के शशदर, वह बादशाहे-जहां।
बोला साधू से सूरते-हैरान॥
हिंद[8] में क़दर न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनां[9] को।
क़दम रंजा[10] करो मेरे हां को॥

[७८]

अवधूत का उत्तर

क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला।
रास्ती[10] पर कलाम को तोला॥
कोई मुझ से नहीं है खाली आं[11]।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥

---

१ शुद्ध अन्तःकरण २ गंगा जल के समान ३ अत्यन्त सुन्दरता ४ स्पष्ट महिमा ५ समझा. ६ ज़बरदस्ती, फुसलाना, भय और धन का लालच. ७ सकन्दर की उपाधि है ८ देश का नाम ९ तकलीफ़ के कीजिये १० सचाई. ११ समय, ज़माना.

आऊं आऊं कहाँ किधर को मैं ? ।
हर मकाँ[1] मुझ में, हर मकाँ में मैं ॥
यह जो लाइत[2] से निदा[3] आई ।
यवन[4] बेचारे को नहीं भाई ॥
फिर लगा सिर झुका के यूं कहने ।
इस के समझा नहीं हूं मैं मैंने ॥
"मुश्को-काफ़ूर, श्रतरो अम्बर यू ।
अस्पो-गुलज़ार[5], नाज़नीं-खुशरू[6] ॥
सीमो-ज़र[7], गिरामी[8]-समा-ओ-सोद[9] ।
मेवे हर नौ[10] के, आबदारो-रसद[11] ॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत ।
हर तरह होगी आप की ख़िदमत ॥
चलियेगा साथ मेरे यूनां को ।
चल मुबारक करो मेरे हां को" ॥
मस्त[12] मौला से तब यह नूर झड़ा ।
आस्मां से सितारह टूट पड़ा ॥
"झूठ झूठों ही को मुबारक हो ।
ऊहल[13] नीचे दबे जो तारक[14] हो ॥
मैं तो गुलशन हूं, आप ख़ुद गुलरेज़[15] ।
ख़ुद ही काफ़ूर, ख़ुद ही अम्बर[16]-रेज़ ॥

---

१ देश. २ प्रत्यक्ष धाम, पूर्ण स्वरूप. ३ आवाज़. ४ सिकन्दर से अभिप्राय है. ५ घोड़े और बाग़. ६ सुन्दर स्त्री, प्रिया. ७ चाँदी सोना. ८ उत्तम वस्त्र. ९ राग रंग. १० हर प्रकार. ११ बहते हुए झरने. १२ मस्त फ़क़ीर फिर यूं बोला. १३ अज्ञान, अविद्या. १४ अन्धकार अथवा अन्धा. १५ फुल झड़ी, पुष्पों के गिराने वाला. १६ अंबर बाहने वाला अर्थात् सुगन्ध वाला.

सोने चांदी की आबो-ताब हूं मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूं।
दमक हीरे की, आबे-दुर[1] मैं हूं॥

खुश मज़ा सब तुआम[2] हैं मुझ से।
अस्प की खुश खराम[3] हैं मुझ से॥
रक्स[4] है आबशार[5] का मेरा।
नाज़ो-इश्वा[6] है यार का मेरा॥

अर्फ़ बर्फ़ सुनैहरी ताज मेरा।
मेरा मोहताज़ है, मोहताज़ मेरा॥
चान्दनी मुस्तार[7] है मुझ से।
सोना सूरज़ उधार ले मुझ से॥

कोई भी शै[8] जो तेरे मन भाई।
मैंने लज़्ज़त अता[9] है फ़रमाई॥
दे दिया जब फिर उस का लेना क्या।
शाहे-शाहां को यह नहीं ज़ेबा[10]॥

करके बख़शिश मैं बाज़[11] क्यों लूंगा?।
फैंक कर थूक चाट क्यों लूंगा॥
प्रकृति को तो ईद[12] मुझ से है।
मांगू अब मैं, बईद[13] मुझ से है॥

---

१ मोती की चमक २ खुराक, भोजन ३ उत्तम चाल. ४ नृत्य ५ पानी का झरना. ६ नाज़ नखरे. ७ मांगी हुई ८ वस्तु ९ बख़शी १० योग्य, उचित. ११ फिर वापस १२ आनन्द मंगल १३ दूर (अनुचित)

खुद खुदा हूं, मक्रे[1]-पाक हूं मैं ।
खुद खुदा हूं, ग़रूरे-पाक[2] हूं मैं ॥"
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उट्ठा ग़ज़ब से असकन्दर ॥
चेहरा गुस्से से तमतमा आया ।
खूने-रग जोश मारता आया ॥
खैंच तलवार तान ली झट पट ।
"जानता है मुझे तू ऐ नट खट !" ॥
शाहे-ज़ी-जाहे-मुल्के दारा जम[3] ।
मैं हूं शाह सकन्दरे-आज़म[4] ॥
मुझ से गुस्ताख़ गुफ्तगू करना ।
भूल बैठा है क्यों अभी मरना ? ॥
काट डालूंगा सिर तेरा तन से ।
ज़रबे शमशेर से अभी दम से ॥
देख कर हाल यह सिकन्दर का ।
साधु आज़ाद खिलखिला के हँसा ॥
"किज़्ब[5] ऐसा तू ऐ शहनशाह ! ।
उमर भर में कभी न बोला था ॥
मुझ को काटे ! कहां है वह तलवार ? ।
दाग़ दे मुझ को ! है कहां वह नार[6] ? ॥
हां गलायेगा मुझे ! कहां पानी ? ।
बाद[7] सुखा ही ले । मरे नानी ॥

१ शुद्ध धाकमन्द. २ शुद्ध अहंकार. वा शुद्ध आत्मा. ३ जमशेद और दारा बादशाह के मुक़ाबले का बड़े भारी पद वा माल वाला बादशाह. ४ सबसे बड़ा. ५ झूठ ६ अग्नि. ७ वायु

मौत को मौत आ न जायेगी।
क़सद[1] मेरा जो करके आयेगी॥
बैठ बालू में बच्चे लगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर॥
फ़र्ज़ करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बज़ व-इधर है दर[2]॥
खुद तसव्वर[3] को फिर मिटाते हैं।
खाना[4] अपना वह आप ढाते हैं॥
वैह्म का घर बना था वैह्म मिटा।
बालू था बाद[5] में जो पैहिले था॥
रेग सुधरा था, नै[6] ख़राब हुआ।
फ़र्ज़ पैदा हुआ था खुद बिगड़ा॥
रास्त तू उस ज़ुबान से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फ़र्श तेरा है, फ़र्श मेरा है॥
सिर यह तन से अगर उड़ा देगा।
फ़र्श अपने ही को गिरा देगा॥
रेत का कुछ न तो बुरा होगा।
खाना[4] तेरा ख़राब ही होगा॥
मेरी वुसअत[7] को कौन पाता है।
मुझ में अर्शो-समा[8] समाता है॥

---

१ इरादा २ द्वार ३ कल्पना या अस्तित्व ४ घर ५ पीछे ६ नहीं ७ घर, शोभा, विशालता ८ पृथ्वी आकाश

शाह जूते के दरम्यान् वाकया।
मैं नहीं हूँ, न तू है जाँ! वाकया॥
इतना थोड़ा नहीं हद्दूद अर्बा[1]।
पगड़ी जोड़ा नहीं हद्दूद अर्बा॥
अपनी हतक यह क्यों करी तुमने?।
बात मानी मेरी बुरी तू ने?॥
क्यों तिनक[2] कर दिया है आत्म को।
एक जोहड़[3] बनाया कुलजम[4] को॥
खुद तो मगलूब[5] तुम गज़ब[6] के हो।
शाहे-अजबात[7] से भी अहतर हो॥
गुस्सा मेरा गुलाम तुम उस के।
बन्दा ए-बन्दगा, रहो बच के॥[8]
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर।
निगाहे[9] आरफ से हो गया वह ज़ेर[10]॥
क्या अजब! वह तो ज़ेरे आलताह[11]-सेर।
गरजता था मसाले-बारां मेघ[12]॥
शाह के गैज़ोगज़ब[13] को जूँ मादर[14]।
नाज तिफलक[15] का जानता था गर॥
और वह शाह सकन्दरे रूमी।
बात छोटी से हो गया आदमी॥

---

१ सीमा, चौहद्दी २ तुच्छ, छोटा ज़मीन ३ तालाब, छप्पर कुण्ड परिच्छिन्न ४ समुद्र ५ अधीन, वशमें आये हुये ६ क्रोध ७ काम क्रोधादि को वश में रखने वाला बादशाह ८ नौकरों के नौकर ९ आत्मवान् की दृष्टि से १० अधीन, नीचे, शर्मिन्दा ११ खैंची हुई तलवार के तले १२ वर्षा वाले बादल के समान १३ गुस्से, क्रोध को १४ माता के समान १५ बच्चे का नाज, नखरा

पास उस वक़ अपनी इज़्ज़त का।
हर दो जानब को एक जैसा था॥
लैक[1] शाह को थी जिस्म में थानर[2]।
शाहे-शाह[3] का था आत्मा में घर॥

क़िला मज़बूत उस का ऐसा था।
ऊँचे सूरज से भी परे ही था॥
कर सके कुछ न तीर की बुछार।
ख़ाली जाये बन्दूक़ की भर मार॥

इस जगह ग़ैर[4] आ नहीं सकता।
यहाँ से कोई भी जा नहीं सकता॥
इस बलन्दी से सरफ़राज़ी से।
क़िला-ए मज़बूत शेरे-ग़ाज़ी से॥

यह ज़मीन् और इस के सब शाहान्।
तारा साँ, ज़र्रह[5] साँ, कि नुक़ता साँ॥
नुक़ता मौहूम[6] बन, हुये नाबूद[7]।
एक वहदत[8] हूं, हस्तो-बाशदो[9]-बूद॥

उड़ गये ज्यूं सपाहे-तारीकी[10]।
ताब किस को है एक झाँकी की?॥
रूए-आलम[11] पैग़ाम गया सिक्का।
शाहे-शाहां हूं, शाहे-शाहां शाह॥

---

१ परन्तु, लेकिन २ [illegible] ३ यहाँ मुराद है फ़क़ीर से ४ अन्य, दूसरा. ५ परमाणु ६ कल्पित ७ मिथ्या, असत ८ अद्वैत ९ है, होगा, था; वर्तमान, भविष्य, भूत १० अन्धकार की सेना (अर्थात् तारों) के समान ११ समस्त संसार.

पहले-हैयत[1] ने भी पढ़ा होगा।
नुक़ता पता खूब यह रियाज़ी का ॥
जबकि आउंच[2] एक सितारे का,
पेच में हो हसाब या लेखा ॥
सिफ़र साँ यह ज़मीने-पेचाँ[3]-पेच।
हेच[4] गिन्ते हैं, हेच मुतलक़[5] हेच ॥
अब कहो ज़ाते-बेहूत[6] के होते।
क्यों ना अजसाम[7] जान को रोते ? ॥

[७६]

जिस्म से बेतअल्लुक़ी

(देहाध्यास रहित अवस्था)

बादशाह इक कहीं को जाता था।
उस तर्फ़ से फ़क़ीर आता था ॥
बादशाह को घमंड ताज का था।
मस्त को अपनी ज़ात का था ॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की।
शाह से छोड़ा सलाम तक न की ॥
बादशाह गुर्श[8] हो के यूं बोला।
"सख्त मग़रूर शोख़ गुस्ताख़ा ! ॥

---

१ नजूमी, ज्योतिष के जानने वाले. २ अवस्था ३ पेचदार पृथिवी. ४ तुच्छ
५ नितान्त. ६ शुद्ध स्वरूप ७ शरीर, भाग रूप. ८ क्रुद्ध होकर

बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा।
जिस्म तेरा अभी जला दूंगा" ॥
तिस पै मौला फ़क़ीर[1] आलीजाह[2]।
शाहे-शाहां फ़क़ीर लापरवाह ॥
जिस का मुबदा-ओ[3]-मुन्तहा आत्म था।
महवरे-गुफ़्तगू[4] भी आत्म था ॥
जिस्म प्वाइन्ट[5] से कुछ न करता था।
आत्मा ही था, नूर झरता था ॥
पास धक धक जले थी इक भट्टी।
टाँग उस में फ़क़ीर ने धर दी ॥
तब मुख़ातब हो शाह से बोला।
नक़्शे-तस्वीर! शेरे-क़िर्तास[6]! ॥
मैं हूं क़िर्तास[7], उस पै तू तस्वीर।
ज़ाते-असली हूं, फ़र्ज़ है तस्वीर ॥
नक़्श दावा करे, तकब्बुर[8] है।
किबरियाई[9] मेरी तो अज़हर[10] है ॥
जिस्म के इख़्तियार ही से सही।
मैं हूं आज़ाद उस तरह से भी ॥
क़तल करने का क़दर है तेरा।
झिड़कना इख़्तियार है मेरा ॥

---

१ भराम. २ बड़े पद या रुतबे वाला, परम पुरुष ३ शुरू और पूरा अथवा आदि और अन्त ४ धुरी अर्थात बातचीत का आधार ५ शरीर के लिहाज़ या दृष्टि से. ६ ऐ कागज़ के शेर ! ७ कागज़. ८ अहंकार ९ बड़ाई, महत्व. १० ज़ाहिर, विख्यात, प्रकट.

क़तलो-धमकी का गर्म है बाज़ार।
सौदा मेरा है, मैं हूँ ख़ुदमुख़्तार॥
जान लेना नहीं तेरे बस में।
तेरी नम्बोह[1] है मेरे बस में॥
तू जलायेगा, दर्द क्या होगा?।
देख ले, पैर जल गया सारा॥
इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा।
मेरा इक बाल भी न हो बाँका॥
आग में डाल दे, तू इस[2] तन को।
क्याह शोलों[3] में डाल उस[4] तन को॥
दोनों हालत में मुझ को यकसाँ हैं।
कुछ न बिगड़ा न बिगड़ सकता है॥
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं हूँ तुम हूँ, न तुम हो अपना आप॥
आग मेरा ही एक नज़ला[5] है।
रोब[6] तेरा भी ज़ोर मेरा है॥
मुझ में लाख जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[7] है॥
राम जब कर रहा था यह तक़रीर[8]।
शाह का दिल होगया वहीं तसख़ीर[9]॥
दुश्मन बस्ता[10] पड़ा हुआ आगे।
सायाँ! आरफ़[11] हैं आप अल्ला के॥

---

१ पकड़ धका, क़ैद करना २ फ़क़ीर के शरीर के अभिमान से. ३ अग्नि की ज्वाला ४ बादशाह के शरीर के अभिमान से ५ दिल मज़बूत ६ भय डर ७ स्थिर, ८ वक्तृता ९ शिकार गया, काबू १० हाथ, जोड़ कर ११ आत्मवित.

तर्क दुन्या की, आख़रत[1] की तर्क।
तर्क मौला की, तर्क की भी तर्क॥
पूर्ण अचल के आप त्यागी हैं।
धारे[2] दर्शन के हम भी भागी हैं॥

[८०]

फ़क़ीर का कलाम

क़दम-बोसी, को शाह झुका ही था।
कलमा बेसाख़ता[3] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक[4] हो॥
अपनी कीजियेगा क़दम-बोसी खुद।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही भोगी खुद॥
कुच्छ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाठ में जागा॥
ख़ाक[5] ऊपर से जब हटा बैठा।
मादने-बेबहा[6] को पा बैठा॥
कूड़ा करकट उठा दिया इस ने।
महल सुथरा बना लिया इस ने॥
जैहल[7] को त्याग आप ही बैठा।
ज़ात तेरी तरह न खो बैठा॥

---

१ परलोक, २ एक बार, ३ चरण वन्दना करो ४ तत्काल, बिना सोचे समझे, तारक ५ स्वामी, ६ यहाँ देहाध्यास शरीर से अभिप्राय है, ७ अनन्त दाम को, अर्थात बहुमूल्य लाल (खज़ाना) या आत्म तत्व ८ अज्ञान, अविद्या

लेक[1] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है ।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है ॥
राख को तुम अज़ीज़[2] रखते हो ।
असल मादन[3] को तुम न तकते हो ॥
खाक सारे लपेट ली तुम ने ।
क्या रमाई भभूत है तुम ने ॥
जुड़ गये हो अविद्या से आप ।
जोगी कैसे जुड़े बता के आप ॥
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं ।
ज़ाते-तन्हा[4] हूं, मैं वियोगी[5] हूं ॥
सुन के शाह, यह फ़कीर की तक़रीर ।
सकता[6] ग़श कर गया, बना तस्वीर ॥

[८१]

गार्गी

जनक राजा की हुक्मरानी में ।
उन विदेहों[7] की राजधानी में ॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की ।
नूर चितवन में था जलाल भरी ॥
चिहरे से रोब दाब बरसे था ।
हुस्न को माहताब[8] तरसे था ॥

—१ लेकिन, किन्तु २ प्रिय. ३ खान, [illegible] का स्थान ४ अद्वैत [illegible]. ५ [illegible], पृथक वा [illegible] ६ बेहोश, [illegible]. ७ विदेह पुरुष. ८ चाँद.

ज्ञान की असल जात की खूबी।
उस के हर रोम से चमकती थी॥
तक सके आँख भर के उस रू[1] को।
मारे देहशत[2] से ताब[3] थी किस को?॥
पाकबाज़ी[4] का वह मुजस्सम[5] नूर।
शप्पर[6] चश्म को भगाता दूर॥
एक दफ़ा मार्फत[7] की पुतली पर।
करती शक थी निगाहे ऐब[8]-निगर॥
दफ़ातन गार्गी यह भाँप[9] गयी।
जान कालब[10] में सब की काँप गयी॥
ऐब-बीनों[11] का कुफर तोड़ दिया।
रूए-[12]अजसाम-बीन् को मोड़ दिया॥
ज्ञान से पुर दहान[13] यूँ बोला।
माफा सातार था, कि अग्नि था॥
मैं वह खंजर हूँ, तेज दम जालिम!।
लोहा माने है मिहरो[14] माह अंजुम[15]॥
तीन जामों[16] में, या मियानों[17] में।
छिप के बैठी हूँ तीन खानों में॥

---

१ मुख २ मारे भय के ३ शक्ति ४ पवित्रता ५ प्रकाश का शरीर अर्थात् प्रकाशस्वरूप ६ चमगीदड़, प्रकाश न देखने वाला ७ आत्मज्ञान या ज्ञान स्वरूप ८ बुराई देखने वाले की दृष्टि ९ ताड़ गयी, समझ गयी १० तन ११ दोष देखने वालों का १२ पृथिवी के पदार्थ (रूप) देखने वाले अर्थात् बाहर दृष्टि वाले के मुख को १३ मुंह १४ सूर्य चन्द्रमा १५ सितारे १६ पर्दों (कपड़ों अर्थात् शरीरों) १७ कोष, शकलों में

दूर गर पर्दा-ए-हया[1] कर दूं।
फ़ितना[2] मैहशर अभी बपा[3] कर दूं॥
शम्स[4] कब ताब[5] झलक की लाये।
चकाचौंदी सी आँख में आये॥
देख मुझ को फ़लक[6] के सब अजराम[7]।
मिसले-शबनम[8] उड़ें, करें आराम॥
कोहर[9] ऐसे यह दुन्या उड़ जाये।
देखने की मुझे सज़ा पाये॥
काश[10]! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर सरे[11]-मू से चश्मे-हैरत[12] हो॥
मैं अहदना[13] थी तुम ने समझा क्यों?।
ख़ाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?॥
जिस्म मैं हूं, यह कैसे मान लिया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लिया॥
खप गया जिस के दिल में हुस्न[14] मेरा।
दंग सकते[15] का एक आलम[16] था॥
जान जब हो चुकी हो न्योछावर।
बोलो, यह फिर कहां रहा नाज़िर[17]?॥
नाज़िरो-नज़र[18] आप ख़ुद मंज़ूर[19]।
वसल कैसे कहां हुआ महजूर[20]॥

---

१ लज्जा का पर्दा २ क़ियामत (प्रलय) का समय. ३ अभी पैदा कर दूँ ४ सूर्य. ५ शक्ति तेज ६ आकाश के. ७ तारे इत्यादि, ८ ओस के समान ९ धुंआ या ओस के समान १० ईश्वर करे ११ बाल के सिरे से १२ हैरानी की निगाह, आश्चर्यमय दृष्टि. १३ मैं ही १४ सौन्दर्य १५ आश्चर्य १६ विचित्र अवस्था १७ द्रष्टा, १८ द्रष्टा और दृष्टि. १९ दर्शन किया गया, या दृश्य २० जुदा, पृथक

टूटे पड़ता है, हाय हुसन मिरा।
पर न गाहक कोई मिला उस का॥
खुद ही माशूक़ आप आशक़ हूं।
ने[1] ग़लत! मैं तो इश्क़े-सादिक़[2] हूं॥
तारे कब नूर से नियारे[3] हैं।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं॥
ऐ अदू[4]! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले।
सख़्त कह दे, कि सुस्त ही कह ले॥
जोशे-गुस्सा निकाल ले दिल से।
ताक़ते-तैश[5] आज़मा तू ले॥
मुझे भी इन तेरी बातों से रोक थाम नहीं।
जिगर में थाम न कर लूं, तो राम नाम नहीं॥

[८२]

ग़ाज़ी से दो दो बातें।

राम भी एक बात जड़ता है।
खंजरे-तेज़ दम से लड़ता है॥
हुसन की बैहर[6], ग़ैरते-खूबी[7], !!
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी॥
माना, दीदों[8] में है तेरे लाली।
जोत आंखों में है कपल[9] वाली॥

---

१ नहीं नहीं यह ग़लत है. २ सच्चा असली इश्क़ अथवा प्रेम मैं हूं. ३ जुदा. ४ शत्रु दुश्मन, ५ गुस्से का बल. ६ समुद्र. ७ दूसरे को सजा देने वाली सुन्दरता. ८ नेत्रों. ९ कपिल मुनी का नाम.

भसम करती है तू हज़ारों को ।
कौन रोके भला अंगारों को ॥
लैक[1] में एक हूं, हज़ार नहीं ।
राम पर तेरा इख़्तियार नहीं ॥
झांक आयीने[2] में दिल के देख ले ।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेख ले ॥
क़लब[3] किस से तेरा मुनव्वर[4] है ।
जल्वागर[5] कौन उस के अन्दर है ॥
चीं जबीं[6] हो के कुटिल कर भृकुटी ।
तिर्छे चितवन नज़र कीये टेढ़ी ॥
क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है ।
राम भृकुटि में वास रखता है ॥
छोड दो घूर कर खिसानी आँख ।
राम बैठा है तेरी दाहनी आँख ॥
तल्ख़[7] कामी से किस को दी दुश्नाम[8] ? ।
शाह[9]-रग और कंठ में है राम ॥
चल करो गर दिमाग़ में तकरार ।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार ॥
हर तरह राम से गुरेज़[10] नहीं ।
ख़ुदा आहन[11] से तेग़[12]-तेज़ नहीं ॥

---

१ किन्तु २ शीशा ३ अन्तःकरण, ४ प्रकाशित ५ प्रकाशमान, वा प्रकाश देने वाला, चमकाने वाला. ६ क्रुद्ध होकर, माथे पर बल डालकर. ७ गुस्सा होकर कराह बोली बोलना ८ गाली, अपशब्द ९ गले के भीतर बड़ी रग (बाकी) १० भागना ११ लोहा, १२ तेज़ तलवार.

ऐ मुहीते-किनार[1] ना पैदा !
हुसनो-खूबी पे तेरी खुदा शैदा[2] ॥
बेहरे-मव्वाज[3] है तलातम[4] में ।
हुसन तूफां है तेरा आलम में ॥
"मैं ब्रैहमा[5] नहीं" यह क्यों बोला ।
सामने मेरे कुफर क्यों तोला ? ॥
पहिन कर आज मौज की चादर ।
नखरे टखरे हमीं से यह नादर ! ॥
"मैं ब्रैहमा नहीं" यह क्या मानी[6] ? ।
शुक्रो[7] थोड़ा हुवाब[8] लायानि[9] ! ॥
तिनका भर, किशती भर, जहाज़ सही ।
कोह[10] भर, बैहर-भर, यह नाज़ सही ॥
हाय तुम ने तो क्या सितम[11] ढाया ।
जुमला[12] आलम द्रोग[13] बह आया ॥
नून आँखो में कर दिया तुम ने ।
झूठ सच कर दिखा दिया तुम ने ॥
तेरे पर्दे सभी उठा दूंगा ।
झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥
नाम रूपों की बू उठा दूंगा ।
हू ही[14] हू हूबहू दिखादूंगा ॥

---

१ ऐ अनन्त सीमा, अहाता या विशालता रखने वाली। २ आसक्त, कुर्बान. ३ लेहरों वाला समुद्र ४ हुंकार (लहराना). ५ मंगा. ६ मतलब. ७ पर्दा ८ बुलबुला. ९ बगैर मतलब के, व्यर्थ. १० पर्वत सम. ११ अत्याचार. १२ समस्त १३ झूंठा (असत्य). १४ ईश्वर ही ईश्वर वह ब्रह्म है (सर्वं खल्विदं ब्रह्म)

हाय ! [1]ज़ुहार', आज लूं किस से ? ।
कू चरू हो खड़ा धने किस से ? ॥
आप ही गार्गी हूं, आप हूं राम ।
कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

[८२]

चाँद की करतूत ।

अजब घूमते घूमते राम को ।
मिला इक तालाब सरे-शाम[2] को ॥
जुलाहे की थी पास इक झोंपड़ी ।
थी लड़की वहाँ खेलती इक घड़ी ॥
हवा चुपके से सरसराने लगी ।
उधर चाँदनी दम दमाने लगी ॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहाँ ।
है बुत बन रही और हिलती नहीं ॥
खुला मुंह है भोले से मुसका[3] रही ।
है आँखों से क्या चाँद को खा रही ॥
उतर आँख से दिल में दाखिल हुआ ।
दिले-साफ़ में चाँद सब घुल गया ॥
कहो तो अरे चाँद ! क्या बात है ? ।
यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है ॥

१ विराम, २ सायंकाल के समय ३ मुसकराना, धीरे ४ देखना.

पड़ा अक्स[1] ही तेरा तालाब पर ।
पै लड़की के दिल में किया तू ने घर ॥
दिया आलिमों[2] को न जिस राज़[3] को,
दिखाया न जो दूरबीन-बाज़[4] को ॥
रियाज़ी[5] का माहिर न जो पा सका ।
न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका ॥
जुलाहे के घर में दिया सब बता ।
अरे चाँद ! क्योंजी ! हुआ तुझ को क्या ?
यह नन्हे[7] से दिल में यह आराम क्या ?
ग़रीबों के घर में तेरा काम क्या ? ॥

[८९]

आरसी

दुलहन को जान से बढ़ कर भाती है आरसी ।
मुख साफ चाँद का सा दिखाती है आरसी ॥
हस्ती,-इल्म,-सरूर,[8] का मज़हर[10] तो खूब है ।
हां इस से आबरू[11] को सजाती है आरसी ॥
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलिये ।
वाहद[12] को क़ैदे-दुई[13] में लाती है आरसी ॥

---

१ प्रतिबिम्ब. २ बुद्धिमानों, आलिमों को. ३ भेद, गुप्त बात. ४ दूरदृष्टा यर त्रिकाल दर्शी. ५ गणित शास्त्र में निपुण. ६ फकल का इलम, तस्वीर या रूप की विद्या या ज्योतिष शास्त्र. ७ छोटे से. ८ संदूके में शासे का शीशा जिस में शीशा लगा होता है. ९ सच्चिदानन्द. १० ज़ाहिर होने का स्थान, ११ शान, इज़्ज़त, बड़िमा. १२ एकता. १३ द्वैत के बंधन में.

अज़ बस ग़नी[1] है हुस्न में यह अपने माहरू[2] ।
हैरत है उस के सामने आती है आरसी ॥
खूबी है रूये[3]-खूब में, शीशे में कुछ नहीं ।
हाथों में रूनुमाई[4] को आती है आरसी ॥
ज़ाहिर में भोली भाली, हैराँ शक्ल बले[5] ।
क्या झूठ को यह रास्त[6] बताती है आरसी ॥
कीनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीरतर[7] ।
रुतबा[8] बले सफ़ाई से पाती है आरसी ॥
देखूँ मैं या न देखूँ, हूँ आफताब[9] रू ।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[10] है आरसी ॥
गंगा सुमेरू[11] अब्र[12] सही, मिहर[13]-ओ माह[14] सही ।
मुखड़े का अपने दर्श[15] कराती है आरसी ॥
है शौक़े-दीद[16] चेहरों-ए[17]-तावां का राम को ।
मक़सू[18]-दिली हरआन[19] बनाती है आरसी ॥

[८५]

सदाये आस्मानी (आकाशवाणी)

हाये चेचक[20] ने हाये चेचक ने ।
इस अविद्या के हाये चेचक ने ॥

---

१ सौन्दर्य में अत्यन्त धनी अर्थात् अत्यन्त सुन्दर. २ चाँद के मुखड़े वाला (प्यारे). ३ सुन्दर रूप या मुख. ४ रूप को दिखाने को. ५ लेकिन ६ सच ७ तुच्छ, ८ दर्जा पद ९ सूर्य मुख (प्रकाश रूप वाला). १० मोह लेती है ११ पर्वत. १२ बादल. १३ सूर्य १४ और चाँद. १५ दर्शन. १६ देखने का शौक़. १७ प्रकाशस्वरूप १८ एकाग्रता. १९ प्रत्येक क्षण. २० माता नाम की बीमारी को कहते हैं (Small Pox), यहाँ इस रूपी बीमारी से अभिप्राय है.

कर दिया आत्मा क़रीबुल[1] मर्ग ।
क़ैदे-कसरत[2] में हो गया संसर्ग[3] ।।
चेहरा रौशन था साफ़ शीशा सा ।
हो गया दाग़ दाग़ यह कैसा ? ।।
मिहरे-तलअत[4] पै दाग़ आन पड़े ।
तारे सूरज पै कैसे आन चढ़े ? ।।
एक दम साफ़ रुये-ज़ेबा[5] था ।।
दाग़े-कसरत का लग गया धब्बा ।।
हो गया पुरुष माल माता[6] का ।
यानि वाहन[7] यह शीतला का हुआ ।।
मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअद्दी[8] ।
हिन्द सारे को घेर इसने ली ।।
यह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा ।
गौ-माता[9] के थन से आयेगा ।।
पर ज़रूरी है वैक्सीनेशन[10] ।
वरना मरती है यह अभी नेशन[11] ।।
छोड़ दो तुम ज़री तअस्सब[12] को ।
टीका लगवाइयेगा अब सब को ।।

---

१ मृत्यु के तुल्य २ नानत्व के बन्धन में. ३ आवेश, प्रवेश ४ सूर्य जैसे सुन्दर मुख पर. ५ सुन्दर रूप. ६ शीतला देवी की सवारी. ७ सवारी अर्थात् गधा क्योंकि माता का वाहन गधा होता है. ८ बढ़ जाने वाला, फैल जाने वाला ९ यहां उपनिषद् से अभिप्राय है. १० (अद्वैत का) टीका लगाना ११ जाति, वतन, क़ौम. १२ तर्फ़दारी, पक्ष.

गाये के धन से अलफ[1] की नश्तर।
ला रही है इलाज, लीजे कर ॥
शहर हर इक में हर गली घर घर।
टीका अद्वैत का लगा देना ॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे।
यह सरायत[2] भरा दवा देना ॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू।
टीका यह तीन[3] जा लगा देना ॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी।
डर का नोटिस[4] न तुम ज़रा लेना ॥
"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोऽसि[5] त्वम्"।
लोरी रोते समय यह गा देना ॥
फिर जो चेचक के ज़ख़्म भर आयें।
शीतला भी ख़ुदा मना देना ॥
ग़ैर-बीनी[6]-ओ-ग़ैर दानी[7] को।
मार कर फूंक इक उड़ा देना ॥
फूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
प्यारे हिन्दुस्तान्! फलो फूलो।
पौदे[8] पौदे को ब्रह्म पिला दो ॥

---

१ अलफ से अभिप्राय यहाँ वह मासिक पत्र है जिसके सम्पादक वास्तव में स्वामी रामजी महाराज थे और जिस पत्र के अन्त में यह कविता छपी है २ बरछी अन्दर घुस जाने वाला या तीव्र प्रभाव डालने वाला. ३ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है, कारण, सूक्ष्म, स्थूल) ४ ख्याल, ध्यान. ५ तू कल्याण रूप है ६ द्वैत दृष्टि, भेद दृष्टि ७ भेद ज्ञान ८ बूटे बूटे को, प्रत्येक पौधे को.

यह हैं वह आवे-रंग[1] मदुमे[2]-पेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़र[3]-रेज़ ॥
वन है या बाग़े-ख़ूबसूरत है ।
सब को इस आब[4] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सर्व[5] हो, गुल, ग्याह[6], गन्दुम[7] हो ।
रौशनी बिन तो ख़ाक में दम हो ॥
सिफलापन[8], दासपन, कमीनापन ! ।
छोड़ दे हिंद और चलता बन ॥
काशी, मक्का, युरुशलम[9], पैरिस ।
रूस, अफ़रीका, अम्रिका, फारस ॥
बैहरो-बर[10], तूल[11] वल्दो-अर्ज़-वल्द[12] ।
और मरीख़े-सुर्ख़[13] माहे-ज़र्द[14] ॥
कुतब-तारा[15], फ़लक[16] के कुल अजम[17] ।
काले अजराम[18] जो न जानें हम ॥
यह जगह, वह जगह, कहीं, हर जा ।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥

---

१ रंगाजल २ आँख लगाने वाला अथवा आँख खोलने वाला वा पुष्पों को जगाने वाला. ३ मालदार, हरा भरा. ४ पानी. ५ सर्व वृक्ष का नाम है. ६ घास ७ गेहूं अनाज ८ कमीनापन, कंजूसी ९ ईसाइयों का तीरथ १० खुश्की और तरी (पृथ्वी समुद्र.)११ समस्त लम्बाई. १२ समस्त चौड़ाई. १३ मंगल तारा. १४ समस्त ऋतु का नाम १५ ध्रुव १६ आकाश १७ सारे तारे. १८ आकाश के पदार्थ

मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है।
मैं ही सब कुछ हूं, मेरे बिन ना शै[1] ॥
ऐ शिखर सीम तन[2] हिमालय की !।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी[3]॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम॥
गिरजा[3] पैहलू में खेलती हर दम ॥
मौनसूनों[4] को यह बता देना।
इन्द्र और वरुण को सुझा देना ॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा।
नाज में यह असर रचा देना ॥
चारा भी ले जो नाज मेवों को।
नशा वहदत[5] में मस्त फौरन हो ॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना।
शक शुभा एक दम-मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐ सबा[6]! जा गुलों की महफल में।
शेर मर्दों के दल में बादल में ॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[7] से।
कान में उन के सरसराहट से ॥

---

१ मेरे बिना सब शून्य है अर्थात् मेरे बिना कुछ नहीं २ चांदी के तन वाली अर्थात् बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटी. ३ पार्वती ब्रह्म विद्या है अभिमान है ४ ग्रीष्म ऋतु में जो तूफान वायु का होता है मेघकाल की वायु (Monsoons) ५ अद्वैत ६ पर्वा वायु (प्रातःकाल की वायु) ७ आवाज़

छुपके से राज[1] यह सुना देना।
शक शुभा एक दम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
बिजली! जा कर जहान पर कौंदो।
नीरासानों[2] को जगमगा तुम दो॥
दमक कर फिर यह तुम दिखा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
बुत के, पक्षपात के, भ्रम के।
कड़क कर राद[3]! दो छुड़ा छक्के॥
गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
जाओ जुग[4] जुग जीयोगी गंगा जी।
ले अगर घूंट कोई जल का पी॥
उस के हर रोम में धसा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

---

१ गुप्त भेद २ अंधेरी कोठी में रहनेवालों को ३ बिजली ४ युग से अभिप्राय है.

गाओ पेद्रो ! सना[1] मेरी गाओ ।
आओ जीते रहो, सदा जाओ ॥
पेहले टिटचिट[2] हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढा देना ।
शक शुभा एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐडटे अखबार ! अपने पेपर्स[3] पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥
पेहले-तालीम ! मदरस्सों में तुम ।
बच्चों बच्चों को यह पिला देना ॥
नाजरीन[4] ! हिन्दुओं के जल्सों पर ।
कूक से सब के सब जगा देना ॥
चौक, मन्दिर में, रेल में जाकर ।
ऊँचे पञ्चम की सुर से गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
रिश्ता, नाता, बीर्या समधी सब ।
शादी, जलसे पै हों इकट्ठे जब ॥
शादी[5]-जोयां हों, हेच दुन्या में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूं क्या मैं" ॥

---

१ महिमा तारीफ २ चरमहीन काम का पढ़ा हुआ ज्वारी ३ अखबारों में ४ हरा कोन से देखनेवालो ५ स्वाद करनेवाले आनन्द ढूंढनेवाले

चोट नक़्कारे पर लगा देना ।
शक शुभा एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
जानेमन ! वक़्ते-नज़ा[1], वालिद[2] को ।
पाठ गीता का यह सुना देना ॥
"तत्वमसि[3]" फूंक कान में देना ।
"तू खुदाई[4]" का दम लगा देना ॥
बैठ पैहलू में बाअदब[5] यह कूक ।
आह में खूब पिस पिस्ना देना ॥
हल आँसू में करके फिर इस को ।
सीने पर बाप के गिरा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
मौत पर यह सबक़ सुना देना ।
मातमी मुर्दा दिल जला देना ॥
लाधड़क शंख यह बजा देना ।
शक शुभा एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
मरने लड़ने को फौज जाती हो ।
सामने मौत नज़र आती हो ॥

---

१ मृत्यु काल २ पिता. ३ (तू वही ब्रह्म है) ४ तू खुदा है ५ इज़्ज़त के साथ, सत्कार पूर्वक.

मिस्ल अर्जुन के दिल बढ़ा देना।
मारू बाजे में गीत गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
घुड़की तुम को जो दे कभी नाफ़हम[1]।
तुम ने हरगिज़ भी छोड़ना मत रहम॥
धमकी गाली गलोच और अनबन्।
प्यारे! खुद तू है, तू ही है दुश्मन॥
रमज़ आँखों से यह बता देना।
हाथ में हाथ फिर मिला देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत है, ओम् तत् सत् ओम्॥
गर अदालत में तुम को लेजायें।
ईसा सुक़रात तुम को ठहरायें॥
तुम तो खुद मस्तीये-मुजस्सम[2] हो।
दावा, अर्ज़ी, क़सूर, कैसे हो?॥
चीफ़ जस्टिस का दिल हिलादेना।
हां! गला फाड़ कर यह गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
नोज़ मक़तल[3] में खुश खड़े होकर।
हाज़री[4] के दिलों में घर कर कर॥

---

१ नासमझ, कमअक़ल मूर्ख. २ आनन्द स्वरूप ३ क़त्ल (फाँसी) की जगह
४ उपस्थित लोग.

उङ्गलियां उठ रहीं हों चारों तरफ़।
हर कोई रज रहा हो तुम पर हरफ़[1] ॥
क़ातलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी[2] हूं मैं" दिखा देना ॥
काटा जाने को सिर झुका देना।
नाराह[3] से गूंज इक उठा देना ॥
शक शुभा एकदम मिटा देना।
फ़क़ फ़लाख़ से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

माया और उस की हक़ीक़त

[८६]

शाम।

(यह सारी कविता कलकत्ते नगर के वृतान्त की है और उसे माया के नाम से राम दरसाते हैं).

गंगा की ठंडी छाती से आती है ख़ुश हवा।
है भीने भीने बाग़ का साँस इस में मिल रहा ॥
गंगा के रोम रोम में बचने लगा वह येहर[4]।
आया ज़ुआर[5] ज़ोर का लेहरों पे लेके लेहर ॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं।
मारे ख़ुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ॥

---

१ तुक्स, इलज़ाम, दोष. २ न मरनेवाला, अमर. ३ गरज. ४ समुद्र. ५ समुद्र में तूफान ज्वार भाटा यानी समुद्र में लहरों का चढ़ाव उतार.

गाढ़ी ज़िमीं की पै लो ! फलक[1] से हुई हुई ।
यह सायबान क़नात है अब ही तनी हुई ॥
दुल्हा के सिर पर तारों का सिहरा खिला खिला ।
दुल्हन के बर्क़[2]-दिल ने चिराग़ां[3] खिला दिया ॥

[८१]

मुक़ाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

है क्या सुहाना[4] बाग़ में मैदाने-दिलकुशा[5] ।
और हाशिया[6] है बैंञ्चों का सञ्जा पै वाह वा ॥
मजमा[7] हजूम लोगों का भर कर लगा है यह ।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ॥
बैंञ्चों पै बाज़ बैठे हैं, अक्सर खुश खड़े ।
बाक़ि जवान बाग़ में हैं टैहलते पड़े ॥
मैदान पार सड़क पै है बग्गियों की भीड़ ।
घोड़ों को सरकशी[8] है, लगामों की दे नपीड़ ॥
शौक़ीन कलकत्ता के हैं, मौजूद सब यहाँ ।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहाँ ॥

---

१ आकाश २ दिल में रहने वाली बिजली इस जगह अभिप्राय पृथिवी से है ३ बिजली की रौशनी फैल गयी ४ दिलको अच्छा लगने वाला ५ खुले दिल वाला अर्थात् विशाल ६ किनारा ७ गिरोह, भीड़ ८ सिर हिलाना, सिर हिलाकर लगाम छुड़वाना

[८८]

फ़ाम।

अर्थात् (कलकत्ते के बाग़ में लोगों का क्या काम है ?)

हम सब को देखते हैं, यह देखते कहाँ ?।
आँखें तनी हुई हैं, क्या पीर क्या जवां ॥
मर्कज़[1] सब निगाहों का उजला[2] चबूतरा।
ब्रुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा ॥
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियाँ।
क्या रौशनी में सुर्ख़ दमकती हैं कुरतियाँ ! ॥
ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते ज़रा नहीं।
क्या तुम ने लाल कुरतों को देखा कभी नहीं ? ॥

[८६]

परदा।

इसरार[4] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही।
इस टिकटिकी में क्या है करो ग़ौर तो सही ॥
गोरों की कुर्तियों को हैं जो तक रहे ज़रूर।
लेकिन नज़र से कुर्तियाँ गोरी तो सब हैं दूर ॥
लैहरा रहा है परदा सा सब की निगाह पर।
इस परदे से पिरोई हैं हर एक की नज़र ॥

---

१. केन्द्र २. रौशन प्रकाशित ३. अंग्रेज़ी बाजे का नाम है ४. भेद, गुप्त भेद

यह परदा तन रहा है, अजब ठाठ बाट का।
जिस में ज़मीनो-ज़मानो-मकान[1] है समा रहा॥
परदा सिला है, छेद कि सीवन[2] कहीं नहीं।
लेकिन मोटाई जो पूछो, तो असला[3] कहीं नहीं॥
परदा तिलस्म[4] है, सेहर[5] के नक़्शो-निगार हैं।
हर आँख के लिये यां अलैहदा ही कार[6] हैं॥
सब सामईन[7] के सामने परदा है यह पड़ा।
हर एक की निगाह में नक़्शा जमा दिया॥
परदों से राम का है यह परदा अजब बड़ा।
गंधर्व शहर[8] का है कि मिराज[9] का मज़ा॥
जादू है, मिस्मेरिज़्म है, परदा सराब[10] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़्श[11]-आब है?॥
रमिये तो यार परदे में देखो तो कैफ़ियत[12]।
आँखें सिली हैं गश्त से क्यों? क्या है माहियत[13]?॥
दीवों[14] में और रंगों में क्या है कुनारयत?।

[८०]

विवाह।

यह नौजवां के सफ़ेद नूरी लिबास[15] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में॥

---

१ देश, काल, वस्तु २ सिया हुआ, ३ छिद्रयुक्त, सिवाय ४ मुश्किल, आश्चर्य युक्त ५ जादू ६ काम ७ दुनिया वाले, लोगबाग, ८ पड़ा है, मानो, गलती (यहाँ अभिप्राय स्वर्ग लोक से भी हो सकता है) ९ दिखावटी वस्तु के पदार्थ का नाम है १० रेत का मैदान जो धूप में पानी की तरह नज़र आवे (मृगतृष्णा का जल) ११ पानी के नक़्श १२ हाल दशा. १३ असलीयत १४ रंग, बेर्गो १५ प्रकाश की पोशाक का रंग

शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बरात बैठी है, जलसा बदल गया॥

दुलहन का रंग है वह गोया गुलाब है।
और चश्मे[1]-नीम मस्त[2] से झड़ता शराब है॥

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो, तो अड़ जायें न आँखें॥

[६९]

यूनीवर्सिटी कॉन्वोकेशन।

ऐनक लगाये लड़के को वह दम ही परदे पर।
हरकारह दौड़ता हुआ लाया है क्या खबर॥

लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा।
"मैं पास होगया हूं, लो मैं पास हो गया"॥

"पीन्थ के इमतहान में बढ़ कर रहा हूं मैं।
इंगलिश में और हिसाब में अव्वल रहा हूं मैं"॥

है चांसलर[3] से जलसा में इनाम पा रहा।
और फैलो-साहबान[4] से है इकराम[5] पा रहा॥

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥

---

१ आँखें. २ आधी मस्त ३ यूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय) के भवन में प्रधान पुरुष (सभापति) ४ यूनीवर्सिटी के उस्ताद व मददगार ५ लिहाज़ वग़ैरह

[९२]

बच्चा पैदा हुआ।

वह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर।
पूरी हुई है आर्ज़ू, पैदा हुआ पिसर[1]॥
मंगल है, शादियाना[2] है, खुशियाँ मना रहा।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा॥
मुन्हा[3] है गोल मोल, कि इक कँवल फूल है।
नाज़ुक है लाल लाल, अचँभा अमूल[4] है॥
अब तो बहू की चाँदी है घर भर में बन गयी।
सास भी जो रूठी थी लो आज मन गयी॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥

[९३]

नैशनल कांग्रेस[5]।

वह देखना! किसी के लिये इसी परदे पर।
मण्डप है कांग्रेस का, ग़ज़ब धूम करोफ़र[6]!॥
लैक्चर वह दे रहा है धुँआधार सिहरकार[7]।
जो चीर शको-शुभा को है जाता जिगर के पार॥

१ पुत्र २ खुशी के बाजे बज रहे हैं ३ छोटा सा बच्चा ४ अनंत मोल वाला अर्थात् अमूल्य ५ राष्ट्रीय महासभा ६ धाम धौरत ७ जादू की तरह असर करने वाला

हक[1]-ओ-दक मुकुत में हैं पड़े हाज़रीन[2] तमाम।
हर दीदा शीलाचार[3] है। विजली है एशो आम॥
नह तालियों की गूंज में इक दिल हुये तमाम।
वह मोतियों से आँख का छलके पड़ा है जाम[4]॥
"गो आन, गो आन[5]"! कहते हैं सब अहले[6]-ज़िन्दगी।"
छुरी से खून से लिखेंगे तारीख हिन्द की॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥
इस परदे पर है, ठेका में, इक लाख की बचत।
इस परदे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत॥
इस परदे पर है सिंह जवान खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज से क्या डट के अड़ रहा॥
इस परदे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़सद[8] मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस परदे पर तरक्की है रुतबा चढ़ा चढ़ा।
इक दम है मेरे यार का दर्जा बढ़ा चढ़ा॥
इस परदे पर हैं सैरो-तमाशे[9] जहान के।
इस परदे पर हैं नक्शे बहिश्तो-जुनां[10] के॥
बिछड़े हुए मिले हैं, मुर्दे भी उठ खड़े हैं॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग हो दिलख्वाह[11] तो जुड़ जायें न आँखें॥

---

१ हक्कबक्क, आश्चर्य, हैरान २ चुपचाप, ३ मोतावाला ४ सब की आँखें लाल हैं ५ प्याला (मोतियों का) ६ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, ७ जानदार ८ मुराद, मक़सद ९ सैर और तमाशा १० स्वर्ग नरक ११ दिलपसंद, मनोरञ्जक.

[८४]

सल्तनत हक़ीक़ी अवधूत।

वाह ! क्या ही प्यारा नक़शा है आँखों का फल मिला ! ।
उस सोहने नौजवान् का जीना सफल हुआ ॥
महल उनका, जिस की छत पे है हीरे जड़े हुए ! ।
फ़र्शे-फ़ज़ाह[1]-व-अबर[2] के परदे तने हुए ॥
मसनद बलन्द तख़्त है, पर्वत हरा भरा ।
और शजरे-देवदार[4] का है चँवर झुल रहा ॥
नग़मे[5]-सुरीले ' ओम् '' के हैं उस से आ रहे ।
नदियां, परिन्दे[6], बाद[7] हैं, यह सुर मिला रहे ॥
बेहोशी-हिस है गर्चे पड़ा लाल की तरह ।
दुन्या है उस के पैर की फुट-बाल[8] की तरह ॥
कैसी यह सल्तनत[9] है, अदू[10] का निशान् नहीं !
जिस जा[11] न राज मेरा हो ऐसा मकान् नहीं ॥
पथों वायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग हो दिलख्वाह तो उड़ जायें न आँखें ॥

[८५]

माया सर्व रूप।

माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में ।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो-संग[12] में ॥

---

१ चंद्र धनुष २ बादल ३ बैठने की जगह ऊंची ४ देवदार के वृक्ष. ५ आवाज़ शब्द ६ पक्षी ७ वायु ८ पावों से खेलने की गेंद ९ बादशाहत, राज. १० दुश्मन. ११ जगह १२ पानी में, पत्थर में

इस परदे पर हैं झील[1], जज़ीरे[2], खलीजो-बेहर[3] ।
इस परदे पर हैं कोह[4]-ओ-बियाबाँ[5] दियारो-शहर[6] ॥
सब पीर[7] सब जवान इसी परदे पर तो हैं ।
बाशिन्दे और मकान इसी परदे पर तो हैं ॥
पैग़म्बर और किताब इसी परदे पर तो हैं ।
सब खाको-आसमान इसी परदे पर तो हैं ॥
पील[8] अस्प[9] और गुलाम इसी परदे पर तो हैं ।
शाहंशाहों के शाह इसी परदे पर तो हैं ॥
क्या झिलमिलाता परदा है यह अनकबूत[10] का ।
दे है ख्याल (उलझा हुआ) ख़ास सूत का ॥

[८६]

नक़्शो-निगार और परदा एक हैं ।

यह दो नहीं हैं, एक हैं, परदा कहो कि नक़्श ।
नक़्शो-निगार[11] परदा हैं, परदा ही तो है नक़्श ॥
यह इस्तआरा[12] था, कि यह माया के रूप हैं ।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ॥
"इस्मो-शकल[13]" ही माया है, माया है इस्म-शक्ल ।
हममानी[14] माया के हैं, यह सब रंग रूप-शक्ल ॥

---

१ सरोवर २ द्वीप ३ खाड़ी और समुद्र ४ पर्वत ५ जंगल ६ मुल्क और शहर ७ वृद्ध, बुड्ढे. ८ हाथी. ९ घोड़े. १० मकड़ी जो तन्तु अपने मुंह से निकाल कर जाला तनती है. ११ नाना प्रकार के रंग रूप. १२ अभिप्राय, भाव दृष्टान्त, तमसील १३ नाम रूप. १४ एक अर्थ वाले

[६७]

फ़िलसफ़ा[1]।

परदा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर ?।
है यह मर्चोपर ऊपर कि हवासे-अवाम[2] पर ? ॥
है भी कहाँ कि मबनी[3] है, वह वैहमे-खाम[4] पर।
क्या सच है, एस्तादा[5] है, यह मेरे राम पर ॥

[६८]

महले-परदा (दृष्टान्त)।

है इस तरफ़ तो शोर सरोदो[6] समा का ।
और उस तरफ़ है ज़ोर शुनीदन[7] की चाह का ॥
इन दोनों ताक़तों का यह टकराना देखिये ।
पुर ज़ोर शोर लैहरों का चकराना देखिये ॥
लैहरें मिलीं मिटीं । वह लो ! पैदा हुए हुबाब[8] ।
यह बुलबुले ही पुर्दा[9] हैं, परदा वरूए[10]-आब ॥
मौजों ही का मुक़ाबला परदा का है महल[11] ।
मौजें हैं आब, कहते नहीं क्यों महल है जल ? ॥
हां यह तो रास्त[12] है कि सरोद[13] और सामयीं[14] !
दोनों मिले मिटे हैं, वह जल रूपे-राम[15] में ॥
और राम ही में परदा है नक़्शो-निगार है ।
यह सब उसी की लैहरों के मौजों[16] के कार[17] हैं ॥

---

१ दर्शन शास्त्र तत्त्वज्ञान २ सब इन्द्रियमय. ३ सहारा लिये हुए, अवलम्बित. ४ कच्चा वैहम अर्थात् कल्पित भ्रम. ५ सीधा खड़ा हुआ. ६ राग रंग (आवाज़) ७ सुनना. ८ बुलबुला या बुदबुदे. ९ परदा. १० पानी के चेहरे पर अर्थात् पानी की तह पर. ११ अधिष्ठान या आधार. १२ सच १३ राग १४ सुनने वाले १५ जल रूपी राम में या राम जो जलरूपी है उस में १६ लैहरें १७ काम.

[६६]

महसूसे-आम (दृष्टान्त)।

महसूस[1] करने वाली इधर से आई लैहर।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर॥
दोनो के अक़्दे[2]-शादी से पैदा हुए हुबाब[3]।
यानी नमूद[4] "शै"[5] हुई पानी में झट शिताब॥
लैहरें भी और बुलबुले सब एक आब[6] हैं।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं॥
माया तमाम इस की है हर फ़ैल[7]-ओ-क़ौल में।
मफ़ऊल, फ़ैलो -फ़ाइल हैं हर डौल डौल[8] में॥
आबशारों और फ़व्वारों की फुहारों की बहार।
चश्मासारों, सब्ज़ाज़ारों[9], गुलइज़ारों[10] की बहार॥
बैहरो-दरया[11] के झकोले और सबा[12] का खुश ख़राम[13]।
मुझ में मुत्सव्वर[14] हैं यह सब "ओम्" में जैसे कलाम[15]॥
पसर[16] कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में।
चांदनी में रौशनी में, कृष्ण में और राम में॥

---

१ इन्द्रियगोचर पदार्थों को अनुभव करने वाली वृत्ति २ विवाह या मेल ३ बुलबुला ४ प्रकट व्यक्त ५ वस्तु रूप ६ जल ७ काम और इक़रार. ८ कर्म, कर्ता, और कर्ता. ९ बाग़ इत्यादि १० पुष्प के कपोल वाले प्यारे ११ समुद्र और नदी १२ प्रातःकाल की वायु १३ मटक कर चलना १४ कल्पित, आरोपित हैं १५ शब्द १६ फैलकर.

[१००]

राम मुवर्रा[1] ।

यह तो सब दुरुस्त[2] है, पर[3] अज़ रूये[4]-ज़ात भी ।
ऐसों तो परदा नक़्श वग़ैरा न थे कभी ॥
है मौज[5] ही में रद्दो-बदल[6] जिस के बावजूद ।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब[7] का वजूद ॥
अज़ इतबारे-ज़ात[8] यह कहना पड़ा है अब ।
पैदा ही कब हुए थे वह अमवाज[9] और हुबाब[10] ॥
अज़ रूये-राम पूछो तो फिर यह निगारो-नक़्श ।
माया वग़ैरा का कहीं नामो-निशानो-नक्श ॥
हर्कत सकून[11] और तग़य्युर[12] का काम क्या ? ।
मुतलको[13]-ज़ुयां को दख़ल, सिफ़ातों[14] का नाम क्या ॥
इक़बाल[15] कहाँ, अदबार[16] कहाँ, यां बेशी कमी को बार कहां ।
यां पुण्य कहां, अरु पाप कहां, अरु मुफ्त में जीतो-हार कहां ॥
इक़रार कहां, इन्कार कहां, तक़रार कहां, इसरार[17] कहां ।
महसूस-हवास[18]-यहसास कहां, ख़ाक आब अरु बादो[19]-
नार कहां ॥
सब मर्कज़[20], मर्कज़, मर्कज़ है, इक तार[21] कहां, परकार[21]-
कहां ।

१ शुद्ध स्वरूप राम २ सब ३ किन्तु ४ वस्तुतः भी ५ लैहर ६ बदलना ७ जल ८ वस्तु के लिहाज़ से कहना पड़ा. ९ लहरें. १० बुलबुला ११ [illegible]रता १२ तबदीली १३ घाटि १४ गुण १५ विभूति, महिमा. १६ बोझ १७ [illegible]शिद १८ स्पर्श, इन्द्रिय पदार्थ १९ वायु और अग्नि २० केन्द्र २१ पंक्तियें खींचने वाला औज़ार

[१०१]

नतीजा ।

ग़लतां[1] है मुहीत बेपायां[2], यहां वार कहां, अरु पार कहां ? ।
गंगा है कहां अरु चाग़ कहां, है सुराह कहां, पैकार[3] कहां ? ॥
यां नाम कहां, अरु रूप कहां, अख़फ़ा[4] कहां, इज़हार[5] कहां ? ।
नहीं एक जहां दो चार कहां, अरु मुझ में सोच विचार कहां ? ॥
मां बाप कहां, उस्ताद कहां ? गुरु चेले का यां कार कहां ? ।
इहसान कहां, आज़ार[6] कहां ? यां ख़ादिम[7] और सरदार कहां ॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था निशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़कार[12] कहां ।
नहीं ज़ेर[13], ज़बर[14], पस[15], पेश कहां ? तक़्ती[16] और शेर अशआर[17] कहां ॥
इक नूर[18] ही नूर हूं शोलाफ़िशां[19], गुलज़ार[20] कहां और ख़ार[21] कहां ।
लैक्चर तक़रीर उपदेश कहां ? तेहरीर[22] कहां, प्रचार कहां ? ॥
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां ? दिल बेबस सीनाफ़िगार[23] कहां ॥
नहीं शेख़ी शोख़ी आर[24] कहां ? सिर टोपी या दस्तार[25] कहां ? ।
नहीं बोली ताना धमकी यहां, सूफ़ार[26] कहां और दार[27] कहां ॥

---

१ पेच खाता हुआ (ग़र्क़ या मग्न हुआ) २ बेहद (अनन्त) अथाह ३ लड़ाई जंग ४ पोशीदगी (अव्यक्त) ५ व्यक्त ६ दुःख ७ नौकर ८ काल ९ देश. १० कारण ११ कार्य १२ ज़िक्र, चरचा १३ नीचे. १४ ऊँचे १५ पीछे आगे १६ टुकड़े करना, वज़न करना, छंद बनाना. १७ कविता नज़्मे १८ प्रकाश १९ चमकने वाला, यहाँ चमक मार रहा है. २० बाग़. २१ कांटा २२ लेख. २३ सीना फाड़ने वाला या ज़ख़्मी दिल (आशिक़ या प्रेमासक्त) २४ लज्जा हया २५ पगड़ी २६ तीर का मुंह. २७ सूली

इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं, शै[1] ग़ैर का दारो-मदार कहां।
आसायशे-क़ैदो निजात कहां ? अहकामे[2]-रस्सन[3] और मार[4] कहां॥
घर बार कहां, कोहसार[5] कहां, मैदान कहां, और ग़ार[6] कहां।
मह[7], अंजुम[8], फ़र्श[9], और अर्श[10] कहां ? यां ख़्वाब[11] कहां बेदार[12] कहां
जब ग़ैर[13] नहीं, डर ख़ौफ़ कहां, उम्मेद से हालते-ज़ार[14] कहां ? ॥
मैं इक तूफ़ाने-वहदत[15] हूं, कहां मुझ में दस्तफ़सार[16] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूं, यां बन्दे[18] और सरकार[19] कहां॥

[१०२]

दुन्या की हक़ीक़त

क्या है यह ? किस तरह हुए मौजूद ? ।
इक निगाह पर सब की हस्ती ओ[20]-बूद॥
हां जगत है, सबूत दीजेगा।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजेगा॥
(१.) बेशक आती नज़र है दुन्या, पर।
है कहां, आप ही न देखें गर॥
माहो-माही[21]-व-शाहो-ज़र्रीन ताज।
अपनी हस्ती को है तेरे मोहताज॥

---

१ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु. २ वृत्ति, मन का भेद. ३ भ्रान्ति ४ रस्सी. ५ [illegible] ६ पर्वत ७ कन्दरा, गुफा. ८ चांद. ९ तारे १० पृथिवी. ११ आकाश १२ स्वप्न. १३ जागृत. १४ [illegible] १५ रोने की दशा १६ एकता का तूफ़ान १७ [illegible] करना का मुहावरा १८ प्रजा, सेवक १९ राजा, मालिक. २० [illegible], [illegible] २१ चांद [illegible] (अथवा चांद से [illegible] [illegible] तक [illegible] [illegible])

बर्क़[1] मौजूद है सभी शै में ।
गो हवासों के हो न हलक़े[2] में ॥
वक़्ते-इज़हार[3], बर्क़-शोख़ी बाज़ ।
खुद ही मुसब्बत है, खुद ही मनफ़ी नाज़ ॥
तेरी माया है बर्क़-वश[4] चञ्चल ।
यारों आगे कहां चलें छल बल ॥
तू इधर देखता है आँख उठा ।
तू उधर बन गया कोहो-सहरा[5] ॥
(२) ख़्वाब में हैं ख़्याल की दो शान ।
जुज़्वी[6], कुल्ली[7] "यह एक मैं" "यह जहान"
"मैं हूं इक मर्द" शाने-जुज़्वी है ।
"जुमला आलम," यह शाने-कुल्ली है ॥
ख़्वाबे-पुख़्ता शुदः है बेदारी ।
जाग ! सारी तेरी है गुलकारी[8] ॥
तूही शाहिद[9] बना है, तू मशहूद[10] ।
शान तेरी है आस्माने-कबूद[11] ॥
ख़्वाब तेरा, ख़याल तेरा है ।
जो ज़मीन-ओ-ज़मान ने घेरा है ॥
जल्व. तेरा यह अम्बसाती[11] है ।
बीज माया ही फैल आती है ॥
क्या यह दुन्या ख़याल मात्र है ।

---

१ बिजली, २ घेरा, हद ३ इरादा, ज़ाहिर होने के समय. ४ बिजली की तरह, ५ पर्वत और जंगल ६ व्यष्टि। ७ समष्टि। ८ बाग़, बूटा ९ गवाह, साक्षी १० ज़ाहिर किया गया, देखा गया, १२ नीला आकाश १३ फैलाव अथवा माया की विक्षेप शक्ति.

क्या यह सच मुच ख़याले ख़ातिर[1] है ॥
अगर तुझे इसमें शक नज़र आवे।
कुछ भी बिन ख़याल के दिखा तो दे ॥

(चित्त वृत्ति के फुरने बग़ैर कोई भी चीज़ महसूस[2] नहीं हो सकती)

हा यह सारी ख़याले माया है ॥
एक कसरत में आ समाया है ॥

(२) मरना जीना यह आना जाना सब।
ठैहरना चलना फिरना गाना सब ॥
सब यह करतूत जाने माया की।
मेहरे-ताबां की एक छाया की ॥
पुर[3] ज़िया आफ़ताबे रौशन राये।
गग लेहरों पै नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है।
आब बैहता है यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदों पै नूर सूरज का।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदिर में शमा[5] जो रक्खा।
क्या समा हो गया चिरागां का ॥
फ़ितनागर आयीना में चशमे निगार।
झूट है, गो हैं यार से दो चार ॥

---

१ दिल (मन) का ख़याल २ भान ३ मालूम ४ प्रकाश से भरपूर ५ दीपक ६ झगड़ा डालने वाला

यह अविद्या में जो पड़ा आभास।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास॥
यूं जो संसर्ग[1] से हुआ अध्यास।
सानी[2] यकता का ला बढ़ाया पास॥
माया आयीना कैसी खुर्सन्द[3] है।
मज़हरे[4]-राम सच्चिदानन्द है॥
कुच्छ नहीं काम रात दिन आराम।
काम करता है फिर भी सब में राम॥
क्यों जी जब आप ही की माया है।
दिल पै अन्दोह[5] क्यों यह छाया है॥
हेच[6] दुन्या के वास्ते फिर क्यों।
भाई भाई से तीरह-ख़ातिर[7] हों?॥
खटका कैसा? फ़ज़र्क ख़तर क्या है?।
बीमो[8]-उम्मेद कैसी? डर क्या है?॥
बादशाह का बुरा जो चाहता है।
सख्त जुरमे-कबीरह[9] करता है॥
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह।
राज जिस का है माह से ता माह[10]॥
तेरे नस में रगों में नाड़ों में।
पेहले[11]-सोदागरी हैं राहों में॥
जिस का पेहदे-हकूमते-वर्क़त।
चैन दे सिर में अकल को हर्कत॥

---

१ अन्दर प्रवेश. २ दूसरा ३ ख़ुश अच्छी ४ राम के दिखाने वाली, ज़ाहिर होने का स्थान ५ दुख, फ़िकर ६ नाचीज़, तुच्छ ७ ख़राब दिल, द्वेष भरा चित्त ८ डर. ९ बड़ा भारी पाप १० तुच से चन्द्रमा तक ११ ख़ून दम इत्यादि

ऐसा सुलतान् अज़ीमे-आली जाह।
तेरा ही आत्मा है जाये-पनाह॥
ऐसे सुलतां से जो हुआ ग़ाफ़िल।
हाये ख़ुदकुश[1] है, शाहकुश क़ातिल॥
क्यों जी कुछ शर्मो आर[2] भी है तुम्हें।
क्यों यह फ़क़्लों से दान्त लिलके हैं?॥
मंगना क्यों? कमर यह टूटी क्यों?।
हाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों?॥
गर्म्नी के गले छुरी क्यों है?।
हक़[3] ही जीतेगा, मत की है जै॥
क्यों गुलामी क़बूल की तुमने।
दर-बदर ख्वार भीक ली तुमने॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब।
खेल में भूल क्यों गये मनसब[4]?॥
ताजे-नूरी को सिर से फैंक दिया।
टोकरा रंजो-ग़म का सिर पै लिया॥
अब जलालो-जमाले-ज़ात[5] सम्भाल।
उठो, शव सा हों सब विषय पामाल॥
नैय्यरे-आज़म[6] हो, तुम तो नूर फ़िशां[7]।
ख़िदमते-माया में न ढूंढो धन॥
वैह्म का मार[8] आस्तीन से खोल।
मत फिरो मारे मारे डाँवां डोल॥

१ आत्मघाती २ प्रारम्भ स्वरूप, सभी बादशाहको मारने वाला, ३ लज्जा, हया ४ कान्त ५ पद, दर्जा, ६ [illegible] का तेज और वैभव ७ सूर्य ८ प्रकाश फैलाने वाले ९ साँप

[१०३]

जाने वारी[1] ।

लेक माया यह आ गयी क्योंकर ? ।
रूये आलम[2] सजा गयी क्योंकर ? ॥
जाने वाहिद[3] को क्यों गर्दिश लगी ? ।
वे बदल हुस्न को क्या यह लाँच लगी ? ॥
बदर[4] का गहन[5] यह लगा कैसे ? ।
ऐसा ज़िल्ले ज़मीन[6] पड़ा कैसे ? ॥

[१०४]

जवाब ।

(१) ऐ ज़मीन[7] दोज चश्म दुन्या बीं ! ।
तू ही ख़ुद है बनी ख़सूफ़[8] यहीं ॥
चाँद राहू ने जा न पकड़ा है ।
वेह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है ॥
ज़ाते-वाहिद सदा है जूँ की तूँ ।
उस में रद्दो बदल[10] है या न यूँ ॥
दायें बायें इधर उधर हर सू[11] ।
आप ही आप एक रस है हू[12] ॥

---

१ ईश्वर, आत्मा स्वरूप २ जगत, दुनियाँ ३ एक अद्वितीय ४ चौदस का चन्द्रमा ५ ग्रहण ६ छाया, परछाई पृथिवी की ७ ऐ संसार को संसार की दृष्टि से देखने वाली ८ ग्रहण व ग्रहण की छाया, (चन्द्र में आसक्त) चक्षु या दृष्टि ९ अद्वैत स्वरूप १० विकार ११ तरफ़ १२ ईश्वर ब्रह्म

ईन्[1] आन्[2], चूं[3] चुगूं[4], चुनां[5]-ओ चुनां[6]।
लौट आते हैं यहां से हो हैरान ॥
बरतर अज़ फ़ैहमो-अक़लो-होशो-गुमां[7]।
लामकां[8] लाज़मां[9]-निशां-अमकान्[10] ॥

(२) रूये-ख़ुर्शीद[11] पर नक़ाब[12] नहीं।
दुपैहर को कोई हिजाब[13] नहीं ॥
आब[14] हायल नहीं, सहाब[15] नहीं।
देखने की किसी को ताब नहीं ॥
मोजज़न[16] हो रही है उर्यानी[17]।
तिस पै परदा है तुरंह हैरानी ॥

(३) जूं रसन[18] में पर्दा-ए-सूरते-मार[19]।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[20] ॥
यह स्वरूपाध्यास[21] है इज़हार[22]।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[23] ॥
और संसर्ग[24] को-जो माना था।
तब तलक ही था, जब न जाना था ॥
मारे[25]-मौहूम में मोटाई तूल।
तो वही है जो थी रसन में भूल ॥

---

१ यह २ यह ३ क्यों ४ किस तरह ५ ऐसा ६ और वैसा. ७ समझ होश और अक्ल से भी दूर. ८ देश रहित. ९ काल रहित. १० चिन्ह रहित, निराकार व दृश्यता रहित. ११ सूर्य के मुख पर ,१२ परदा. १३ परदा १४ समझ खींचे हुये नहीं. १५ बादल, परदा १६ लहरें लहरा रही है १७ नंगापन १८ रस्सी में १९ साँप की सूरत नज़र आती है २० लम्बी माया, भ्रम २१ अपने स्वरूप का भ्रम २२ ज़ाहर, समझ २३ [illegible] २४ कल्पित सांप २५ सच्चाई

यह हक़ीक़ी रस्सन का तूलो-अर्ज़[1] ।
मारे-मोहूम में हो आया फ़र्ज़ ॥
इस तरह गरचे माया मिथ्या है ।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ॥
दूर रहते हैं मारे-दहशत[2] के ।
नागनी काली से सभी हट के ॥
पर जो आकर क़रीबतर[3] देखा ।
बेख़तर[4] हो गये, मिटा खटका ॥
माहीयत[5] पर निगाह गर डालो ।
असले-हस्ती को खूब सम्भालो ॥
कैसी माया ? कहां हुआ संसर्ग ? ।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[6] ? ॥
काल वस्तु का देश का मुझ में ।
नाम होगा न है हुआ मुझ में ॥
कौन तालिब[7] हुआ था, मुर्शिद[8] कौन ? ।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन ? ॥
किस को संशय शकूक उट्ठे थे ? ।
कब दलायल से हल फिर तै[9] हुये ? ॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों ।
रस्तगारी[10]-ओ-क़ैद क्योंकर हों ? ॥
क्या गुलामी, कहां की शाही है ? ।
आली जाही[11] कहां ? तबाही है ॥

---

१ लम्बाई, चौड़ाई २ डर, भय ३ बहुत समीप ४ निडर, निर्भय ५ असल वस्तु, हक़ीक़त ६ मृत्यु ७ जिज्ञासु ८ गुरू ९ साफ़ हल हुये १० आज़ादी, मुक्ति ११ उच्च पद या पदवी

मैं कहां ? तू कहां ? गरीब[1] ओ कबीर ? ।
किस का मख्लूक[2]-शाह दाना असीर[3] ? ॥
किस की वहदत[4] और उस में कसरत क्या ? ।
क्या खुदाई यहां ? इबादत[5] क्या ? ॥

किस की तशबीह[6] और मुशब्बाह[7] क्या ? ।
जेहल[8] क्या और इल्म हो कैसा ? ॥
कैसी गंगा यहां पे राम कहां ? ।
जाते मुतलक में मेरी नाम कहां ? ॥

कब मिली चाँदनी ? है प्यार कहां ? ।
रात कैसी हो ? आफ़ताब कहां ? ॥
कब रमन था ? यहां पे मार नहीं ।
कोई दुश्मन हुआ न यार नहीं ॥

अक्स इसमें जा नहीं है, ऐन नहीं ।
नुक्ता पैदा नहीं है, गैन नहीं ॥
कब जुदा थे, ? न पाई बीनाई[9] ।
खुद खुदाई है, बल वे रानाई[10] ॥

कुछ बियान कीजियेगा हाले जान ।
हाय कहने में आवे क्योंकर बात ? ॥
कब फ़ुवारी के फ़ुंहा[11] में आवे ।
लज्जते-वस्ल[12] कौन बतलावे ? ॥

१ छोटा, बड़ा २ शिकारी और बाज़ ३ कैद ४ एकता ५ बन्दगी ६ उपमान, दृष्टान्त ७ जिस पर दृष्टान्त दिया जाय, बराबरी वाला. ८ अज्ञान ९ चक्षु, दृष्टि १० बे रंगी अथवा रंगामेज़ी ११ समझ में आवे १२ मिलनानन्द

दस्पना[1] पकड़ता है अशया[2] को ।
कैसे पकड़े जो उङ्गली क़ाबिज़[3] हो ? ॥
अ़क़ल बुद्धि हवास मन सारे ।
मिस्ले चिमटा है, दुन्या अ़ग़ारे ॥
आत्मा अ़क़ल बुद्धि मन सब को ।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अ़क़ल का बस है ।
आगे मुझ आत्मा के खुद दस्त है ॥
अ़क़ल से ब्रह्म चाहो पेहचाना ।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥
गैर मुमकिन मुहाल ही तो है ।
दम जो मारे मजाल किस को है ? ॥
नुत्क़[4] ! मशहूर है तू कार[5]-आरा ।
राम तक पहुँचने का है यारा[6] ? ॥
नुतक़ ने ज़ोर जान तक मारा ।
गिर पड़ा आख़िरश थका हारा ॥
आँख खाने[7] से अपने बाहर आ ।
ढूंढ बैठी है बाग़ बन सेहरा[8] ॥
छान मारा जहान् को सारा ।
कैसे देखियेगा आँख का तारा ? ॥
पे जुवान् ! मोम तुझ से है ख़ारा[9] ।
कुच्छ पता दे कहां पे है दारा[10] ? ॥

---

१ चिमटा, २ वस्तु ३ जो उङ्गली, चिमटे को खुद पकड़े हुए हो ४ वाणी, बोलने की शक्ति ५ काम पूरा करने वाली ६ बल ७ घर. ८ जंगल ९ पत्थर, १० दारा बादशाह से भी अभिप्राय है और अपने घर से या स्वरूप से भी अभिप्राय है

अपना सब कुछ ज़ुबान् ने वारा।
चढ़ गया उड़ गया चले पारा॥
यूं रोता क़लम है बेचारा।
लिखते लिखते ग़रीब मैं मारा॥
ऐ क़लम, नुतक़! ऐ ज़ुबान, दीदा!।
जुस्तजू[1] में मरो, है निस्तारा[2]॥
आंख की आंख, जान् की है जान।
नुतक़ का नुतक, प्राण के हैं प्राण॥
कौन देखे यहां दिखाये कौन ?।
कौन समझे यहां सुनाये कौन ?॥
लद गया होशो अक्ल बनजारा।
ओस[3] सां कर सका न नज्ज़ारा[4]॥
राम मीठा नहीं, नहीं खारा।
राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा॥
राम हलका नहीं, नहीं भारा।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा॥
खंड टुकड़ा नहीं, नहीं क्यारा।
ख्याले तकसीम[5] पर चला आरा॥
राम है तेग़े-तेज़ की धारा।
खेल ले जान पर तू आ प्यारा[6]!॥
उस को आदिल[7], रहीम, ठहराना।
उससे दुन्या में बेहतरी चाहना॥

---

१ ढूंढ. २ छुटकारा. ३ शबनम, ओस ४ किसी वस्तु का देखना ५ बाँटने के ख्याल पर, भिन्नता के विचार पर. ६ ऐ प्यारे ७ मुंसिफ, न्यायकारी

ख्वाहिशों का दिलों में भर लाना।
उनके बर आने की दुआ गाना॥
मतलबी यार उस का बन जाना।
चल परे हट! नहीं वह अंजाना॥
राम जारोब-कश[1] नहीं तेरा।
सिर से गुज़रो, विसाल[2] हो मेरा॥
ख्वाहिशों को जिगर से धो डालो।
हविसे-दुन्या[3] को दिल से रो डालो॥
आर्ज़ू को जला के खाक करो।
लज़्ज़तों को मिटा के पाक करो॥
बहके फिरना भटक भटक बातिल[4]
छोड़ कर हूजिये अभी कामिल॥
तू तो मौवूद[5] है ज़माने का।
देवताओं का देव तू ही था॥
ऐहले इसलाम[6] हिन्दु, ईसाई!।
गिर्जा, मन्दिर, मसीत, दुहाई!॥
दे के दुहाई राम कहता है।
तू ही तो राम, गौड[7], मौला है॥
सब मज़ाहब में सब के मोबद[8] में।
पूजा तेरी है, नेक में, बद में॥
ऐ सदा मस्तराज मतवाला!।
रतबा औसाफ़[9] से तेरा बाला॥

१ झाड़ू देने वाला (भंगी) २ मेल, दर्शन ३ दुनियाँ के पदार्थों का लालच ४ झूटमूठ ५ पूजनीय ६ ऐ मुसलमानों! ७ God, ईश्वर, ८ मंदिर, ९ सिफ़तों, गुणों

ऐ सदा मस्त लाल मतवाला ! ।
अपनी महिमा में मौज कर बाला ॥
एकमेवाद्वितीय तेरी ज्ञान ।
वाहिदु-लाशरीक[1] मेरी शान ॥
पास मेरे फ़क़्र हो ग़ैरीयत ।
ग़ैर मुमकिन है, बल वे मेहदीयत[1] ॥
एक हो एक, आप ही हूं आप ।
राम हो राम, फिर की माला जाप ? ॥

–[१०५]

आदमी क्या है ?

(१) दाना खशखश का एक बोया था ।
बाबा आदम[1] ने इब्तदा[1] में ला ॥
एक दाना में जोर यह देखा ।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा ॥
इस क़दर बढ़ गया, फला फैला ।
जमा करने को न मिला थैला ॥
कुठले कुठली भरे हुए भरपूर ।
बनिये, सौदागरों के कोठे पूर ॥
एक दाना हक़ीर[1] छोटा सा ।
अपनी ताक़त में क्या चला निकला ॥

---

१ सिर्फ़ एक ही है, दो नहीं, एक के सिवाय और नहीं २ एक, बिना दूसरे साथी के ३ वास्तविक अभेद होना ४ कस्तल आदम जिसको हैकल है और मुसलमान अथवा यहूदियों पैगम्बर सृष्टि रचने वाला मानते हैं ५ आरम्भ से ६ गुच्छ

आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥
यह भी खशखाश ही का दाना है।
यह भी ताक़त में क्या यगाना[1] है॥
हूबहू है वुही तो इस में भी।
शक्ति आदम के बीज में जो थी॥
सच बतायें, है यह वुही दाना।
न यह फैला हुआ न दोगाना[2]॥
खूब देखो विचार करके आप।
माहीयत[3] बीज को क़लील[4] सा नाप॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को।
नज़र आता है बीज क्या तुम को?॥
असल दाना नज़र न आता है।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते-वाहिद[5] है।
तेरी कुदरत अगरचि बेअंद[6] है॥
(२) जान नन्हीं[7] को जब कि सायंसदान[8]।
इम्तिहान् को है काटता यकसान्॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
लेक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥

---

१ अकेला, अद्वितीय २ दूसरे क़िस्म का ३ असलीयत. ४ थोड़ा सा ५ अद्वैतस्वरूप ६ अगणित, बिना गिन्ती के ७ छोटा सा (कीड़ा जो कि दो बराबर हिस्सों में काटे जाने से मरता नहीं बल्कि एक के बजाय दो कीड़े हो जाते हैं) ८ सायंस या पदार्थ विद्या को जानने वाला

पेशतर काटने के एक ही था ।
जब किया काट दो हुए पैदा ॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं ।
जैसे वह कीड़ा जिससे काटे हैं ॥
दो को काटें तो चार बनते हैं ।
चार से आठ बन निकलते हैं ॥
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात ।
काटने में नहीं है आती ज़ात[१] ॥
गो मनु का शरीर छूट गया ।
पर करोड़ों हनूज़ हैं पैदा ॥
हर ऋषि की नसल[२] में है छुपी ।
शक्ति आदि-मनु में जो तब थी ॥
हाँ अगर कुछ कसर है ज़ाहिर में ।
दुर्रे-यकता[३] पड़ा है कीचड़ में ॥
झट निकालो यह हीरा साफ़ करो ।
ज़िद न कीजीयेगा, बस मुआफ़ करो ॥
(३) एक शीशे में एक ही रू[४] था ।
शीशा टूटा, अदद[५] बढ़ा रू का ॥
मुख्तलिफ़ हो गये बहुत अजज़ां[६] ।
इन में ज़ाहिर है एक ही इन्सां ॥
जैद हो बकर हो उमर ही हो ।
मज़हरे[७] आदमी है, कोई ही हो ॥

---

१ सत्य वस्तु २ औलाद, कुल ३ अद्वितीय मोती. ४ चेहरा, मुख. ५ गिन्ती, नम्बर. ६ देह, शरीर ७ मनुष्य के ज़ाहिर होने का स्थान, बनाने वाला.

गो है नफ़रे[1] का मारफ़ा[2] में ज़हूर।
नाम रूपों में है, यही मामूर ॥
पर यह नफ़रा बज़ाते-खुद क्या है ? ।
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा है ॥
इस्म फ़रज़ी, शक्ल बदलती है।
पर जो तू है, सो एक रस ही है ॥
तू ही आदम बना था, तू हव्वा[4]।
तू ही लाट साहब, तू ही हौवा ॥
तू ही है राम, तू ही था रावण।
तू ही था वह गड़रिया वृन्दावन[5] ॥
झूठ तुम का सनम[6]। न ज़ेबा[7] है।
तू ही मौला है, छोड़ दे हैं है ॥
सीमबर[8] का वह चाँद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा ॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे-मौफ़ूर[9] साथ में है तेरे ॥
माहो-खुर्शीद[10], बर्क़ो-अञ्जमो-नार।
जान करते है राम पर ही निसार[11] ॥

---

१ आम शब्द को बोलने बरतने में ख़ास २ गुणव चक अथवा नामवाचक शब्द ३ मशहूर. ४ आदम हव्वा मुसलमानों के दो पैग़म्बर हैं जिन से यह पृथिवी उत्पन्न हुई मानते हैं. ५ कृष्ण से अभिप्राय है ६ [illegible] ७ उचित, ठीक ८ चाँदी वाला ९ बहुत ज़्यादा किया हुआ प्रकाश यानी प्रकाश स्वरूप. १० चाँद, सूर्य, बिजली तारे और अग्नि ११ न्यौछावर, क़ुर्बान

नोट—(नम्बर १, २, ३ से अभिप्राय तीन प्रकार (शीज़, [illegible], शीशा) की युक्तियों से है जिनसे स्वामी जी ने सिद्धान्त ([illegible] का निर्विकार अपरिवर्तनशील है, परिवर्तन विकार केवल बाह्य नाम रूपों में है) को दर्शाया है)

तीन शरीर और वर्ण

[१०६]

तीनों अजसाम[1]।

ग़ज़ल

जाने-मन[2]! जिस्म एक ख़िलता[3] है,
इस के उतरे न कुछ बिगड़ता है ॥
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे-कसीफ़[4]।
और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे-लतीफ़[5] ॥
जिस्म तेरा कसीफ़[6] ओवर-कोट[7]।
जिस्म तेरा लतीफ़ अंडर[8]-कोट ॥
जिस्म बेरुनी[9] भट बदलता है।
जिस्म अन्दर का देरपा[10] सा है ॥
देह स्थूल मर गया जिस वक़्त।
देह सूक्ष्म चला गया उस वक़्त ॥
देह सूक्ष्म फिरे है आवागमन।
तू तो हर जा[11] है, आना जाना कौन ? ॥
पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥

---

१ शरीर २ हे मेरी जान! हे मेरे प्यारे। ३ चोगा, कोट है ४ स्थूल शरीर ५ सूक्ष्म शरीर ६ स्थूल ७ कोट के ऊपर का कोट, ८ कोट के नीचे का कोट ९ [illegible] शरीर (अर्थात ओवर कोट) १० देर तक रहने वाला. ११ हर जगह है।

जितने बर्तन हैं, अक्स[1] भी उतने।
मुख़तलिफ़ से नज़र आयेंगे ॥
लेक सूरज तो एक है सब में।
और जो सायंस पढ़ा हो मकतब में ॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आब[2] अन्दर कभी नहीं आया ॥
नूर[3] बाहर है, लेक धोके से।
बीच पानी के लोग थे समझे ॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[4], यह रहता है ॥
पानी जिस्मे-लतीफ़ को जानो।
मट्टी जिस्मे-कसीफ़ पहिचानो ॥
जाने-मन ! तू तो मिहरे-ताबां[5] है।
एक जैसा सदा दरख़शां[6] है ॥
जैहल[7] से है तू क़ैद क़ालिब[8] में।
तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में ॥
गो यह जिस्मे-लतीफ़ पानी सां।
बदलता है हमेशा ही अबदान[9] ॥
पर तेरी ज़ाते-क़ुद्से[10] वाला का।
बाल हरगिज़ न हो सका बीङ्गा[11] ॥
मेरे प्यारे ! तू आफ़ताब ही है।
अक्स मुतलक़ नहीं, तू आप ही है ॥

---

१ प्रतिबिम्ब. २ पानी, जल. ३ प्रकाश ४ घड़े, ठलिया ५ प्रकाश करने वाला सूर्य. ६ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप ७ अविद्या, अज्ञान. ८ शरीर. ९ बहुत शरीर, देह १० तेरा परम शुद्ध स्वरूप (आत्मा) ११ टेढ़ा

कये अनवर[1] जरा दिखा तू दे।
पानी उड़ना है, अवम हो कैसे? ॥
कैसा पानी, कहा तनासख[2] हो? ।
मैं मुदा हूं, यकीन रासख[3] हो ॥
इसमें ऑपटिक्स[4] से गर करो कुछ गौर।
तो सुखू, आब, मिहर[5] से नहीं और ॥
यह जमीन और सारे सय्यारे[6]।
चश्मा-ए-नूर[7] से नहीं न्यारे ॥
मेंजुलर[8] मसले को जाने दो।
एक सीधी सी बात यूं देखो ॥
यह जो आबो-सुखू औ-सहरा[9] है।
रात काली में किस ने देखा है ॥
चश्म जब आफताब ने डाली।
पानी वर्तन दिखाये वनमाली ॥
आप वर्तन है, आप पानी हैं।
क्या अजब राम की कहानी है ॥
आप मज़हर[11] हैं, साया अफगन[12] आप।
साया मज़हर कहां? है आप ही आप ॥
क्या तहय्युर[13] है, हाने हैरत है।
गैर से क्या गजब की गैरत है ॥

---

१ प्रकाश वाला स्वरूप (अपना स्वरूप) २ आवागमन (मरना और फिर जीना) ३ पक्का यकीन ४ नजर, दृष्टि का मार्ग ५ पानी और सूरज ६ आकाश के तारे इत्यादि ७ प्रकाश के स्रोत, चमकाने वाले ८ जुदा, पृथक् ९ आकाश के तारे इत्यादि की दिशा के भेद १० मगर ११ जगह जाहिर होने की १२ प्रतिबिम्ब डालने वाला १३ आश्चर्य

कैसी माया, यह कैसा तिलिस्म[1] है ।
दुनियाँ तो हैरते मुजस्सम[2] है ॥
अब ज़रा और खोज़[3] कीजेगा ।
यह अचम्भा अजीब है माया ॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है ।
इन्तहा का मज़ा जो आता है ॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्द घन ।
यानी खुद राम सच्चिदानन्द घन ॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म ।
नाम रूप हैं कहां ? है खुद ही ब्रह्म ॥
उमड आयी हो गर स्पाहे[4]-वैहम ।
फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[5] ॥
माया माया की कुछ नहीं दरअसल ।
वसल कैसे हो, अहद[6] में कब फसल[7] ॥
इस को देखो यकतवारे-अबद[8] ।
तब तो माया यह जैहल[9] है बेदर्द ॥
प्राण, अव्यक्त और अविद्या भी ।
इल्लते[10] औला हैं, नाम इस के ही ॥
ख्वाबे[11]-ग़फलत है, घन सुपुप्ती है ।
दीद[12] कारण भी यह कहलाती है ॥
आलमे-ख्वाब और बेदारी[13] ।
इस ही चश्मे से होगये जारी ॥

---

१ जादू २ आश्चर्यरूप. ३ विचार, सोचो. ४ भ्रम की फौज (सेना). ५ डर, भय. ६ अद्वैत, एक ७ फासला, अन्तर ८ जीव के लिहाज़ से, जीव दृष्टि से. ९ अविद्या, अज्ञान १० सबसे पहिला कारण, इत्यादि ११ स्वप्न. १२ दृष्टि. १३ जाग्रत.

[१०७]

कारण शरीर।

जौग्रफी[1] में नक़्शा दरिया का।
जू शजर[2] सरनगूं[3] है दिखलाया॥
गरचि निसबत शजर से रखता है।
जड़ को ऊंचा तने से रखता है॥

(ऊर्ध्व मूल मधः शाखा, गीता)

बेख[4] दरिया की तरफ़ जड़ क़ायम।
रहती कैलास पर ही है दायम[5]॥
मुर्तफ़ा[6] बेख की तरह कारण।
मुञ्जमिद[7] सर्द ठोस ज़र्रीन[8] तन॥
सख़्त मस्ती ग़ुरूर से भरपूर।
नेसती[9], लाशरीक[10] हर्कत दूर॥

[१०८]

सूक्ष्म शरीर।

इस ही कारण शरीर से पैदा।
यह लतीफ़ो-कसीफ़[11] जिस्म हुआ॥
ऊंचे कोहों[12] पै बर्फ़ सारे है।
सोने चान्दी की झलक मारे है॥

---

१ भूगोल २ वृक्ष ३ सिर के बल, उलटा मुंह ४ मूल, जड़ ५ नित्य ६ ऊंचे उठी हुई अर्थात ऊंची जड़ वाले की तरह ७ जमा हुआ ८ सुनैहली तन वाली ९ अभावक १० अद्वितीय. ११ सूक्ष्म और स्थूल. १२ पर्वत

पिघलते पिघलते बर्फ़ यही।
पर्वतों पर बनी है गंगा जी॥
इस से शफ़्फ़ाफ़ नदियां बहती हैं।
खेलती जिन में लैहरें रहती हैं॥

कोह का, फूल फल का, पत्तों का।
साया लैहरों पै लुत्फ़ है देता॥
नन्हें, नन्हें[1] यह सब नदी नाले।
बर्फ़ ऊंची के बाल के बाले॥

देनी निसबत इन्हें मुनासिब है।
देह सूक्ष्म से, और वाजिब है॥
देह सूक्ष्म है "फ़िक्रो-अक़्लो-होश।
इमत्याज़ो-ख़यालो-गुफ़्तो-नोश[2]"॥

आलमे-ख़्वाब[3] में यही सूक्ष्म।
चलता पुरज़ा बना है क्या चम खम॥
टेढ़े तिर्छे कलोल करता है।
चुहल पुहलों में क्या लचकता है॥

बर्फ़ जड़ जो शरीर कारण है।
ज़ेरे-अन्वारे[4] मिहरे-रौशन है॥
देह सूक्ष्म इसी से ढलता है।
जूं पहाड़ी नदी निकलता है॥

---

१ छोटे छोटे २ अक़्ल, होश, तमीज़, ख़याल, वाणी और श्रोत्रादि इन्द्रियों से मय (अन्तःकरण) सूक्ष्म शरीर कहलाता है ३ स्वप्नावस्था ४ प्रकाशस्वरूप सूर्य (आत्मा) के नीचे (नीचे) है

[१०६]

स्थूल शरीर।

ख्वाब गुज़रा तो जाग्रत आई।
नदी मैदान में उतर आई॥
ज्यूँही सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा।
गदला खाकी कसीफ़[1] जिस्म लिया॥
या कहो यूँ कि जिस्मे-नाज़ुक[2] ने।
सूफ मोटे के कपड़े पैहने॥
शब को शीरीं-बदन जो सोता है।
'जामा'[3] तन से उतार देता है॥
जब ज़मिस्तां[4] की रात आती है।
नँगा दरिया को कर सुलाती है॥
दरिया करके मुशाहदा[5] देखा।
खिर्क़ा[6] हर साल में नया ही था॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे-लतीफ़।
बदलता पैरहन[7] है जिस्मे-कसीफ़॥
यूं तो हर शब लिबासे-ज़ाहिर को।
दूर करता है बदने दरबर[8] को॥
इल्ला[9] फिर सुबह पैहन लेता है।
स्थूल देह में फिर आन रहता है॥

---

१ मोटा, स्थूल २ सूक्ष्म शरीर ३ कपड़ा, वस्त्र, लिबास ४ शरद ऋतु, शीत काल ५ दृष्टि, नज़र करना ६ वस्त्र, लिबास ७ पोशाक ८ अपने ऊपर के शरीर को ९ किन्तु

[११०]

आवागमन।

लेक मरते समय यह जिस्मे-लतीफ़।
बदलता मुतलक़न[1] है जिस्मे-कसीफ़॥
जब पुरानी यह हो गयी पोशाक।
दे उतारी यह फेंक दी पोशाक॥
केंचली चोला को उतार दिया।
और ही जिस्म फिर तो धार लिया॥
इस को कहते हैं हिंदू आवागमन।
बदलना जिस्म का है आवागमन॥

[१११]

आत्मा।

मिहर[2] जो बर्फ़ पर दरख्शां[3] था।
साफ़ नालों पे नूर[4]-अफ़शां था॥
वही स्थूल स्वर्द[5] मैदान् पर।
जल्वा अफ़गन[6] था, आबे-हैरां[7] पर॥
एक दरिया के तीन मौजों पर।
मिहर है एक हाज़िरो नाज़िर॥

१ बिलकुल, नितान्त २ सूर्य ३ चमकीला ४ प्रकाश छिड़कता था. ५ मैदान की नदी. ६ प्रकाश अर्थात् उसका बिम्ब डालने वाला है ७ बहुत जल.

बल्कि दुनियाँ के जितने दरिया हैं।
तेहत परतौ[1] सभी के सेह[2] जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।
जल्वा अफगन है, हाजिरो-नाजिर॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है बातनो-जाहिर[3]॥
आना जाना नहीं आत्म में।
यह तो मफरूज[4] सब हुए तन में॥
आत्मा में कहां की आवागमन।
आये किस जा को? और जाये कौन?।

[११७]

<u>तीन पर्दे।</u>

असल को अपने भूल कर इन्सान्।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान्॥
मरता खरगोश जबकि जाता है।
झाडी झाडी में सिर छुपाता है॥
है तआक्कुब[5] में देह का सय्याद[6]।
छोड़ता ही नहीं जरा जल्लाद[7]॥
गाह[8] बदने कसीफ में आया।
गाह जिस्मे लतीफ में धाया॥

---

१ प्रकाश के तले २ तीनों स्थान ३ अन्दर और बाहर ४ कल्पित, फर्ज किये गये ५ पीछे जाना भागे हुए का पीछा करना ६ शिकारी ७ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला जालिम ८ कभी

कभी कारण में है पनाहगज़ीं[1] ।
वैह्म से बन गया है बाख़तार्दी[2] ॥

[११३]

शूद्र ।

जिसने स्थूल में निशस्त[3] करी ।
"जिस्म[4]-बेरूं हूं" ठान जी[5] में ली ॥
नक़्दे-उलफत को बदन में रक्खा ।
ऐशो-इशरत हवास[6] में चक्खा ॥
करलिया जिस्म अपना पाया-ए-तख़्त ।
खाने पीने में समझ रक्खा बख़्त[7] ॥
न रक्खी इल्मो-फज़ल से कुछ ग़र्ज़ ।
एक तनपरवरी[8] ही समझा फ़र्ज़ ॥
ग़र्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं ।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[9] कहीं ॥
जिसको परवाह नहीं है इज़्ज़त की ।
है फकत आर्ज़ू[10] तो लज्ज़त की ॥
डाल कर लङ्गरे-अनानीयत[11] ।
समझा दरिया कसीफ जमीयत[12] ॥

---

१ आश्रय लेने वाला २ हारा हुआ, थका मांदा. ३ स्थिति, आसक्ति. ४ बाह्य अर्थात स्थूल शरीर. ५ चित्त. ६ इन्द्रिय. ७ धन्य भाग्य, शुभ प्रारब्ध. ८ केवल प्राण रखा या देहका पालनपोषण ९ मिलना घटना. १० इच्छा, ख्वाहिश. ११ अहंकार का लंगर. १२ इकट्ठा किया हुआ समूह

येदरम[1] देह वसीफ का न्यावर ।
इस को पढ़ना ही चाहिये अगर ॥

[११४]

वैश्य ।

डेरा जिस ने ज़मीन में रक्खा ।
राजधानी उसे बना बैठा ॥
कह रहा है ज़ुबाने हाल[2] से यह ॥
"देह सूक्ष्म हूं मैं" जो हो सो हो ॥
जो टटोली से काबू आता है ।
नाना खजर सा चीर जाता है ॥
भूका काटेगा नंगा रह लेगा ।
जाहरी पीड दु ख सह लेगा ॥
मौका शादी का हो कि मरने का ।
मर मिटेगा नहीं यह डरने का ॥
घर गिरी रक्म के खर्च कर देगा ।
चोटी कर्ज़े से भी जकड़ देगा ॥
कोई मेरे को खोटी मार न दे ।
जिस्म सूक्ष्म को गोली मार न दे ॥
फिकर हर दम जिसे यह रहती है ।
देह क्या खल्क[3] मुझ को कहती है ॥

१ एक पैसा भी जिसका मूल्य न हो, अति तुच्छ २ अपनी वाणी अर्थात वाणी और अमल से ३ जनता लोग

जान जिस की है निन्दा-स्तुति में ।
हमनशीनों[1] से बढ़ के इज़्ज़त में ॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है ।
पैंडुलम[2] की तरह तमाशा है ॥
राये लोगों की मिस्ले-चौगां[3] है ।
गेंद सां दौड़ता हरासां है ॥
रात दिन पेचो-ताब है जिस को ।
नंग का इज़तराब[4] है जिस को ॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है ।
पासे-नामूस[5] ही की धुन में है ॥
जीता औरों की राये पर जो है ।
ख्याले-वैहशत[6] फ़ज़ाये पर जो है ॥
क़ियास में जिस के टेढ़ा बेढ़ापन ।
तबा[7] जिस की सदा है मुतलव्वन[8] ॥
गाह चढ़ती है, गाह घटती है ।
रुख़ पहाड़ी नदी बदलती है ॥
ऐसा वैहमी मिज़ाज है जिस का ।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का ॥
वैश्य कहना बजा है ऐसे को ।
शकलो-सूरत में ख्वाह कैसे हो ॥

---

१ बराबर वाले साथियों से. २ घड़ी के नीचे जो धातु का टुकड़ा एक ओर से दूसरी ओर लटकता रहता है ३ गुल्ली डंडा के खेल की तरह. ४ घबराहट, व्याकुलता ५ इज़्ज़त (मान) का ख्याल, डर. ६ नफ़रत बढ़ानेवाले ख्याल. ७ प्रकृति (तबीयत) ८ नाना रंग बदल ने वाली.

[११५]

क्षत्रिय ।

जिस की निष्ठा है देह कारण में ।
है अचल, पदम[1] में हो या रण में ॥
दुनियाँ हिल जाये पर न हिलता है ।
मुस्तकिल[2]-अज़्म क़ौल पक्का है ॥
स्वाह तारीफ़ स्वाह मुज़म्मत[3] हो ।
शादी और ग़म पै जिस की क़ुदरत हो ॥
लाज से भय, जिसे ना असला[4] हो ।
दो दिलों से न काम चलता हो ॥
जो नहीं देखता है पथलिफ़[5] को ।
मर्द-नज़र वातिनं-मुवाफ़िक हो ॥
राये पर और की न चलता है ।
क़ौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुनियाँ के बन मुखालिफ़ सब ।
जान लेने को आयें उस की जब ॥
ज़हर सूली सलीब[6] या फांसी ।
हँस के सहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ़ की नहीं परवाह ।
खाली तारीफ़ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उन की दाल बूझेंगे ॥

उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारिक धर्म ।
बरतर अज़ ख़ौफ़ो-नंगो, आरो शर्म[1] ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ कुदूरत[2] है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।
नाम को वैश्य हो, कि शूद्र हो ॥
सब को दर्कार है, यह क्षत्रिय धर्म ।
जान नेशन[3] की है यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरैक्टर[4] ।
देह कारण को जान, इस का घर ॥
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय ।
राना प्रताप और शिवा जी ॥
जिस से नदियां तमाम आती हैं ।
बज़्म व्यौपार को सजाती हैं ॥
है चमक दमक और आबो-ताब ।
यह बलन्दी है गोया आलमे[5]-ताब ॥
इस ज़मीन् पर यह है बुलन्द[6] तरीं ।
मसनद[7] शाही की है ज़ेब[8] यहीं ॥
चशमा व्यवहार का है सम्भाला ।
राज है उस का, मरतबा आला ॥

---

१ लज्जा, शर्म, २ मलिनता, गदलापन ३ क़ौम, जाति ४ वह आचरण, उत्तम रूप दृढ़ चरित्र ५ सारे जगत को रौशन करने वाली (प्रकाश देने वाली) ६ [illegible] ७ गद्दी, तख़्त ८ शोभा

जोश है और खरोश है जिस में।
शूरमापन का होश है जिस में॥
शेरे नर को न लाये खातर में।
तेहलका डाले फौजो लश्कर में॥
गरज से कोह को हिलाता है।
दिल बबर[1] का भी दहिल जाता है॥
जौक़[2]-दरजौक़, फौज दल बादल।
मिथ्या, ला[3] शै है, हेच[4] और बातल[5]॥
धर्म की आन पर है जान कुर्बान्।
गीदी[6] बन कर न हो कभी हैरान्॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा।
देश पर जिस ने जान को वारा॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, बल में।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में॥
तोप बंदूक़ की सदा[7] बलन्द से डर।
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर॥
कपकपी में नहीं कभी आता।
लाले जान के पड़ें, नहीं डरता॥
गर्चे घायल हो, फिर भी सीनास्पर[8]।
शोक करता नहीं, ना कुच्छ डर॥
तीरो-तल्वार की दना दन में।
अभिमन्यु[9] सा जा पड़े रण में॥

---

१ बड़ा भारी शेर २ झुण्ड के झुण्ड ३ असत्य ४ कुछ नहीं, तुच्छ ५ झूठी ६ कमज़ोर दिल ७ आवाज़ ८ उत्साह से भरा हुआ (छाती मज़बूत किये युद्ध में डटा रहने वाला) ९ अर्जुन के पुत्र का नाम,

जां बाज़ी हो जिस की राहत[1] हो ।
अंगो-ज़ोराबरी हो फरहत[2] हो ॥
रण[3] हो, घमसान का क़यामत हो ।
बला का हंगामा[4], और शामत हो ॥
ज़ख्म ज़ख्मों पै खूब खाता है ।
पैर पीछे नहीं हटाता है ॥
सख्त से सख्त कारज़ारो-रज़्म[4] ।
शान्ति दिल में हो, अज़्म हो मिस्तहकम[5] ॥
जिस्म हर्कत में, चित्त साकन[6] हो ।
दिल तो फारिग़ हो, कारकुन तन हो ॥
हर दो आनिब समा भयङ्कर था ।
तुन्द मोरो-मलख[7] सा लशकर था ॥
हाथी घोड़ों का, शूर वीरों का ।
शंख बाजे का, और तीरों का ॥
शोर था आस्मां को चीर रहा ।
गर्द से मिहर बन फ़क़ीर रहा ॥
अफरा तफरी में और गड़बड़ में ।
वह दिलावर कमाल की जड़ में ॥
क्या दिखाता जवां मर्दी है ।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है ॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है ।
फिलसफा[8] क्या अजब बनाता है ॥

---

१ आराम, शान्ति आनन्द. २ खुशी, आमोद ३ युद्ध, लड़ाई. ४ महाभारत ५ बड़े मज़बूत (पक्के) इरादे वाला ६ स्थिर, अचल ७ अगणित, बेशुमार, अगणेय ८ ज्ञान, तत्त्वज्ञान

२ { जिस के मुक़नों को ता अबद[1] कामिल ।
{ सोचा चाहेंगे ग़ौर से मिल मिल ॥
सख़्त नारों[3] में शान्त यह सुर है ।
सखा यह मन चला बहादुर है ॥

[११७]

ब्राह्मण ।

कोह[4] पर शिव नज़र जो आता है ।
बर्फ़ को आब[5] कर बहाता है ॥
जिस से कैलास ही न ताबां[6] है ।
रौनक़-ए-बेहर[7] और बियाबां है ॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूद्र को ।
दे है प्रकाश किह-ओ मिहतर[8] को ॥
ओम् आनन्द आत्मा चैतन्य ।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन[9] ॥
छिपा इस में है जिसे की कि "यह मैं हूं" ।
"शिव हूं, सूरज हूं, ब्रह्म शङ्कर हूं" ॥
रूये-आलम[10] पै नूर-अफ़गन[11] है ।
यह ब्राह्मण है, यह ब्राह्मण है ॥

---

१ सदैव २ यहां भगवान् कृष्ण से अभिप्राय है. ३ नारों में, अर्थात् जलों में ४ पर्वत ५ जल ६ चमकीला ७ समुद्र की सीमा ८ छोटे और बड़े सब को, ९ प्रकाश, (शिव) सामने वाला. १० सारे संसार पर. ११ प्रकाशमान

मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे॥
तीन गुण से परे है, पर सब को।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुच्छ हो॥
जिस को फरहत न दे कभी पैसा।
ब्राह्मण है वोही जो हो ऐसा॥
खड़ा करता है, नहीं दस्ते-दुआ[1]।
है ग़नी[2] ज्ञान[3] ही में वह धनी हुआ॥
माँगता ख्वाब में भी कुछ न है।
उस की दृष्टि से कान्च कुंदन है॥
विष्णु को लात मार देता है।[4]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है॥
तीनों अजसाम से गुज़र कर पार।
यां[5] श्रदू है नहीं न कोई यार॥
हुसन में अपने खुद दरख्शां[7] हूं।
मिहरे-तावां[8] हूं. मिहरे तावां हूं॥
मिल्लतें[9] क्या मज़े से खाता हूं।
मौत चटनी मिर्च लगाता हूं॥
मेरी किरणों में हो गया धोका।
आब[10] का था सुराबे-दुन्या[11] का॥
किला दु.खों का सर किया, ढाया।
राज़ अफलाको-मिहर[12] पर पाया॥

---

१ मांगने के लिये हाथ पसारना २ बड़ा धनवान ३ स्वस्वरूप. ४ भृगु ऋषि से अभिप्राय है ५ यहां हैं ६ दुश्मन, शत्रु ७ रौशन ८ प्रकाशमान सूर्य. ९ मत भेद पन्थ १० जल ११ मृगतृष्णा के जल का १२ आकाश और सूर्य

हुस्ने-मुतलक़[1], सरूरे-मुतलक़[1] पर।
झंडा गाड़ा, फुरैरा लैहराया॥
कुछ न बिगड़ा था, कुछ न सुधरा अब।
कुछ गया था न, कुछ नहीं आया॥

---

१. सत्य स्वरूप = आनन्द स्वरूप

—:o:—

नोट

अब राम वर्षा का दूसरा भाग आरम्भ होता है। इस में भिन्न २ कवियों के यह भजन दर्ज हैं जिन को उत्तम या आनन्द दायक समझ कर स्वामी राम ने उन के अपने ही रूप में या कुछ बदल कर अपनी नोट बुकों तथा लेखों में स्थान दे रक्खा था। और कुछ ऐसे भी हैं जिन को राम जी के पट्ट शिष्य श्री १०८ स्वामी नारायण ने उत्तम समझ कर इस नाम की पुस्तक में छापा था।

मंत्री.

राम-वर्षा ।

(द्वितीय भाग)

मंगलाचरण

[१]

लावनी ।

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं, अजर, अमर, अज, अविनाशी ।
ज्ञान भान से मोक्ष होजावे, कट जावे यम की फांसी ॥
अनादि ब्रह्म, अद्वैत, द्वैत का जा में नामो-निशान् नहीं ।
अखंड सदा सुख, जा का कोई आदि मध्य अवसां नहीं ॥
निर्गुण, निर्विकल्प, निरुपमा, जा की कोई शान नहीं ।
निर्विकार, निरवयव, माया का जा में रञ्चक भान नहीं ॥

यही ब्रह्म हूं, मनन निरन्तर, करें मोक्ष हित सन्यासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं, अजर, अमर, अज, अविनाशी ॥ १ ॥

सर्व देशी हूं ब्रह्म हमारा एक जगह अस्थान[1] नहीं ।
रमा हूं, सब में मुझ से कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं ॥
देख विचारो, सिवाय ब्रह्म के हुआ कभी कुछ आन नहीं ।
कभी न छूटे पीड़ दुःख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं ॥
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नहीं पड़े भोगनी चौरासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर, अमर, अज, अविनाशी ॥ २ ॥

अदृष्ट, अगोचर, सदा दृष्ट में जा का कोई आकार नहीं ।
नेति, नेति, कह निगम ऋषीश्वर, पाने जिसका पार नहीं ॥
अलख ब्रह्म लियो जान, जगत् नहीं, कार नहीं कोई यार नहीं ।
आंख खोल दिलकी टुक प्यारे, कौन तरफ गुलजार नहीं ॥
सत्य रूप आनन्द-राशी हूं कहूं जिसे घट घट वासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर, अज, अविनाशी ॥ ३ ॥

[७]

सवैया राग चमनकी

सब शाहों का शाह मैं, मेरा शाह न कोय ।
सब देवों का देव मैं, मेरा देव न होय ॥
चाबुक सब पर है मेरा, क्या सुल्तान[2] अमीर ।
पत्ता मुझ बिन न हिले, आग्नी[3] मेरी अमीर[4] ॥

---

१ स्थान २ राजा महाराजा ३ वायु की लहर, कहर ४ अधीन.

गुरु-स्तुति

[३]

दादरा राग विभास

नारायण सब रम रह्या, नहीं द्वैत की गंध ।
वही एक बहु[1] रूप है, पहिला बोलूं छन्द ॥ १ ॥
कृपा सद्गुरु देव से, कटी अविद्या फन्द ।
मैं तो शुद्ध ब्रह्म हूं, द्वितीया बोलूं छन्द ॥ २ ॥
स्व स्वरूप राम[2] को लखूं एक सच्चिदानन्द ।
वह मेरी है आत्मा, तृतीया बोलूं छन्द ॥ ३ ॥
श्वास श्वास अनुभव करूं, राम कृष्ण गोविन्द ।
सो मैं ही कोई भिन्न न, चतुर्थ यह बोलूं छन्द ॥ ४ ॥
सा[3] स्वरूप सा में लख्यौ, निजानन्द सुखकन्द ।
सो आनन्द मैं एक रस, पञ्चम बोलूं छन्द ॥ ५ ॥

[४]

राग केदार राम रूपक ये राम[?]

रफीकों[1] में गर है मुरव्वत[2] तो तुझ से ।
अजीजों[3] में गर हे मुहब्बत तो तुझ से ॥ १ ॥
खजानों में जो कुछ है दौलत तो तुझ से ।
अमीरों में हे जाह ओ शौकत[7] तो तुझ से ॥ २ ॥

---

१ अनेक, नाना २ राम भगवान् या राम स्वामी से भी अभिप्राय है ३ वही, ४ मरम्मत, लिहाज, कृपा, शील ६ प्यारों में ७ पद, नाम और वैभव

हकीमों में है इल्मो-हिक्मत[1] तो तुझ से ।
या रौनक़े-जहां[2], या है बर्कत तो तुझ से ॥ ३ ॥
है रोकर यह तकरारे-उलफ़त[3] तो तुझ से ।
कि इतनी यह हो मेरी क़िस्मत तो तुझ से ॥ ४ ॥
मेरे जिस्मो-जाँ[4] में हो हर्कत तो तुझ से ।
उड़े मा व ओ[5]-मनी की यह शिर्कत[6] तो तुझ से ॥ ५ ॥
मिले सदक़ा[7] होने की इज़्ज़त तो तुझ से ।
सदा एक होने की लज़्ज़त तो तुझ से ॥ ६ ॥
उड़ें टेढ़ी बांकी यह चालाकियाँ सब ।
सिपर[8] फेंक, ढूंढूं सलामत[9] तो तुझ से ॥ ७ ॥

[५]

राग कल्याण

क्या क्या रक्खे हैं राम ! सामान तेरी कुदरत ।
बदले हैं रंग क्या क्या, हर शान[10] तेरी कुदरत ॥ १ ॥
सब मस्त हो रहे हैं, पैहचान तेरी कुदरत ।
तीतर पुकारते हैं, सुबहान[11] तेरी कुदरत ॥ २ ॥
कोयल[12] की कूक में भी, तेरा ही नाम हैगा ।
और मोर की अटल[13] में, तेरा ही प्याम[14] हैगा ॥ ३ ॥

---

१ विद्या और चिकित्सा २ संसार की सुन्दरता ३ प्रेम के झगड़े और विवाद. ४ देह और मन. ५ अहंकार ६ मलहदगी, दुराई ७ अर्पण होना ८ ढाल पर. ९ बचाव, कल्याण, आरोग्य. १० शक्ल ११ तेरी माया का क्या कहना है १२ पक्षी का नाम १३ चाल १४ पैग़ाम, सन्देसा ख़बर, चिट्ठी

यह रंग सोराहड़े[1] का जो सुबहो शाम[2] हैगा।
यह और का नहीं है, तेरा ही काम हैगा ॥ ४ ॥
बादल हवा के ऊपर, घंघोर नाचते हैं।
मेंडक उछल रहे हैं, और मोर नाचते हैं ॥ ५ ॥
बोलें बीये[3] बटेरे, कुमरी पुकारे कू कू।
पी पी करें पपीहा, बगले पुकारें तू तू ॥ ६ ॥
क्या फाख़ताँ की हक़ हक़[4], क्या हुद हुदों की हू हू।
सब रट रहे हैं तुझ को, क्या पंख[5] क्या पखेरू ॥ ७ ॥

[६]

बरवा ताल तीन

कहीं कैवां[6] सितारह हो के अपना नूर चमकाया।
ज़ुहल में आ कहीं चमका, कहीं मरीख़[7] में आया ॥
कहीं सूरज हो गया क्या तेज़ जल्वा[8] आप दिखलाया।
कहीं हो चाँद चमका और कहीं ख़ुद बन गया साया ॥

{ तू ही बातन[9] में पिनहां[10] है, तू ज़ाहर हर मकान् पर है।
{ तू मुनियों के मनों में है, तू रिंदों की ज़ुबान् पर है (टेक) ॥ १ ॥

तेरा ही हुक्म है इन्दर, जो बरसाता है यह पानी।
हवा अठखेलियां करती है तेरे ज़ेरे[11]-निगरानी ॥

---

१ बरफ़, प्रातः व सायं आकाश में लाली. २ प्रातः सायं. ३ पक्षी का नाम ४ आवाज़ का नाम ५ पक्षी बड़े छोटे. ६ शनिश्चर तारा ७ मंगल तारा ८ प्रकाश ९ अन्दर. १० छिपा हुआ. ११ निगरानी के नीचे, रक्षा या इन्तज़ाम के तले,

तजल्ली[1] आतशे सोजां[2] में तेरी ही है नूरानी[3]।
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्गे-हैवानी[4] ॥ तूही० २

तू ही आँखों में नूरे-मर्दमक[5] हो आप चमका है।
तू ही हो अक़्ल का जौहर सिरों में सब के दमका है ॥
तेरे ही नूर का जलसा है कलश में जो नम[6] का है।
तू रौनक़ हर चमन[7] की है; तू दिरोचर जामे-जम का है ॥ तूही० ३

कहीं ताऊस[8] ज़र्री[9] बाल बनकर रक्स[10] करता है।
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है ॥
कहीं हो फ़ाख़्ता[11] कू कू की सी आवाज करता है।
कहीं बुलबुल है खुद है बाग़बां फिर उससे डरता है ॥ तू० ४

कहीं शाहीन[12] बना शहपर[13], कहीं शक्रा[14] है मस्ताना।
शिकारी आप बनता है, कहीं है आब[15] और दाना ॥
राटक से चाल चलता है कहीं माशूक़े-जानाना[16]।
सनम[17] तूं, मह्रम, नाक़ूस[18] तू खुद तू है बुतख़ाना[19] ॥ तूही० ५

तू ही याक़ूत[20] में रौशन, तुही पिस्ता[21] और दुर में[22]।
तू ही लाल ओ-बदख़्शां[23] में, तू ही है खुद समुद्र में ॥
तू ही कोह[24] और दर्या में, तू ही दीवार में, दर[25] में।
तू ही मेहरा[26] में आबादी में तेरा नूर मय्यर[27] में ॥ तूही० ६

---

१ रौशनी २ जलती हुई अग्नि ३ चमक ४ पशु स्वभाव हरणु देवता. ५ आँख की पुतली की रौशनी ६ नदी. ७ बाग़ ८ बादशाह जमशेद का प्याला ९ मोर. १० सुनैहरी बालों वाला. ११ नाच १२ मुर्गी (मुरगाबी) (१३, १४, १५) पक्षियों के नाम. १६ पानी और दाना १७ प्रिया जी की तरह १८ मित्र प्यारा. १९ यार २० मंदिर (२१, २२, २३) मोती और लाल २४ पर्वत २५ द्वार, घर. २६ जगत २७ सूर्य

[७]

राग समाज ताल ठुमरी

तूं हीं हैं, मैं नाहीं वे सजनां[1]! तूहीं हैं, मैं नाहीं (टेक)
जां[2] सोवां, तां[3] तू नाले[4] सोवें, जां चल्लां[5], तां तू राहीं[6] ॥ तूं० १
जां बोला तां तू नाले बोलें, चुप करां, मन माहीं[7] ॥ तूं०, २
सहक[8] सहक के मिलिया दिलबर, जिंदढी[9] घोल गंवाई[10] ॥ तूं०४

[८]

राग सोहनी

जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं,
मज़ाके-उल्फ़त[11] उठा चुके हैं।
यह अपनी हस्ती[12] मिटा चुके हैं,
खुदा को खुद ही में पा चुके हैं ॥ १ ॥
न सूये-काबा[13] झुकाते हैं सर,
न आते हैं बुतकदा[14] के दर[15] पर।
उन्हें हैं दैरो-हरम[16] बराबर,
जो तुम को किबला[17] बना चुके हैं ॥ २ ॥
न हम से प्यारे! छुड़ाओ दामां[18],
न देखो बागे-बहारो-रिज़वां[19]।

---

१ रे प्यारे. २ जब. ३ तब. ४ साथ ५ जब चलने लगूं. ६ तब तूं साथ रास्ते में होता है. ७ चुप होऊं तो तू मन के भीतर होता है ८ तड़प तड़फ के. ९ जान. १० उसी के पाने में या स्मरण में खो दी. ११ प्रेम का स्वाद, लुत्फ या प्रेमानन्द. १२ जीवन, स्थिति १३ काबा (ईश्वर के घर,) की ओर १४ मन्दिर. १५ द्वार. १६ मन्दिर, मसजिद १७ काबा या इष्ट देव १८ पल्ला. १९ स्वर्ग.

कब उनको प्यारे हैं हूरो गिलमां[1],
जो तुम को प्यारा बना चुके हैं ॥ ३ ॥
सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे-हस्ती[2]।
मरेंगे यारो ! तलब[3] में हक[4] की,
जो नामे तालिब[5] लिखा चुके हैं ॥ ४ ॥
न बोल सकते थे कुछ जुबां से,
न याद उन को है जिस्मो-जां[6] से।
गुजर गये हैं वह हर मकां[7] से,
जो उस के कूचे में आचुके हैं ॥ ५ ॥
गर और अपना भला जो चाहो,
यह राम अपने से कह सुनाओ।
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ॥ ६ ॥

[६]

राग पीलू ताल दीप चन्दी

जो तू है, सो मैं हूं, जो मैं हूं, सो तू है।
न कुछ आर्जू[8] है, न कुछ जुस्तजू[9] है ॥ १ ॥ (टेक)
बसा राम मुझ में, मैं अब राम में हूं।
न इक है, न दो है, सदा तू ही तू है ॥ २ ॥

१ चपलता और हाव (नखरे). २ जीवन या प्राण की स्थिति ३ जिज्ञासा ४ सत्य स्वरूप, अपने प्यारे को. ५ जिज्ञासु का नाम ६ देह प्राण ७ स्थान, दर, सीमा ८ इच्छा. ९ जिज्ञासा.

उठा जब कि माया का परदा यह सारा।
किया गम खुशी ने भी मुझ से किनारा ॥ ३ ॥
ज़ुबां को न ताकत, न मन को रसाई[1]।
मिली मुझ को अब अपनी बादशाही ॥ ४ ॥

उपदेश

[१०]

शशि[2] सूर[3] पावक[4] को करे प्रकाश सो निजधाम[5] वे।
इस चाम[6] से त्यज[7] नेह[8] तू, उस धाम कर विश्राम[9] वे ॥१॥
इक दमक तेरी पाय के सब चमकदा संसार वे।
टुक[10] चीन्ह ब्रह्मानन्द को, जगनीर[11] से होय पार वे ॥ २ ॥
मंसूर[12] ने सूली सही, पर बोलता वही वचन[13] वे।
बन्दा[14] न पायो खल्क़[15] में, जब देखियो निज[16] नयन वे ॥ ३ ॥
आशिक़ लखावें सैन[17] जो, लख[18] सैन को कर चैन वे।
तू आप मालिक खुद खुदा, क्यों भटकदा दिन रैन[19] वे ॥ ४ ॥
भाखे[20] ज्ञानी, सुन प्राणी, नीर[21] न, धर धीर वे।
आपा[22] भुलायो जग बनायो, सब अपनी तक़सीर[23] वे ॥ ५ ॥

---

१ पहुंच २ चन्द्रमा ३ सूर्य ४ अग्नि ५ अपना असली घर, परम धाम, अर्थात् आत्म स्वरूप ६ चमड़ा अर्थात् देह ७ छोड़ ८ प्रीति, आसक्ति ९ आराम, चैन १० ले अनुभव कर ११ भव जल, जगत रूपी समुद्र से पार हो, १२ एक मस्त फ़क़ीर जी का नाम है १३ कलमा, मंत्र रमज़ १४ जीव, दास १५ सृष्टि, जगत् १६ अपने नेत्र १७ इशारा, संकेत १८ समझ, याद कर. १९ रात्रि २० कहे २१ जल २२ अपना स्वरूप २३ क़सूर, दोष, अपराध

[११]

झिंझोटी ताल दादरा

गफ़लत से जाग देख क्या लुतफ़ की बात है } (टेक)
नज़दीक यार है मगर नज़र न आत है

दुई की गर्द[1] से चश्म[2] की रोशनी गई।
महबूब[3] के दीदार[4] की ताक़त नहीं रही॥
इसी वास्ते दुन्यां के तू फंदे में फांस[5] है॥ गफ० १
बिसियार[6] तलब[7] है अगर तुझे दीदार की।
मुर्शद[8] के सखुन[9] से चलो गली विचार की॥
जिस से पलक में सब फंद टूट जात है॥ गफ० २
जिस के हुज़ूर[10] से तेरा रोशन वजूद[11] है।
ख़लक[12] की सभी खूबियों का भी जो खूब है॥
सोई है तेरा यार यह सब वेद गात है॥ गफ० ३
कहते हैं ब्रह्मानंद नहीं तेरे से जुदा।
वु ही है तू कुरान में लिखा है जो खुदा॥
जिगर में लेक[13] समझना मुश्किल की बात है॥ गफ० ४

[१२]

झिंझोटी ताल दादरा

गाफिल ! तू जाग देख क्या तेरा स्वरूप है।
किस वास्ते पड़ा जन्म मरण के कूप[14] है॥ (टेक)

---

१ धूल. २ आँख ३ प्यारा, माशूक ४ दर्शन ५ आसक्त, फंसा हुआ ६ अधिक, बहुत ७ जिज्ञासा, ढूंढ, चाह ८ गुरु, ९ उपदेश, नसीहत १० दरबार, उपस्थिति अर्थात् मौजूदगी ११ शरीर १२ सृष्टि १३ किन्तु १४ कुआँ, गढ़ा

यह देह गृह नाशवान है नहीं तेरा।
वृथाभिमान जात में फिरे कहां घेरा॥
तू तो सदा विनाश से परे अनूप[1] है॥ गाफिल तू० १
भेद दृष्टि कौन जभी दीन हो गया।
स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया॥
विचार देख एक तू भूपों[2] का भूप है॥ गाफिल० २
तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतता[3]।
तू देह तीन दृश्य को सदा है देखता॥
द्रष्टा नहीं होता कभी दृश्यरूप है॥ गाफिल० ३
कहते हैं ब्रह्मा द, महा।द पाइये।
इस बात को विचार सदा दिल में लाइये॥
तू देह जुदा करके जैसे छाया धूप है॥ गाफिल० ४

[१३]

भझोटी ताल दादरा।

अजी मान, मान, मान कहा मान ले मेरा।
जान, जान, जान, रूप जान ले तेरा॥ (टेक)
जाने बिना स्वरूप, गम न जावे है कभी।
कहते हैं वेद बार बार बात यह सभी॥
हुशियार हो आजाद, बार[1] बार न मेरा॥ मान, मान १
जाता है देखने जिसे काशी द्वारका।
मुकाम है बदन में तेरे उसी यार का॥

---

१ अनूप उपमा रहित २ स्वामी बादशाह ३ हरकत करता, जिन्दादिल

करता १ भार

लेकिन बिना विचार किसी ने नहीं हेरा[1] ॥ मान० २
नयनन[2] के नयन जो है सो बैनन[2] के बैन है ।
जिस के बिना शरीर में न पलक चैन है ॥
पिछान ले चक्षुर[3] सो स्वरूप है तेरा ॥ मान० ३
ऐ प्यारी जान ! जान तू भूपों की भूप है ।
नाचत है प्रकृति सदा मुजरा अनूप है ॥
संभाल अपने को, यह तुझे करे न घेरा ॥ मान० ४
कहते हैं ब्रह्मानन्द, ब्रह्मानन्द तू सही ।
बात यह पुराण वेद ग्रन्थ में कही ॥
विचार देख मिटे जन्म मरण का फेरा[5] ॥ मान० ५

[६८]

राग भैरवी ताल ठुमरी ।

दिलबर पास वसदा, ढूंढन किथें[6] जावना ॥ टेक०
गली ते[7] बाज़ार ढूण्डां, शहर ते दयार[8] ढूंढां ।
घर घर हज़ार ढूंडां, पता नहीं पावना ॥ दिलबर पास० १
मक्के ते मदीने जाईये, मथे चा मसीत[9] घसाईये ।
उची कूक बांग सुनाईये, मिले नहीं जावना ॥ दिलबर० २
गंगा गोदें[10] जमुना नहावो, काशी ते प्रयाग जावो ।
बद्री केदार जावो, मुड[11] घर आवना ॥ दिलबर पास० ३

---

१ माया २ चक्षु, आँखें ३ ज्ञान-चक्षु अथवा आन्तरीय दृष्टि, बुद्धि इत्यादि ४ अपनी तरह से ५ आवागमन का चक्कर, ६ कहाँ ७ और ८ देश ९ मन्दिर १० मज़ार, कब्र ११ वापिस

देस ते दसौर ढूंडो, दिल्ली ते पशौर ढूंडो ।
भावें ठौर ठौर ढूंडो, किसे न बतावना ॥ दिलवर पास० ४
बनो जोगी ते बैरागी, सन्यासी जगत त्यागी ।
प्यारे से न प्रीत लागी, भेस की बटावना ॥ दिलवर पास० ५
भावें गले माला डाल, चंदन लगावो भाल ।
प्रीत नहीं साईं नाल, जगत नू दिखावना ॥ दिलवर पास० ६
मोमनांदी[1] शक्ल बनावें, काफरा दे कम्म कमावें ।
मथे[2] ते मेहराब[3] लगावें, मोलवी कहावना ॥ दिलवर पास० ७

[७५]

राग भैरवी ताल तीन ।

बराये नाम[4] भी अपना न कुच्छ बाकी निशां रखना ।
न तन रखना, न दिल रखना, न जी[5] रखना, न जां रखना ॥ १ ॥
ताल्लुक[6] तोड देना, छोड देना उस की पाबंदी[7] ।
खबरदार अपनी गर्दन पर न यह बारे-गिरां[8] रखना ॥ २ ॥
मिलेगी क्या मदद तुझ को मददगाराने दुनियाँ[9] से ।
उमेदे-यावरी[10] उन से न यहां रखना, न वहां रखना ॥ ३ ॥
बहुत मजबूत घर है आक़बत[11] का दारे-दुनियाँ[12] से ।
उठा लेना यहां से अपनी दौलत और वहां रखना ॥ ४ ॥

---

१ सन्तों की २ पेशानी पर माथे पर ३ तस्लीम की दाग मां मस्जिद के पत्थरों की दाग, महब ४ नाम मात्र भी ५ चित्त ६ सम्बन्ध ७ कैद, मजबूरी, विवशता ८ भारी बोझ ९ संसार के सहायकों १० फल की आशा ११ परलोक, १२ संसार नश्वर से

उठा देना तसव्वर[1] ग़ैर[2] की सूरत का आँखों से।
फ़क़त सीने के आयीने[3] में नक़्शे-दिलस्तान्[4] रखना ॥ ५ ॥
किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे-फ़ानी[5] में।
ठिकाना बे ठिकाना और मकाँ बर लामकाँ[6] रखना ॥ ६ ॥

[६६]

राग सोहनी ताल तेवरा।

दुनियाँ अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[7] यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले॥
मेवा खिला, मेवा मिले, फल फूल दे, फल पात ले।
आराम दे, आराम ले, दुःख दर्द दे, आफ़ात[8] ले॥

कलजुग नहीं करजुग है यह, यहां दिन को दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥ } टेक

काँटा किसी के मत लगा, गो मिस्ले-गुल[9] फूला है तू।
वह तेरे हक़[10] में तीर है, किस बात पर भूला है तू॥
मत आग में डाल और को, क्या घास का पूला है तू।
सुन राम यह नुक़ता बेख़बर, किस बात पर भूला है तू॥

कलजुग नहीं० ॥२॥

---

१ भ्रम, ख़्याल २ द्वैत भावना ३ अन्तःकरण के शीशे में, ४ दिल हरने वाले (आत्मा, यार) की सूरत (का ध्यान) रखना ५ मृत्युलोक ६ देशकालातीत या स्थान रहित ७ वस्तु, चीज़ ८ दुःख, मुसीबत ९ पुष्प की तरह १० तेरे वास्ते तेरे को

शोख़ी शरारत मकरो फ़न[1], सब का बसेरा[2] है यहां।
जो जो दिखाया और को, वह ख़ुद भी देखा है यहां॥
खोटी खरी जो कुछ कही, तिस का परेखा[3] है यहाँ।
जो जो पड़ा तुलता है मोल, तिल तिल का लेखा है यहां॥
फलजुग नहीं० ॥३॥

जो और की बस्ती[4] रखे, उस का भी बस्ता है पुरा।
जो और के मारे छुरी, उस के भी लगता है छुरा॥
जो और की तोड़े घड़ी, उस का भी टूटे है घड़ा।
जो और की चीते[5] बदी, उस का भी होता है बुरा॥
फलजुग नहीं० ॥४॥

जो और को फल देवेगा, वह भी सदा फल पावेगा।
गेहूं से गेहूं, जौ से जौ, चाँवल से चाँवल पावेगा॥
जो आज देवेगा यहां, वैसा ही वह फल पावेगा।
कल देवेगा कल पावेगा, फिर देवेगा फिर पावेगा॥
फलजुग नहीं० ॥५॥

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स यहां तैयार है।
आराम में आराम है, आज़ार[6] में आज़ार है॥
दुनियाँ न जान इस को मियां, दरिया की यह मँझधार है।
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है॥
फलजुग नहीं० ॥६॥

तू और की तारीफ़ कर, तुझ को सनाख्वानी[7] मिले।
कर मुश्किल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले॥

---

१ दग़ा फरेब, धोखा २ बसेरा, रहने की जगह, घर ३ परखना, जाँचना. ४ बस्ती ५ दिल में ठानना, विचार करे. ६ दुःख ७ तारीफ़, स्तुति.

तू और को मेहमान कर, तुझ को भी मेहमानी मिले ।
रोटी खिला रोटी मिले, पानी पिला पानी मिले ॥

कलजुग नहीं० ॥७॥

जो गुल[1] खिलावे और का, उसका ही गुल खिलता भी है ।
जो और का कीले[2] है मुंह, उस का ही मुंह किलता भी है ॥
जो और का छीले जिगर, उस का जिगर छिलता भी है ।
जो और को देवे कपट, उस को कपट मिलता भी है ॥

कलजुग नहीं० ॥८॥

कर चुक जो कुछ करना है अब, यह दम तो कोई आन[3] है ।
नुक़सान में नुक़सान है, एहसान में एहसान है ॥
तोहमत में यहां तोहमत मिले, तूफ़ान में तूफ़ान है ।
रेहमान[5] को रेहमान है, शैतान को शैतान है ॥

कलयुग नहीं० ॥९॥

यहाँ ज़हर दे तो ज़हर ले, शकर में शकर देख ले ।
नेकों को नेकी का मज़ा, मूज़ी[6] को टक्कर देख ले ॥
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले ।
गर तुझ को यह बावर[4] नहीं, तो तू भी करके देख ले ॥

कलयुग नहीं० ॥१०॥

अपने नफ़े के वास्ते मत और का नुक़सान कर ।
तेरा भी नुक़सान होयेगा, इस बात पर तू ध्यान कर ॥

---

१ फूल, पुष्प. २ कीले अर्थात् निन्दा करना या किसी पर धब्बा का दाग़ लगाना ३ घड़ी, पल ४ ऐतबार, यक़ीन ५ [illegible] दया करने वाला, [illegible] देने वाला. ६ निर्दय, [illegible]

खाना जो खा सो देख कर, पानी पिये सो छान कर।
यहाँ पाँ को रख तूं फूंक कर, और खौफ से गुज़रान कर॥
कलयुग नहीं० ११

ग़फलत की यह जगह नहीं, साहिबे-इदराक[1] रहे।
दिलशाद[2] रख दिल शाद रहे, ग़मनाक रख ग़मनाक रहे॥
हर हाल में भी तू नज़ीर[3], अब हर क़दम की खाक रहे।
यह वह मकाँ है ओ मियाँ! याँ पाक[4] रहे, बेबाक[5] रहे॥
कलयुग नहीं० १२

[१७]

राग सोहनी ताल तेवरा।

दुनियाँ है जिसका नाम मीयां! यह अजब तरह की हस्ती[6] है।
जो मैंहगों को तो मैंहगी है और सस्तों को यह सस्ती है॥
यहां हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन[7] अदालत बस्ती है।
गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त करे तो पस्ती है॥[8]

कुछ देर नहीं, अंधेर नहीं, इन्साफ और अदलपरस्ती[9] है। }
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यहाँ सौदा दस्त बदस्ती है॥ } टेक

जो और किसी का मान रखे, तो उस को भी अरु मान मिले।
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान[10] मिले॥

---

१ तीव्र द्रष्टा, तेज समझ वाला पुरुष. २ प्रसन्न चित्त, आनन्दित चित्त ३ कवि का नाम है ४ शुद्ध, पवित्र ५ निडर, बेखौफ,भय रहित ६ वस्तु है ७ हर वक्त, हरदम ८ घटाना, कम करना जो अर्थात् झगड़े बढ़ गये तो उसके वास्ते बाज़ार गर्म है और जो लड़ाई झगड़ों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुआ बाज़ार है. ९ [illegible]

सुंदर नारी देख प्यारी, मन को लुभाना न चाहिये ।
जलति अगन में जान पतंग समान समाना न चाहिये ॥
बिन जाने परिणाम[1] काम को हाथ लगाना न चाहिये ।
कोई दिन का ख्याल कपट का जाल बिछाना न चाहिये ॥ नाम १

यह माया बिजली का चमका, मन को जमाना न चाहिये ।
बिछुड़ेगा संयोग भोग का रोग लगाना न चाहिये ॥
लगे हमेशा रंग संग दुर्जन के जाना न चाहिये ।
नदी नाव की रीत किसी से प्रीत लगाना न चाहिये ॥ नाम २

बांधव[2] जन के हेत[3] पाप का खेत जमाना न चाहिये ।
अपने पाँव पर अपने कर[4] से चोट लगाना न चाहिये ॥
अपना करना भरना दोष किसी पर लाना न चाहिये ।
अपनी आँख है मंद चंद को दो बतलाना न चाहिये ॥ नाम ३

करना जो शुभ काज आज कर देर लगाना न चाहिये ।
कल जाने क्या हाल काल को दूर बिठाना न चाहिये ॥
दुर्लभ तन को पाय कर विषयों में गंवाना न चाहिये ।
भवसागर में नाव पाय चक्कर में डुबाना न चाहिये ॥ नाम ४

दारादिक[5] सब फेर फेर तिन में अटकाना न चाहिये ।
करी वमन[6] के ऊपर फिर कर दिल ललचाना न चाहिये ॥
जान आपनो रूप कूप[7] गृह में लटकाना न चाहिये ।
पूरे गुरु को खोज मज़हब का बोझ उठाना न चाहिये ॥ नाम ५

बचा चाहे पापन से मन से मौत भुलाना न चाहिये ।
जो है सुख की लाग, तो कर सब त्याग, फसाना न चाहिये ॥

१ नतीजा २ सम्बन्धी ३ कारण ४ हाथ ५ स्त्री इत्यादि ६ के की हुई का गली ७ उस जगी कुआ मन निषाद

जो चाहे तू ज्ञान, विषय के बाण चलाना न चाहिये।
जो है मोक्ष की आश[1] संग की पाश[2] बढ़ाना न चाहिये॥ नाम ६
परमेश्वर है तन में वन में खोजन जाना न चाहिये।
कस्तूरी है पास, मृग को घास सुंघाना न चाहिये॥
कर सत्संग, विचार, निहार, कभी बिसराना न चाहिये।
आत्म सुख को भोग, भोग में फिर भटकाना न चाहिये॥ नाम ७

[६९]

चेतो।

चेतो चेतो जल्द मुसाफिर गाड़ी जाने वाली है। ⎫
लाइन क्लियर लेने को तैय्यार गार्ड वन्माली है॥ ⎭ टेक

पांच धातु की रेल है जिसको मन अंजन लेजाता है।
इन्द्री गण के पहियों से वह खूब ही तेज़ चलाता है॥
मील हज़ारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है।
कठिन वज्र लोहे जैसा होकर चंचलता दिखलाता है॥
बड़े गार्ड वन्माली से दोनों इक की रखवाली है॥ १॥ चेतो०
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया चार मुख्य स्टेशन हैं।
आठ पैहर इन ही में विचरे रेल सहित यह अंजन है॥
कर्म, उपासन, ज्ञान टिकट घर लेता टिकट हर इक जन है।
फ़र्स्ट, सैकंड, अरु थर्ड क्लास लो जितना पास शुभ धन है॥
बैठ न पावे हरगिज वह नर जो इस धन[3] से खाली है॥ २॥ चेतो०

१ उमेद २ फांसी, फन्दी, ३ ज्ञान रूपी धन

नुक़सान करे नुक़सान मिले, एहसान करे एहसान मिले।
जो जैसा जिस के साथ करे, फिर वैसा उस को आन मिले॥
कुछ देर नहीं अंधेर० २

जो और किसी की जां बख़्शे, तो हक़[1] उस की भी जान रखे।
जो और किसी की आन[2] रखे, तो उस की भी हक़ आन रखे॥
जो यहां का रहने वाला है, यह दिल में अपने ठान रखे।
यह तुरत फुरत[3] का नक़्शा है, इस नक़्शे को पहचान रखे॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ३

जो पार उतारे औरों को, उस की भी नाव उतरनी है।
जो ग़र्क़ करे फिर उस को भी यां डुबकूं डुबकूं करनी है॥
शमशेर, तबर, बंदूक, सनां[4] और नश्तर तीर निहरनी[5] है।
यां[6] जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ४

जो और का ऊंचा बोल[7] करे, तो उस का बोल[8] भी बाला है।
और दे पटके तो उस को भी कोई और पटकने वाला है॥
बेजुर्म ख़ता[9] जिस ज़ालिम[10] ने मज़लूम[11] ज़िबह[12] कर डाला है।
उस ज़ालिम के भी लहू का फिर बहता नद्दी नाला है॥
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं० ५

---

१ ईश्वर २ इज़्ज़त, मान ३ जल्दी, फौरन अर्थात् बदले का बदला फौरन ही मिल जाता है ऐसा दुनियां का नक़्शा है ४ भाला ५ निहेरण, छीलना या छीलने का या नाख़ून काटने का औज़ार, इस पंक्ति में सब हथ्यारों के नाम हैं ६ इस जगह, इस दुनियां में ७ बड़ी इज़्ज़त से पुकारे या किसी का ज़िकर करे ८ नामवरी, इज़्ज़त ९ अपराध रहित पुरुष १० ज़ुल्म करने वाला, या नाहक़ दुःख देने वाला, ११ जिस पर ज़ुल्म किया गया हो अर्थात् दुःखी, पीड़ित १२ गला घोंट कर या छुरी से मार डाला है

जो मिसरी और के मुंह में दे, फिर वह भी शक्कर खाता है ।
जो और के तईं अब टक्कर दे, फिर वह भी टक्कर खाता है ॥
जो और को डाले चक्कर में, फिर वह भी चक्कर खाता है ।
जो और को ठोकर मार चले, फिर वह भी ठोकर खाता है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ६

जो और किसी को नाहक़ में कोइ झूठी बात लगाता है ।
और कोइ ग़रीब विचारे को नाहक़ में जो लुट जाता है ॥
वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्की खाता है ।
वह जैसा जेसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ७

है खटका उस के साथ लगा, जो और किसी को दे खटका ।
वह ग़ैब[1] से झटका खाता है, जो और किसी को दे झटका ॥
चीरे[2] के बदले चीरा है, पटके[3] के बदले है पटका ।
क्या कहिये और नज़ीर आगे, यह है तमाशा झटपट[4] का ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ८

[९८]

रागनी १

नाम राम का दिल से प्यारे, कभी भुलाना न चाहिये ।
पा कर नर का यह्न रतन को, खाक मिलाना न चाहिये ॥

---

१ अचानक, दैवयोग से अर्थात् ईश्वर से यह चोट खाता है २ एक प्रकार की सुन्दर पगड़ी का नाम है ३ पटका भी एक उत्तम पगड़ी को कहते हैं ४ उसी समय (तुरत, बदला देने वाला

रहगीरों के ललचाने को नाना रूप में सजती है ।
तीन घंटिका बाल, तरुण, और जरा¹ की इस में बजती हैं ॥
तीसरी घंटी होने पर झट जगह को अपनी तजती है ।
आते जाते सीटी देकर रोती और चिल्लाती है ॥
धर्म सनातन लाइन छोड़ के निपट² बिगड़ने वाली है ॥३॥ चेतो०
पाप पुण्य के भार का बंडल अक्सर साथ ही रखते हैं ।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं ॥
स्टेशन स्टेशन पर गमादिक रिपू³ भटकते हैं ।
पुलिसमैन सद्गुरु उपदेशक रक्षा सब की करते हैं ॥
निर्भय वह ही जाता है जो होवे पूरा ज्ञानी है ॥ ४ ॥ चेतो०

[२०]

तर्ज़ सेनी ग़ज़ल।

प्रभु प्रीतम जिस ने बिसारा । हाय जनम अमोलक बिगाड़ा ॥ टेक
धन दौलत माल ख़ज़ाना, यह तो अन्त को होवे बेगाना ।
सत्य धर्म को नाहीं विचारा, भूला फिरता है मुग्ध⁴ गंवारा ॥१॥ प्रभु
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना ।
पुत्र, पौत्र और परिवारा⁵, कोई संग न चलन हारा ॥ २ ॥
भ्रातृ भाव न प्रीति परस्पर, कपट छल है भरा मन अन्दर ।
कुछ भी किया न परउपकारा, खोटे कर्मों का लिया अजारा⁶॥३॥ प्रभु
तेरा यौवन और जवानी, ढलती जावे ज्यों बर्फ का पानी ।
मीठी नींद में पाँओं पसारा, चिड़ियां चुग गयीं खेत तुम्हारा ॥ ४ ॥ प्रभु

१ बुढ़ापा, २ बन्द ३ बदमाश, दग़ाबाज़, शत्रु ४ मूर्ख, आवारा गर्द. ५ कुटुम्ब ६ ठेका,

धोके बाज़ी के दाम फैलाये, विषय भोग के चैन उड़ाये ।
पुण्य दान से रहा नियारा, ऐसे पुरुषों को हो धिक्कारा ॥ ५ ॥ प्रभू
जो जो शास्त्र वेद बखाने[1], मूर्ख उलटा ही उन को जाने ।
समय खोया है खेल में सारा, सत्संग से किया किनारा ॥ ६ ॥ प्रभू
ऐसे जीने पै तू अभिमानी, ढोला रेत का ज्यों बीच पानी ।
क्यों न गुण अरु कर्म सुधारा, मानुष जन्म न हो बारंबारा ॥७॥ प्रभू
तेरे करम हैं नाव[2] समाना, जिस में बैठा है तू अज्ञाना ।
गैहरी नदिया है दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा ॥ ८ ॥ प्रभू
अपने दिल में तू जागरे भाई, कुछ तो कर ले नेक कमाई ।
संग जाये नहीं सुत दारा[3] सत्य धर्म ही देगा सहारा ॥ ९ ॥ प्रभू

[२१]

रागनी भिभास ताल तीन ।

तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कुछ कर उपकार । टेक
मानुष जनम अमोलक तुझ को मिले न बारंबार ॥ १ ॥ तू
सुकृत[4] अपना कर धन संचय, यह वस्तु है सार ।
देश उन्नती कर पितृ सेवा, गुणियन का सत्कार ॥ २ ॥ तू
शील, संतोष, परस्वारथ, रति[5], दया, क्षमा उर धार ।
भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, दीजै यथा अधिकार ॥ ३ ॥ तू
कठिन समय में होवेंगे साथी तेरे श्रेष्ठ आचार ।
इस लिये इन का कर तू संग्रह[6], सुख हो सर्व प्रकार ॥ ४ ॥ तू
होय अदानी कहे धन्दा गन्दा, तिस को है धिक्कार ।
है ज्ञान ही औषध सब अवगुण[7] की करते वेद पुकार ॥ ५ ॥ तू

१ उपदेश करे २ नाव, बेड़ी, किश्ती ३ स्त्री पुत्र. ४ पुण्य कर्म रूपी धन, ५ प्यार, आनन्द खुशी ६ जमा ७ कसूर, पाप, बेइलफिचस.

[८०]

[illegible]

राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज[1] है ॥ टेक
माया को संग त्याग, प्रभू जी की शरण लाग।
जगत सुख मान मिथ्या झूठो ही सब साज है ॥ १ ॥ राम
स्वप्ने जैसा धन पहिचान, काहे पर करत मान।
बालू की सी भित्त[2] जैसे, वसुधा[3] का राज है ॥ २ ॥ राम
नानक[4] जन कहत बात, विनस जाये तेरो गात[5]।
छिन छिन कर गयो काल, ऐसे जात आज है ॥ ३ ॥ राम

[८१]

राग धुन ताल तीन।

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे ॥ टेक
गर्भवास से जब तू निकला दूध स्तनों में डारा है रे।
बालकपन में पालन कीनो, माता मोह द्वारा है रे ॥ १ ॥ काहे०
अन्न रच्या मनुषों के कारण पशुओं के हित चारा है रे।
पक्षी वन में पात फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ॥ २ ॥ काहे०
जल में जलचर रहत निरन्तर, खावें मांस करारा है रे।
नाग बसें भूतल के माहिं, जीव वर्षे हजारा है रे ॥ ३ ॥ काहे०
स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहुत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानन्द फिकर सब तज के, सिमरो सर्जन हारा है रे ॥ ४ ॥ काहे०

१ फर्ज, काम २ रेत [illegible] या रेत की दीवारें ३ धन दौलत ४ कवि का [illegible] है ५ [illegible]

[७५]

राग भूपाली ताल दादरा ।

विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उस को शान्ति, क्यों न उस का मन मगन ॥

काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली ।
इन के हनन[1] के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यतन ॥१॥ विश्व०

ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू ।
पैदा न ईर्षा की आँच[2] दिल में करे कहीं जलन ॥ २ ॥ विश्व०

मित्रता सब से मन में रख, त्याग दे वैर भाव को ।
छोड़ दे टेढी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन ॥ ३ ॥ विश्व०

जिस से अधिक न है कोई, जिस ने रचा है यह जगत ।
उस का ही रख तू आशा, उस की ही तू पकड़ शरन ॥४॥ विश्व०

छोड़ के राग द्वेष को, मन में तू अपने ध्यान कर ।
तो निश्चय तुझ को होवेगा, यह सब हैं मेरे आत्मन ॥५॥ विश्व०

जैसा किसी का हो अमल[3], वैसा ही पाता है वह फल ।
दुष्टों को कष्ट मिलता है सुष्टों[4] का होता दुःख हरन ॥६॥ विश्व०

आप ही सब तु रूप हैं अपना ही कर तू आशा ।
कोई दूसरा नाहिं होगा सहाय[7], जो छेदे तेरे दुःख कठन ॥७॥ वि०

---

१ मारना, जीतना. २ आग ३ कर्म, करनी, ४ बदला ५ उत्तम पुरुष, नेक-नाम ६ दुष्ट आचरण वाला ७ मददगार, साथी

[२५]

राग धमला ।

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे ! (टेक)

झूठ न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ १ नाम
झूठे जग में दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ॥ २ नाम
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ॥ ३ नाम
जिहिं सुमिरन तें अतिसुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥ ४ नाम
खालिस इक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ॥ ५ नाम

[२६]

दादनी चोलू ताल तीन ।

नेक कमाई कर ले प्यारे ! जो तेरा परलोक सुधारे । टेक
इस दुन्या का ऐसा लेखा, जैसा रात को स्वप्ना देखा ॥ १ ॥ नेक०
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आँख खुली तो हाथ न आई ॥ २ ॥ नेक०
कुटुंब कबीला काम न आवे, साथ तेरे इक धर्म ही जावे ॥ ३ ॥ नेक०
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यहां से कूच करेगा ॥ ४ ॥ नेक०
तोशा[1] कुच्छ नहीं सफर है भारा क्योंकर होगा तेरा गुजारा ॥ ५ ॥ नेक०
अबतक गाफिल रहा तू सोया, यक अनमोल अकारथ[2] खोया ॥ ६ ॥ नेक०
टेढ़ी चाल चला तू भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ॥ ७ ॥ नेक०
खूब सोच ले अपने मन में समय गंवाया मूरख पन में ॥ ८ ॥ नेक०
यदि अब भी नहीं तू यत्न करेगा तो पछताना तुझको पड़ेगा ॥ ९ ॥ नेक०
कर सत्संग और विद्याध्ययन[3], तब पावे तू सुख और चैन ॥ १० ॥ नेक०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिस के सुमरे मुक्ति होई ॥ ११ ॥ नेक०
उसी का केवल[4] पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा ॥ १२ ॥ नेक०

शेष भजन आगामी भाग में प्रकाशित होंगे ।

१ रास्ते का भोजन २ बेफायदा ३ विद्या को पढ़ो ४ सिर्फ, कवि का नामभी है